बनारस

लेखक-बालमुकुन्द वर्म्मा ।

27-2-

बनारस

सचित्र ऐतिहासिक पुस्तक।

काशी निवासी

बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा द्वारा

लिखित



सन् १९२४] * [मूल्य १॥)

प्रकाशक—
मैनेजर 'उपन्यास तरंग'
बेनीलाल का कटरा, बनारस सिटी।



मुद्रक—मैनेजर पं० आत्माराम शर्मा
जार्ज प्रिंटिंग वर्क्स, कालभैरव,
बनारस सिटी।



श्रीयुत ______________________________

____

'बनारस' नाम का यह सुन्दर सचित्र पुस्तक आप के कर कमलों में प्रेम सहित भेंट की जाती है ।

____

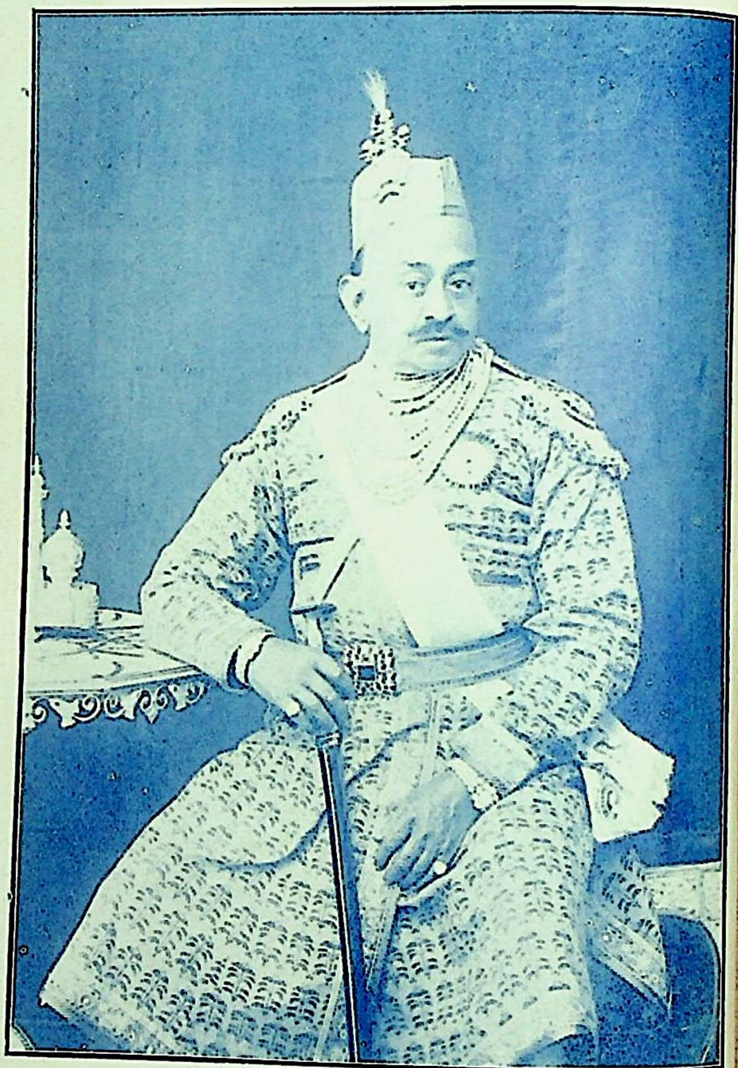


काशी ।

(लेखक—श्रीयुत किशोरी लाल गोस्वामी ।)

काशी कोटिक काल कला कुल कुण्ठित कारिनि ।
काशी कलिमल खल दल दरि दरि दुरित विदारिनि ॥
काशी बनि बपु बैद्य वासना व्याधि निवारिनि ।
काशी पवि इव पातक भूधर धूर पछारिनि ॥
काशी झटिनि त्रिताप त्रिदोष समूहन हारिनि ।
काशी त्रिगुणातीत दिव्य वपु दै दै तारिनि ॥
काशी अघ अहि हेत नकुलसी वर वपु धारिनि ।
काशी जीवन मरन जाल जँजाल कटारिनि ॥
काशी कामरु क्रोध लोभ पुनि मोह सँहारिनि ।
काशी मद मात्सर्य आदि रिपु जीवन हारिनि ॥
काशी यम अरु दूत सहित यम गेह उजारिनि ।
काशी अविकल सकल समल नरकानल जारिनि ॥
काशी चित्रगुप्त के खाते गनि गनि फारिनि ।
काशी हरिहर रूप अमित गढ़ि गढ़ि परचारिनि ॥
काशी गंग तरंग सहित अघ ओघ पखारिनि ।
काशी मुक्ति महा मंदिर को द्वार उघारिनि ॥

बनारस



महाराजा सर प्रभुनारायण सिंह वहादुर के० सी० आई० ई०,
जी० सी० एस० आई० काशी।

महाराजा सर प्रभुनारायण सिंह बहादुर के० सी० आई० ई०

[illegible]



श्रीमान् लेफ्टिनेण्ट कर्नल महाराजा सर प्रभु नारायण सिंह बहादुर जी. सी. आई. ई. काशी ।



श्रीमन्,

आप बनारस के स्वाधीन नरेश हैं और यह 'बनारस' नाम की पुस्तक भी आप के पूर्वजों के इतिहास और बनारस के वृत्तान्तों से संबद्ध है। अतएव प्रभो! आप की ही वस्तु नव रूप में आप के कर कमलों में सादर समर्पित करता हूँ।

काशी } बालमुकुन्द वर्म्मा ।

विषय सूची ।





भूमिका ।

प्रिय महाशय,

कोई भी पुस्तक लिखते समय पहिले भूमिका लिखने की एक परिपाटी सी हो गई है। अस्तु, मुझे भी उसी प्रथा का पालन करना आवश्यक जान पड़ा है। यद्यपि हिन्दी में नित्य नई पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं, भिन्न भिन्न लेखकों द्वारा साहित्य के अंग की पूर्ति हो रही है यह साहित्य के बढ़ते हुए विकाश के शुभ लक्षण हैं किन्तु उसके निर्मल आकाश में काशी के इतिहास रूपी चन्द्रमा का दर्शन नहीं के बराबर है। हिन्दी में एक भी पुस्तक ऐसी नहीं निकली जिसमें काशी का सुन्दर वर्णन हो और बाहर से आने वाले यात्रियों को भी लाभ पहुंचे।

गत वर्ष जन्माष्टमी के सुअवसर पर राय साहब गो० रामपुरी जी ने ऐसी पुस्तक लिखने को मुझ से कहा जिससे काशी के वृत्तान्तों से लोग परिचित हो जायँ, मेरी भी इच्छा ऐसी पुस्तक के प्रकाशित करने की बहुत दिनों से थी अतएव उसके साधन भी क्रम से प्राप्त होने लगे और आज वह सुअवसर आया कि यह पुस्तक लिखी जा कर आप लोगों के सन्मुख रखी जाती है। काशी का वर्णन और उसका प्राचीन इतिहास इतना विस्तृत है कि इस विषय पर बहुत बड़ी पुस्तक लिखी जा सकती है। पर यहां तो संक्षिप्त रूप में केवल दिग्दर्शन मात्र कराना था और इस ढंग से लिखना था कि यात्रियों को इसके द्वारा काशी का कुछ ज्ञान हो जाय।

मैं हिन्दी का कोई लेखक या विद्वान नहीं जो आप के सन्मुख उच्च विचार और गम्भीर भाषा तथा शब्दालंकारों से अलंकृत पुस्तक ले उपस्थित होऊँ। मैंने तो केवल पूर्व मालियों के संचित पुष्पों को चुन कर माता के मन्दिर पर चढ़ाने के लिये एक माला पिरोई है। आशा है कि मेरी इस तुच्छ भेंट को आप लोग स्वीकार करेंगे।

काशी की महिमा और उसका सुन्दर वर्णन भला मेरे द्वारा कैसे हो सकता है। जिस काशी का माहात्म्य महर्षियों तथा विद्वानों की लेखनी से निकला हो, काशी खण्ड में जिसका विस्तृत वर्णन हो कविकुल सम्राट गो० तुलसीदास जी ने रामायण किष्किन्धा काण्ड में जिसे यों लिखा है:—

मुक्ति जन्म महि जानि, ग्यानि खानि अघ हानिकर।
जहँ बश शंभु भवानि, सो काशी सेइअ कस न॥

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र जी ने 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक में उसका वर्णन किया है, काशी के 'छाया चित्र' और 'प्रेम योगिनी' में "देखी तुमरी काशी भइया देखी तुमरी काशी" का सजीव चित्र खींचा है। पं० गोपाल लाल जी ने 'रस बनारस' में "देखो बनारस में है बनारस इस रस को कोई क्या पावे" लिखा है। पं० देवी सहाय जी ने 'शैव मनोरंजनी' में यों लिखा है।

मन भावे मुझे काशी की गली।
विश्वनाथ पद पूजा भली॥
स्वांस स्वांस पर शिव दरसन।
जहां सिद्ध बिराजें थली थली॥

भैरव काल करत कोतवाली ।
पाप ताप कर डारै मली ॥
शोभा सदन मदन छवि वारो ।
जहां बसै हिमवान लली ॥
देवी सहाय धन्य आनन्द बन ।
जहँ जम की कछु नाहीं चली ॥

वास्तव में बात भी यही है कि बनारस भारतवर्ष में अपने ढंग का एक ही शहर है, इसके जैसा सुन्दर नगर गंगा के तट पर दूसरा नहीं है । मुग़ल सरायँ से आती समय पुल पर से इसका चित्ताकर्षक दृश्य देखने में आता है। वह "गिरा अनयन नयन बिनु बानी" वाली कहावत चरितार्थ करता है ।

बनारस और सारनाथ का प्राचीन इतिहास काशी राज्य का वृत्तान्त, घाटों, तीर्थ स्थानों और मन्दिरों का वर्णन, दर्शनीय स्थानों और प्रसिद्ध इमारतों का हाल तथा ज़िले और तहसीलों तथा यात्रियों के हितकर कितने ही विषयों पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही बनारस के मुख्य चीज़ों के व्यापारियों की सूची और स्थान स्थान पर चित्र देकर पुस्तक सर्वप्रिय बनाने की चेष्टा की गई है ।

श्रीमान् महाराजा सर प्रभु नारायण सिंह बहादुर जी० सी० आई० ई० का मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इस पुस्तक का समर्पण स्वीकार कर मेरे उत्साह में जीवन डाल दिया है । यदि श्रीमान् की इतनी कृपा न होती तो कभी सम्भव न था कि यह पुस्तक इतनी शीघ्र प्रकाशित हो सकती । साथ ही महाराजा

साहब बहादुर के प्रधान मंत्री श्रीयुत कर्नल बिन्देश्वरी प्रसाद सिंह सी० आई० ई० का भी मैं अत्यन्त अनुगृहीत हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय इस कार्य के लिये दिया है।

अपने इन शुभचिन्तकों के साथ मैं उन सज्जनों का भी कृतज्ञ हूँ जिनकी पुस्तकों से मुझे इस पुस्तक के लिखने में सहायता मिली है, विशेष कर पं० संकठा दत्त दूबे का।

इस "तीर्थ"-पुस्तक-माला के संरक्षक श्रीमान् राजा माधलाल सी० एस० आई०, श्रीमान् राजा मोतीचन्द सी० आई० ई०, राय बहादुर लेफ्टिनेण्ट कुंवर नन्दलाल जी, और बाबू बटुक प्रसाद खत्री ज़मींदार और बैंकर हुए हैं। आशा है कि दूसरी आवृति में हम और भी अपने कितने ही महानुभाव के नाम देंगे।

यदि इस पुस्तक द्वारा यात्रियों को कुछ भी लाभ पहुँचा और लोगों ने इस ढंग को पसन्द किया तो शीघ्र ही मैं अन्य तीर्थ स्थानों पर भी इसी ढंग की पुस्तक लिख कर आप के आगे रखूंगा।

पुस्तक इतनी शीघ्रता में छपी है कि बहुत स्थानों में अशुद्धियाँ रह गई हैं पाठकों से निवेदन है कि इसके लिये वे मुझे क्षमा करें दूसरी आवृत्ति में ये दोष पुस्तक से पृथक् कर दिये जायंगे।

भवदीय—

बालमुकुन्द वर्म्मा।



बनारस



विश्वेश्वं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥

(का. ख.)

पूर्व इतिहास ।



भारत के पुराने शहरों में से संयुक्त प्रांत में सब से प्रसिद्ध शहर बनारस गंगाजी के बाएँ किनारे पर बसा हुआ है। यह बनारस, काशी, अविमुक्त क्षेत्र, प्रकाश युक्त, रुद्र क्षेत्र, महास्मशान और आनन्दवन आदि कितने ही नामों से प्रसिद्ध है। कुछ लोगों का मत है कि 'बरुणा' * और 'असी' इन दो नदियों के बीच में होने से इसका नाम 'बाराणसी'

* बरुणा नदी प्रयाग के जिले में फूलपुर के पास के एक ताल से निकली है और जिला मिरज़ापुर से होती हुई गंगा में

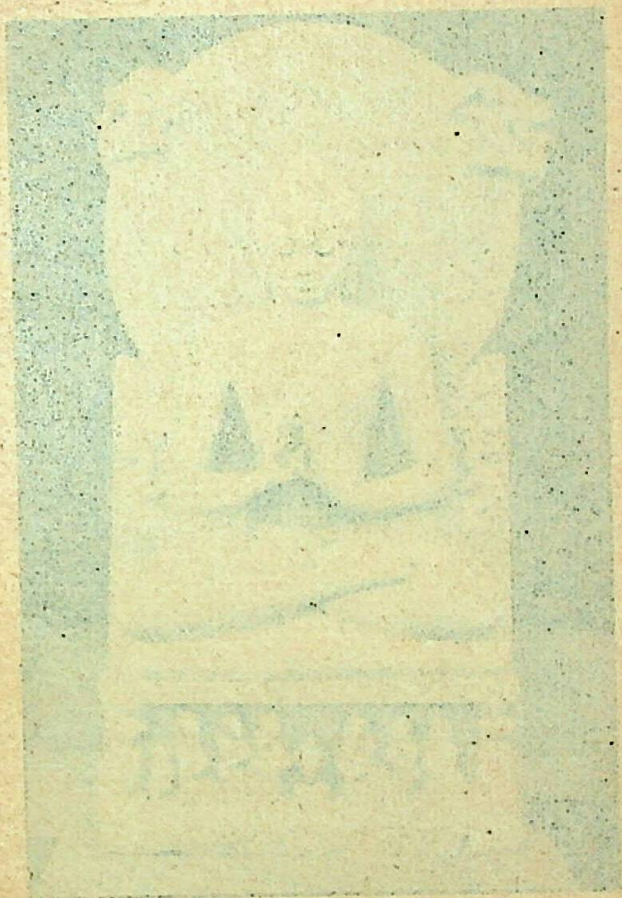


पड़ा जिसका अपभ्रंश बनारस हुआ। इसमें सन्देह नहीं कि यह नगर भारत के अन्य नगरों से बहुत ही पुराना है। इतिहास के अतिरिक्त पुराणों और स्मृतियों से भी इसकी प्राचीनता सिद्ध होती है काशी में आकर स्नान दान और शिव की पूजा, बारह सूर्य्य, छप्पन विनायक, आठ भैरव, नौ दुर्गा, ब्यालिस शिवलिंग, नौ गौरी, ग्यारह महारुद्र आदि के दर्शन अन्तर्गृही और पंचक्रोशी यात्रा करने से बड़ा फल मिलता है। इस नगर में प्राचीनता के साथ ही साथ पवित्रता और धार्मिकता भी मिली हुई है। ऐतिहासिक दृष्टि से भी यह स्थान बड़े महत्व का है।

आज से पच्चीस शताब्दी पहिले सारनाथ में महात्मा बुद्धदेव ने धर्मोपदेश देकर बौद्ध मत का प्रचार किया और कितने ही शिष्य बनाये। इसी समय जगद्गुरु शंकराचार्य भी भारत में भ्रमण करते हुए काशी में आये और भिन्न भिन्न मतवालों से शास्त्रार्थ कर उन्हें परास्त किया तथा अपने धर्मोपदेशों से लोगों को सत्पथ पर ले आये।

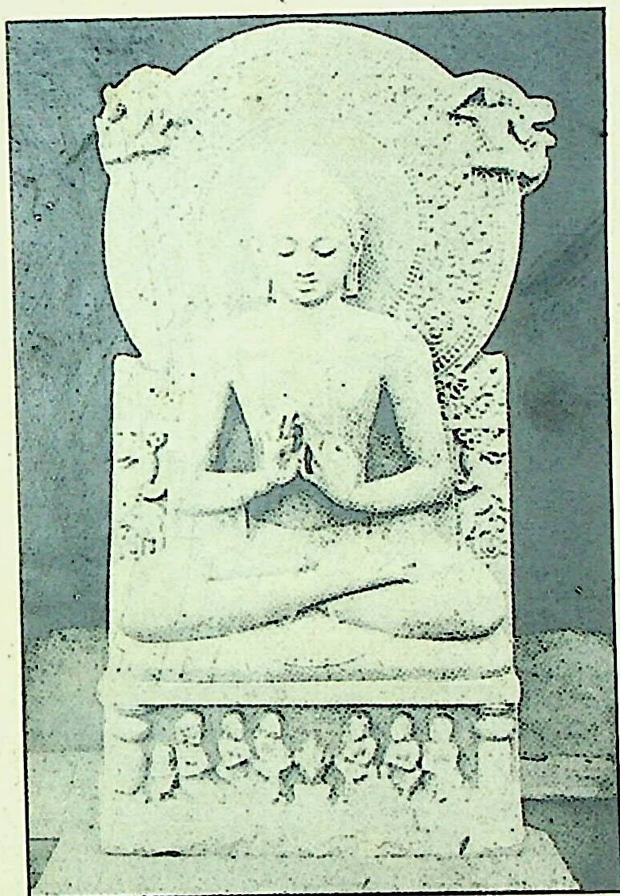
सन् १०१८ में महमूद ग़ज़नी ने काशी के राजा बनार पर चढ़ाई की। लड़ाई में वे हार गये, उनका किला तोड़ डाला

आ मिली है बनारस जिले में इस नदी पर पांच पुल बँधे हैं एक रामेश्वर में, दूसरा बनारस छावनी स्टेशन और शिवपुर के बीच में, तीसरा कचहरी के पास, चौथा चौकाघाट और पांचवां अलईपुर और सारनाथ के बीच में।





बनारस



महात्मा बुद्ध ।

ज्ञानमण्डल, काशी द्वारा प्राप्त ।

गया, बचे हुए लोग इधर उधर भाग गये। इस लड़ाई में मरे हुए मुसलमान राजघाट के पास गंज शहीद नाम की मसजिद के पास गाड़े गये और उन्हीं के स्मारक में यह मसजिद बनाई गई।

इसके उपरांत बनारस कन्नौज़ के राठौर वंशीय राजा गोविन्दचन्द, राजा विजयचन्द और राजा जयचन्द के अधिकार में रहा। * सन ११९४ में कन्नौज के राजा और कुतुबुद्दीन ऐबक में इटावे के पास घोर युद्ध हुआ। राजा के साथ ३०० हाथी सवार और फौज भी अधिक थी, किन्तु मुसलमानी फौज कौशल से लड़ रही थी, राजा की फौज के पैर उखड़ गये, ऐसे अवसर पर स्वयं राजा तलवार हाथ में ले बैरी दल पर टूट पड़े। घोर युद्ध हुआ, राजा की तलवार बिजली सी चमकती और जिधर गिरती मैदान साफ़ करती थी। दुश्मनों के छक्के छूट चले वह घबरा गये और सामने से धर्म्मयुद्ध छोड़ कर दूर से राजा के दल पर तीर चलाने लगे, दुर्भाग्यवश एक तीर

---

* कन्नौज के राजा के समय में बनारस का प्रबंध करने के लिये राजा की तरफ़ से मुसलमान अधिकारी नियत थे। उस समय दलाल खां नाम के अधिकारी ने राजा गोबिन्दचन्द के समय में गोबिन्द पुरा मुहल्ला बसाया, राजा विजयचन्द के समय में दलाल खाँ के पुत्र हुसैन खां ने अपने नाम पर हुसैन पुरा बसाया, राजा जयचन्द के समय में सैयद तालिब अली ने गढ़वासी टोला बसाया था।



आकर राजा की आँख पर लगा, राजा उसी क्षण वीर गति को प्राप्त हुए। बनारस उनके हाथ से निकल गया और बाद में गहरवार जाति के लोग इसके शासक हुए। कुतुबुद्दीन मुहम्मद गोरी का सेनापति था, मुहम्मद गोरी बनारस की विजय सुन कर स्वयं आया और हजारों हिन्दू मन्दिर तथा शहर के अच्छे भागों को तोड़ ताड़ कर उजाड़ कर डाला और अपनी तरफ से एक अधिकारी को यहां रख सैकड़ों ऊँटों पर धन आदि लदवा कर वह अपने देश ग़ज़नी को चला गया। सन् १३६४ में सिकन्दर लोदी भी चुनार से यहां आया, वह भी बचा खुचा धन ले चलता हुआ। इस प्रकार सोलहवीं शताब्दी तक काशी में खूब उलट फेर रहा। अयोध्या से देवकुमार नाम का एक राजा बनार का रिश्तेदार आया, बाद में डोमनदेव यहाँ का राजा हुआ। जिसने चन्द्रावती में किला बनवाया, लोगों का कहना है कि चन्द्रावती उसकी स्त्री का नाम था। मगर इस बीच में कोई ऐसी घटना नहीं हुई कि जिसका यहां उल्लेख किया जाय। परन्तु आइने अकबरी से मालूम होता है कि मुहम्मद गोरी ग़ज़नी से दूसरी बार भी यहां आया था।

मुग़ल सम्राट अकबर सन् १५६५ ई० में यहां आये। आप के समय इस नगर में बहुत कुछ धार्मिक उन्नति हुई और कितने ही नए मन्दिर और घाट बने। इसके उपरान्त शाहजहां का पुत्र दाराशिकोह बनारस का सूबेदार हुआ। बनारस के जिस स्थान पर दारा रहता था, उसे उसने अपने नाम पर बसाया

और उसका नाम दारानगर रखा, यद्यपि दारानगर नाम का एक महल्ला यहां अब तक इसी नाम से पुकारा जाता है मगर बाबू औसान सिंह के स्टेट के अतिरिक्त वहां शाही इमारत के कोई चिन्ह देखने में नहीं आते। समय ने फिर पलटा खाया। सन् १६६९ ई० में औरंगज़ेब काशी में आया और निज स्वभाव के अनुसार उसने कितने ही मन्दिरों को तुड़वा दिया और उसके सामान से उसने मसजिदें बनवाईं। इसका उदाहरण चौखम्भा मसजिद, बकरिया कुण्ड की मसजिद, लाट भैरव की मसजिद, ढाई कँगूरा मसजिद, आलमगीरी मसजिद आदि कितनी ही हैं, जिनमें मन्दिरों के खम्भे, गुम्मज़ और पत्थर लगे हुए हैं। ढाई कँगूरे वाली मसजिद की छत में एक पत्थर के टुकड़े पर संस्कृत भाषा में एक लिपि खुदी हुई है जिसमें सम्वत् १२४८ में वाराणसी नगरी तथा इसके चारों ओर मन्दिर पुष्करिणी मठ आदि के बनाने का उल्लेख है * इसी प्रकार ज्ञानवापी के पास विश्वनाथ जी का प्रसिद्ध मन्दिर तोड़ कर उसी स्थान पर मसजिद बनाई है और सदा के लिये हिन्दुओं का चित्त दुखाने के लिये मन्दिर का एक भाग मसजिद के पिछले हिस्से में ज्यों का त्यों रहने दिया है। यहीं तक नहीं पंचगंगा घाट पर वेनीमाधव का मन्दिर तोड़ कर उसके सामान से मसजिद तैयार हुई है जिसमें दो ऊंची मीनारें हैं और वह माधवराव के धराहरा के नाम से

* Fuleres momental Antiquitice P. 207

प्रसिद्ध है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मुसलमानी राजत्व काल में सब से अधिक औरंगज़ेब के जमाने में काशी के धार्मिक जीवन को धक्का पहुंचा। बाद में यह सूबा नवाब अवध के आधीन में आया।

सन् १७३० ई० में सआदत खां अवध के नवाब हुए उन्होंने मुरतजा खां नाम के एक उमराव से सात लाख सालाना मालगुज़ारी पर बनारस, ग़ाज़ीपुर, जौनपुर और चुनार के चारों परगने लेकर अपनी तरफ से आठ लाख रुपया मालगुज़ारी पर अपने मित्र मीर रुस्तम अली को देकर उन्हें फौज़दार बनाया, तब से रुस्तम अली सब प्रबंध करने लगे, माल, दीवानी और फौज़दारी सभी इनके अधिकार में थी।

सन् १७५१ ई० के लगभग राजघाट के पास आपस में एक दूसरे से टकरा कर नाव पर लदा बारुद का पीपा फट गया जिसकी बड़ी कड़ी आवाज हुई, शहर में लोग घबरा गये मगर कुशल इतनी ही हुई कि पीपे गंगा जी में जा रहे फिर भी राजघाट के कितने ही मकानों की दीवारें फट गईं और कुछ मकान भी गिर पड़े जिससे उस ओर के लोगों की अधिक हानि हुई।

सन् १८०६ में और इसके बाद १८५२ में भी यहां आपस में हिन्दू मुसलमानों में लड़ाई झगड़े हुए।

सन् १८९१ ई० के आरम्भ में भदैनी महल्ले में जलकल बैठाने के लिये ज़मीन नापी गई, उसी नाप में वहां का 'राम-



मन्दिर' भी आ गया हिन्दुओं की तरफ से मन्दिर बचाने के लिये बोर्ड में दरख़्वास्त दी गई। बोर्ड ने निश्चय किया कि मन्दिर छोड़ कर आस पास की ज़मीन ठीक की जाय। कुछ दिन बाद मन्दिर से लगी हुई नींव खोदी गई जिससे मन्दिर के गिरने का भय हुआ, इस समय फिर एक दरख़्वास्त बोर्ड के सामने आई जिसमें लिखा था कि तीन तीन फुट ज़मीन मन्दिर के तीनों तरफ दीवाल उठाने के लिये और चार फुट रास्ते के लिये छोड़ दी जाय और इसका उचित मूल्य हम लोगों से ले लिया जाय, कुछ दिन बाद मन्दिर में जाने का रास्ता भी खुद गया जिससे लोग बड़े दुःखी हुए। १५ अप्रैल को दिन के ११ बजे शहर में यह अफ़वाह फैली कि राम जी का मन्दिर खोदा जा रहा है। बात की बात में शहर भर में हर-ताल हो गई, रोजगार हाल बन्द हो गये, हजारों आदमी मन्दिर की तरफ़ जाने लगे, मैदान में खूब भीड़ इकट्ठी हुई। लोग जोश में भरे थे। इंजिन. पीपे. नल वग़ैरह तोड़ डाले गये, कितने गंगा जी में फेंक दिये गये, बदमाशों की बन आई, पास के एक रईस की चीज़ें तोड़ दी गईं और कुछ लोग उठा भी ले गये, सड़क और गलियों की लालटेनें तोड़ दी गईं। हुल्लड़ बराबर बढ़ता गया, तार घर लूटा गया, टेलीफोन के तार तोड़े गये, काशी स्टेशन के पारसल और मालगोदाम पर भी चढ़ाई हुई. कई घण्टे तक खूब मनमानी हुई। रईसों और भलेमानुसों का नुक़सान हुआ। कलेक्टर, पुलीस सुपरिंटेंडेण्ट



और फ़ौजी लोग शहर में आये और ख़ास ख़ास जगहों में तैनात किये गये। बारहवीं बंगाल की पैदल और दो कम्पनी गोरों की भी आ गई, डफरिन बृज की रक्षा के लिये गोरी पल्टन खड़ी कर दी गई। शहर में शान्ति हुई, कुछ दूकानें दूसरे दिन खुलीं, बाकी तीन दिन के बाद खुलीं, लगभग १००० आदमी पकड़े गये; किन्तु १८ तारीख़ को बहुत से लोग सबूत न मिलने से छोड़ दिये गये। बाकी लोगों को लम्बी सजाएं हुईं।

इस के बाद कभी हिन्दू मुसलमानों के झगड़े मन्दिरों के कारण, कभी लाट भैरव तथा पिशाच मोचन के करके हुए। एक बार नगर में कुछ पल्टन के देशी सिपाहियों के भी झगड़े हुये थे। रास्ते में आती समय दाल की मण्डी की कई दूकानें तोड़ी फोड़ी गईं मगर चौक तक आकर यह हुल्लड़बाज़ लौट गये।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि बनारस किसी ख़ास चीज़ की व्यापारिक मण्डी न होने पर भी देशी दस्तकारी, जरदोज़ी का सुन्दर काम, बनारसी माल और किमख़ाब के थान तथा चांदी के हौदे, कुर्सी के लिये प्रसिद्ध है। यहां से यह चीज़ें तैयार हो कर देशी रजवाड़ों में जाती हैं, वास्तव में इन चीज़ों के बनाने में कारीगर कमाल करते हैं। काठ के सुन्दर खिलौने, पीतल की एक से एक चढ़ बढ़ कर नक़ासीदार चीज़ें और सादे बर्तन, सुरती की गोली, आदि यहां अच्छी तैयार होती हैं।

काशी तीर्थ स्थान है। यहां केवल तीर्थ यात्रा और मुक्ति के लिये अधिकतर लोग आया करते हैं। किन्तु फिर भी बनारस बनारस है। इसके जैसा सुन्दर नगर गंगा के किनारे और नहीं है, प्रातःकाल घाट पर स्नान और सन्ध्या समय विश्वेश्वर के मन्दिर की आरती अपूर्व होती है। राजघाट से अर्द्धचन्द्राकार काशी के घाटों का दृश्य देखने योग्य है, जो अस्सी तक तीन मील है। बनारस को देखने के लिये दूर दूर से लोग आते हैं विदेशी यात्री किश्ती पर से घाटों को देखते और उसकी फोटो लेते हैं।

वर्तमान बनारस में तीन रेलवे स्टेशन हैं। पहिला राजघाट पर "काशी स्टेशन" जो मुग़ल सराय जंक्शन से ७ मील पड़ता है। और कलकत्ते से ४२६ मील, बम्बई से इलाहाबाद के रास्ते ६३८ मील, मद्रास से १५५० मील है। दूसरा अवध रुहेलखण्ड का "बनारस कैण्ट" स्टेशन है जहां से दो लाइनें गई हैं एक जौनपुर होती हुई दूसरी अयोध्या फैजाबाद देती हुई लखनऊ चली गई है, तीसरा बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे का "बनारस सिटी" स्टेशन है, यह छोटी लाइन सारनाथ, रजवाड़ी होती हुई ग़ाज़ीपुर चली गई है। रेल से उतरने पर स्टेशन पर इक्के, गाड़ी और टाँगे मिलते हैं, प्रबन्ध करने से मोटर और लारियां भी मिलती हैं। चौक के पास मुं० बेनीलाल के कटरे में अवध रुहेलखण्ड का बुकिंग आफिस है, यहां से हर जगह के बड़ी लाइन के टिकट मिलते और पार-

सल लगते हैं। पर्व आदि के समय यहां बड़ी भीड़ होती है।

ग्रैंडट्रङ्क रोड—यह सड़क शेरशाह की बनवाई हुई है। दिल्ली और प्रयाग होती हुई इस ज़िले में मिरजामुराद, राजा तालाब, रोहनिया, बनारस छावनी, स्टेशन राजघाट, पुल पार करने पर दुलहीपुर मुग़लसराय, अलीनगर, चंदौली सय्यद राजा होती हुई कलकत्ते को चली गई है।

बनारस ग़ाज़ीपुर रोड—चौबेपुर और कैथी होती हुई यह ग़ाज़ीपुर को चली गई है।

बनारस आजमगढ़ रोड—बराबर चोलापुर के किनारे से चली गई है।

बनारस जौनपुर रोड—शिवपुर, हरहुआ, बाबतपुर, पिंडरा और फूलपुर बाजार होती हुई जौनपुर चली गई है।

सन् १८०० ई० में बनारस से मिरजापुर, जौनपुर, ग़ाज़ीपुर, रामनगर से चुनार की सड़क तैयार हुई। सन् १८०५ ई० में सकलडीहा और बक्सर तक की सड़क बनी। सन् १८२२ ई० में ग़ाज़ीपुर की सड़क फिर से ठीक की गई। सन् १८४४ ई० में आजमगढ़ रोड की सड़क बनाई गई। सन् १८४८ में बाबतपुर से बड़ेगांव की सड़क बनी और सन् १८६१ ई० में बबुरी से अलीनगर तथा चन्दौली की सड़क बनाई गई।

बनारस जिले में नौबतपुर, चन्दौली, अलीनगर, राजा तालाब, मिरजामुराद, कैथी, फूलपुर, दानगंज और बनारस छावनी में डांक बंगले हैं।



बनारस की सीमा इस प्रकार है। उत्तर और पश्चिम जौनपुर, उत्तर पूरब ग़ाज़ीपुर, दक्षिण मिरज़ापुर और दक्षिण पूरब में बिहार का शाहाबाद है। बनारस समुद्र से २५२ फुट की ऊँचाई पर बसा है।

काशी सदा से संस्कृत विद्या की पीठ रही है। दूर दूर से विद्या लाभ करने के लिये विद्यार्थी यहां आया करते हैं। प्राचीन समय में लोग विद्यादान बड़े उत्साह और प्रेम से करते थे, आज से १०७ वर्ष पूर्व सन् १८१७ ई० में एक अंग्रेज यात्री यहां आया था, उसने उस समय के शिक्षा का वर्णन बहुत अच्छे ढंग से किया है और जिन मुहल्ले में विद्यार्थी वेद पुराण, शास्त्र, व्याकरण, वेदान्त, मीमांसा, न्याय और ज्योतिष आदि का अध्ययन जिस शिक्षक से करते थे उनका पूरा वृत्तान्त लिखा है। तब और अब में बड़ा अन्तर है वह उत्साह, वह प्रेम, वह जातीय जीवन तो अब है नहीं, फिर भी जो कुछ है वह अन्य नगरों से बहुत अधिक है, अब भी काशी में कितने ही स्थानों में विद्यार्थियों को विद्यादान दिया जाता है। उदार सज्जनों और लक्ष्मी के लालों ने कितनी ही पाठशालाएँ और अन्नक्षेत्र खोल रखे हैं जिनमें सहस्रों विद्यार्थी नित्य भोजन करते हैं।

वेद के शिक्षक—	महल्ला	शिष्य
पं० विश्वनाथ भट्ट गुरु जी	दुर्गा घाट	२५
पं० बालू दीक्षित	"	२०
पं० नारायण दीक्षित	"	२५



पं० बापू भट्ट पुराणिक	दुर्गाघाट	१०
पं० बालं भट्ट	"	१०
पं० रंग भट्ट अम्बेकर	"	१५
पं० केशव भट्ट गोखले	"	१२
पं० बालकृष्ण भट्ट जोशी	"	३०
पं० वल्लभ भट्ट मौनी	"	२५
पं० गणेश भट्ट	"	२०
पं० नारायण देव	"	२५
पं० भैरव भट्ट तैलंगी	"	१
पं० जिवराम भट्ट गोखले	"	१५
पं० बाल दीक्षित गौड़बोले	"	२०
पं० चिन्तामणि दीक्षित	"	२५
पं० राम दीक्षित फाठक	"	१२
पं० बालं भट्ट वझे	"	२५
पं० शिवलिंग	"	१७
पं० भैया दीक्षित	"	१०
पं० नरसिंह दीक्षित	नारद घाट	२०
पं० विश्वनाथ भट्ट जोशी	"	२२
पं० जगन्नाथ अवधानी	"	१२
पं० भिकं भट्ट	"	१२
पं० अनन्त अवधानी	हनुमान घाट	२५
पं० नरसिंह अवधानी	"	२०



पं० विनायक भट्ट डुएटे	हनुमान घाट	१०
पं० छिपलेकर	,,	१०
पं० श्रीधर भट्ट धुपकर	,,	२०
पं० प्राणनाथ भट्ट सेवरे	,,	१५
पं० शिवराम भट्ट कान्त्रे	,,	१५
पं० दामोदर भट्ट सप्रे	,,	२०
पं० काशी नाथ भट्ट गुलवेकर	,,	१०
पं० शिवराम दीक्षित	दशाश्वमेध घाट	१२
पं० गोविन्द भट्ट केशवर	,,	१२
पं० नारायण दीक्षित भडकमकर	,,	१५
पं० गणेशभट्ट गवे	,,	३०
पं० बाबू भट्ट निर्मले	,,	३०
पं० हरदेव	,,	१५
पं० रामचन्द्र देव	,,	२०
पं० नाना भाष्कर	,,	५०
पं० बल्लभ भट्ट	,,	२५
पं० त्रिमल भट्ट	,,	१५
पं० हरिदेव भट्ट	,,	१५
पं० कृष्ण भट्ट देव	,,	१५
पं० जगन्नाथ दीक्षित	,,	२५
पं० सुखराम भट्ट कर्वे	,,	१५
पं० भिकं भट्ट विश्वरूप	,,	२०



पं० विश्वनाथ भट्ट विश्वरूप	दशाश्वमेध घाट	११

शास्त्र के शिक्षक—

पं० अहवल शास्त्री	दशाश्वमेध	११
पं० नीलकंठ शास्त्री	मंगला गौरी	२१
पं० सोभा शास्त्री	दुर्गा घाट	११

पाणिनीय व्याकरण के शित्तक—

पं० कृष्ण पंत शेष	सूत टोला	१५
पं० कृष्ण राम पंत	चौखम्भा	११
पं० शिवराम पंत	घासी टोला	१०
पं० मेघनाथ देव	ढुंढी विनायक	१०
पं० जनार्दन शास्त्री गर्ग	गोविन्द जी नायक	१५
पं० भट्ट शास्त्री	अग्नेश्वर घाट	१०
पं० छोटू भट्ट विश्वरूप	दशाश्वमेध घाट	११
पं० हरिशंकर शास्त्री	बंगाली टोला	१०
पं० सीताराम भट्ट तेक्से	दुर्गा घाट	१०
पं० नाना पाठक	मणिकर्णिका	१०
पं० काशी नाथ शास्त्री	दुर्गा घाट	१०
पं० शिशु शास्त्री	वेणीमाधव	१७
पं० गंगाराम शास्त्री	रामघाट	२०
पं० भीष्म पति	सूत टोला	१०
पं० गोपी नाथ पंत टोपले	नाथू साह	१०
पं० विष्णु शास्त्री	अतनबड़	१५

काव्य के शिक्षक—

पं० हरीराम तोरो	ब्रह्मा घाट	१०

वेदान्त और मीमांसा के शिक्षक—

पं० वज्रटंक शोभा शास्त्री	दशाश्वमेध	१२
पं० मिनाक्षी शास्त्री	हनुमान घाट	१२

न्याय और कानून के शिक्षक—

पं० सदाशिव भट्ट गवे	दशाश्वमेध	१०

व्याकरण और कानून के शिक्षक—

पं० तत्त्व जोशी	नायक महल्ला	१५

व्याकरण और ज्योतिष के शिक्षक—

पं० बालकृष्ण जोशी	ब्रह्माघाट	१५

न्याय के शिक्षक—

पं० लक्ष्मी शास्त्री बरडे	अग्नेश्वर घाट	१०
पं० प्राणनाथ पंत टोपले	नाथू साव की ब्रह्मपुरी	१०
पं० गोविन्द नारायण भट्टाचार्य	बंगाली टोला	१५
पं० मेघनाथ देव	ढुण्ढी विनायक	१०

व्याकरण और न्याय के शिक्षक—

पं० भैरव मिश्र	सिद्धेश्वरी	२०
पं० मनसाराम पाठक	दशाश्वमेध	१५
पं० राजाराम	मणिकर्णिका	१५

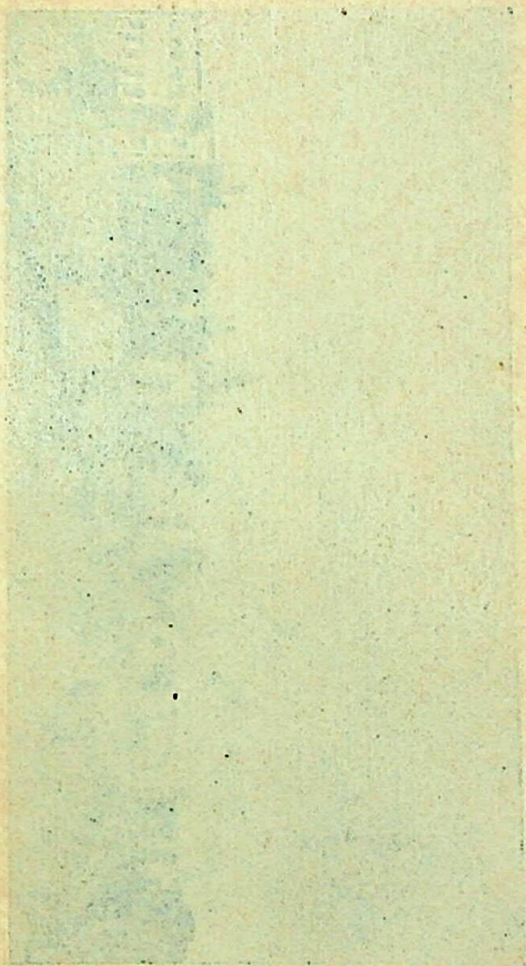
ज्योतिष के शिक्षक—

पं० परम सुख जोशी	दारानगर	२०
पं० वासुदेव जोशी	रामघाट	१५

कालेज और स्कूल।

इस समय में भी काशी के कितने ही स्थानों में संस्कृत पाठशालाएँ हैं जहां कि विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाती है। इनके अतिरिक्त प्रसिद्ध कालेज और स्कूलों के नाम नीचे दिये जाते हैं।

१ हिन्दू विश्व विद्यालय।	नगवा
२ क्वीन्स कालेज (संस्कृत कालेज)।	जगतगंज
३ उदय प्रताप कालेज।	भोजूवीर
४ ठीकमणि संस्कृत कालेज।	सक्करकंद की गली
५ सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल।	कमच्छा
६ जयनारायण हाई स्कूल।	रेवड़ी तालाब
७ लंडन मिशन हाई स्कूल।	कैराट
८ बंगालीटोला हाई स्कूल।	पांड़े हौली
९ हरिश्चन्द्र हाई स्कूल।	मैदागिन
१० दयानन्द हाई स्कूल।	औसान गंज
११ सनातन धर्म्म स्कूल।	ध्रुवेश्वर
१२ सारस्वत खत्री विद्यालय।	नीचीबाग
१३ विद्यापीठ।	सिगरा
१४ एंग्लो बंगाली स्कूल।	पाँड़े हौली
१५ थियोसफिकल नेशनल स्कूल।	लक्सा

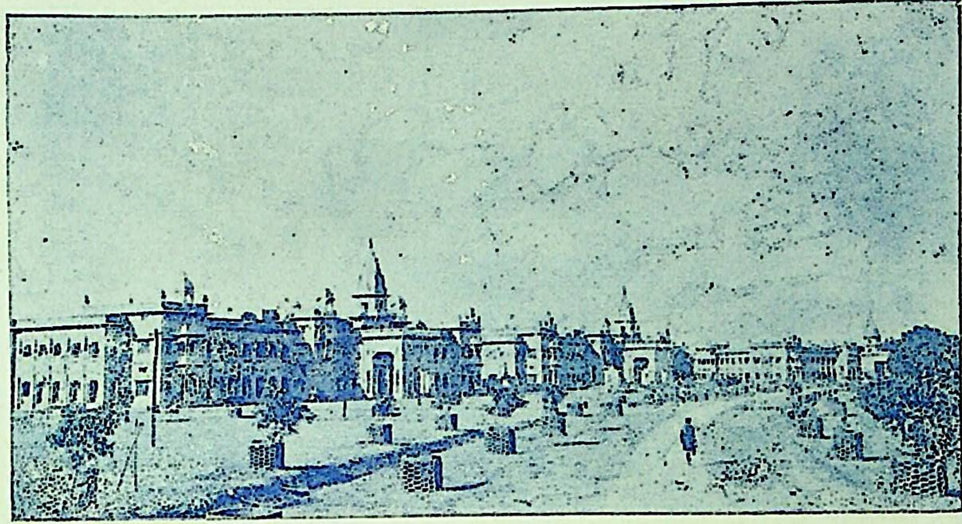


कालेज और स्कूल।

इस शहर में भी [illegible] हैं जितने ही [illegible] में [illegible] पाठशालाएँ हैं [illegible] कि विद्यार्थियों को शिक्षा भी [illegible] इनके अतिरिक्त [illegible] कालेज और स्कूलों के नाम नीचे [illegible] जाते हैं।

१ हिन्दू विश्व विद्यालय।	लंका
२ क्वीन्स कालेज (संस्कृत कालेज)।	[illegible]
३ उदय प्रताप कालेज।	भोजूबीर
४ [illegible] संस्कृत कालेज।	[illegible] की गली
५ सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल।	कमच्छा
६ [illegible] हाई स्कूल।	रेवड़ी तालाब
७ [illegible] मिशन हाई स्कूल।	[illegible]
८ [illegible] हाई स्कूल।	पांडे हौली
९ हरिश्चन्द्र हाई स्कूल।	मैदागिन
१० [illegible] हाई स्कूल।	[illegible] गंज
११ [illegible] स्कूल।	[illegible]
१२ [illegible] विद्यालय।	नीचीबाग
१३ [illegible]।	[illegible]
१४ [illegible] स्कूल।	पांडे हौली
१५ [illegible] स्कूल।	[illegible]

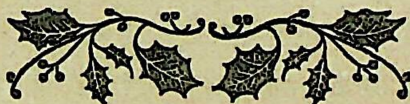
बनारस



विश्वविद्यालय, आर्ट्स कालेज।

१६ सेन्ट्रल वीविंग इन्स्टीट्यूट	चौकाघाट
१७ नाथ क्षत्रिय आश्रम	सारन
१८ थियोसफिकल नेशनल गर्ल्स स्कूल	लक्सा
१६ सेन्ट्रल काशी इन्स्टीट्यूशन	गुदौलिया
२० अग्रवाल समाज पाठशाला	सातो चौक
२१ गुर्जर पाठशाला	
२२ रणवीर संस्कृत पाठशाला	दशाश्वमेध
२३ संन्यासी संस्कृत पाठशाला	गली अपारनाथ
२४ सांगवेद विद्यालय	नगवा
२५ संस्कृत पाठशाला	नगवा

इनके अतिरिक्त म्युनिस्पल बोर्ड के स्कूल शहर के कई एक मुहल्लों में हैं। राजा दरवाजा, गढ़वासी टोला, लाहौरी टोला, सुड़िया और गायघाट पर कन्या पाठशालाएँ हैं। लांगलेश्वर और सिगरा पर मिशन गर्ल्स स्कूल है। ज़िले में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के ४०० से अधिक स्कूल हैं।



सारनाथ



बनारस शहर से छः मील की दूरी पर एक लम्बे चौड़े मैदान के छोटे टीले पर सारनाथ शिव का छोटा मन्दिर है। सामने कच्चा तालाब है, यहां श्रावण मास के प्रत्येक सोमवार को मेला लगता है। बी० एन० डब्लू० से लोग सारनाथ स्टेशन पर उतर कर यहां आते हैं। गाड़ी, इक्के, मोटर, और लारियों से भी लोग आते जाते हैं। काशी में सारनाथ ऐतिहासिक दृष्टि से बड़े महत्व का स्थान है। पुरातत्व वेत्ताओं के अनुसंधान की जगह है, जहां प्राचीन काल के शिल्पियों की संगतरासी देखने योग्य है। सारनाथ को 'सारंगनाथ', 'मृगयावन' और पालीभाषा में 'इसीपतन मिगदाय' कहते हैं। जो हो बाहर से आने वाले यात्रियों को इस स्थान को अवश्य देखना चाहिये।

प्राचीन समय में शहर के उत्तर सारनाथ नाम की एक सुन्दर बस्ती थी, वहां पर कितने ही मकान मन्दिर और मठ थे जिनमें अधिकतर बौद्ध मतावलम्बी लोग या भिक्षु रहते थे। वहीं पर बौद्धमत के प्रवर्त्तक महात्मा बुद्धदेव गया से चल कर आये थे। यहीं पर उन्होंने पवित्र और श्रेष्ठ धर्म्म का प्रचार कार्य आरम्भ किया और लोगों को उपदेश देने लगे। इस स्थान का प्राचीन हाल हमें दो चीनी यात्री के लिखे भ्रमण वृत्तान्त से

मालूम होता है। पहिले यात्री का नाम फ़ाहियान और दूसरे का ह्यानसांग है। फ़ाहियान ने भी सारनाथ को मृगया भूमि लिखा है और बुद्धदेव की तपस्या का वर्णन किया है, किन्तु ह्यानसांग काशी का वर्णन करता हुआ लिखता है कि यह नगर तीन मील तक फैला हुआ है, यहां की बस्ती बहुत ही घनी है। नगर निवासी बहुत ही सभ्य हैं, अतिथि सेवा करना अच्छी तरह जानते हैं स्वभाव के सरल और उदारचित्त हैं। छात्रों और विद्वानों का विशेष आदर सत्कार करते हैं। टोपी मुकुट और आभूषण पहनते हैं, रेशमी कपड़ा अधिक पसन्द करते हैं। इनमें आपस में धार्मिक विषयों पर तर्क वितर्क भी होते रहते हैं। वह यह भी लिखता है कि सारनाथ पर १५०० धर्मात्मा लोग रहते हैं और तीस बौद्ध विहार हैं, साथ ही देखने योग्य तीन स्तूप बतलाता है। पहिला वहां पर है जहां भगवान् बुद्धदेव के श्रीमुख से धर्मचक्र प्रवर्त्तन सूत्र का कथन हुआ, यहीं पर उन्होंने यश नाम के साहूकार और उसके पिता आदि को भी धर्मोपदेश देकर बौद्ध बनाया। दूसरा वहां जहां बुद्धदेव के शिष्यों ने उनसे धर्म की दीक्षा ली थी, तीसरा वहां पर है जहां बुद्धदेव ने अपने दांत एक व्याध को दिये थे।

ह्यानसांग एक प्रधानमठ का वर्णन करता हुआ लिखता है कि इसमें १५०० बौद्ध भिक्षु रहते हैं। मठ के चारो ओर पक्की दीवार है, बीच में आठ कोठरियां और दीवार में कितने

ही आले बने हैं जिनमें स्वर्णमयी बुद्धदेव की मूर्तियां रखी हुई हैं। मठ की ऊँचाई २०० फुट है। ऊपर जाने के लिये पत्थर की सीढ़ियां बनी हुई हैं। अन्तिम खुदाई के समय यह मठ टूटी फूटी अवस्था में निकला है। पुरातत्व वेत्ताओं को मठ में एक पत्थर मिला है जिसकी लिपि से जाना जाता है कि यह भवन ईसा के समय से २०० वर्ष पहिले का बना है। एक बात यह भी हो सकती है कि यह पत्थर किसी अन्य स्थान से लाकर यहां लगा दिया गया हो।

सन् १८१५ ई० में कर्नेल मेकंजी ने सबसे पहिले सारनाथ की ज़मीन को खुदवाया था, बाद में सन् १८३५ ई० में सरकारी पुरातत्व विभाग के डायरेक्टर जनरल सर अलकजेण्डर कनिंगहम साहब ने बड़े उत्साह से इस स्थान को खुदवाना आरम्भ किया और कई मूर्तियां निकालीं जो कि बंगीय एशियाटिक सोसाइटी में रखी गईं. बाद में कलकत्ते के म्यूज़ियम में भेज दी गईं। आप यह भी लिखते हैं कि मेरे इस काम के पहिले कुछ मूर्तियां बरना नदी के पुल में खम्भों के आस पास उनकी मज़बूती के लिये रख दी गईं। मि० शेरिंग लिखते हैं कि सन् १७९४ ई० में राजा चेतसिंह के दीवान बाबू जगतसिंह एक स्तूप को तुड़वा कर उसका सामान जगतगंज बनवाने के लिये उठवा लाये, बाद में इसी स्तूप के नीचे का टीला भ्रम से जगतसिंह का स्तूप कहलाया। सन् १८५१ में मेजर किट्टो और मि० टामस

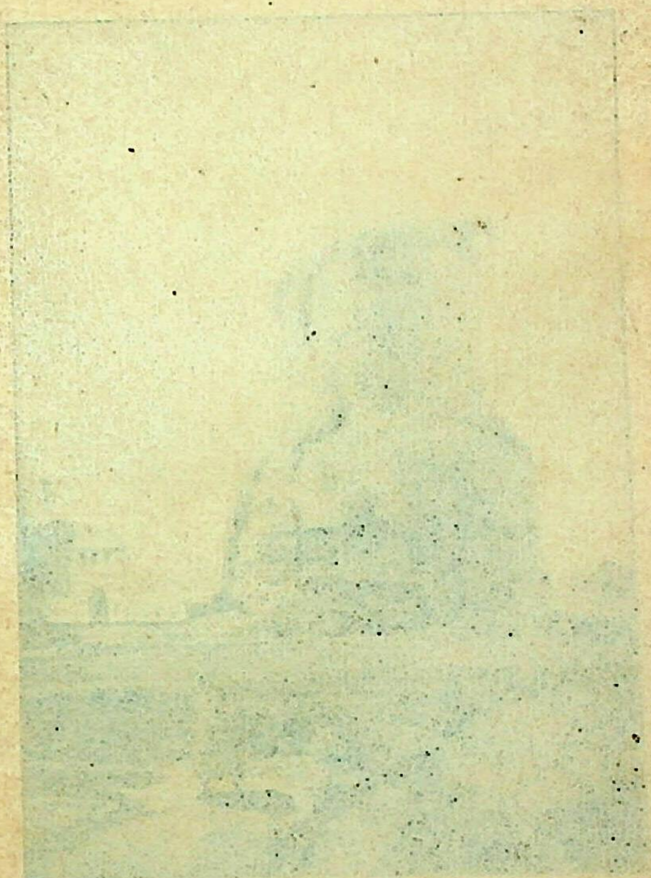
ने इस स्तूप का आविष्कार किया, स्तूप के भीतर पत्थर के एक सन्दूक में संगमरमर के पात्र में बहुत सी ऐतिहासिक चीजें मिलीं जो कि कलकत्ते के म्यूज़ियम में भेज दी गईं।

बाद में मेजर किटो ने पुनः सारनाथ की ज़मीन खुदवाई तथा वहां से बहुतेरे पत्थर क्वीन्स कालेज के लिये उठवा लाये। मेजर किटो में एक गुण यह था कि वहां से पत्थर उठवाते समय वह उसका अनुसंधान अवश्य कर लेते थे। सारनाथ के कुछ पत्थर और मूर्तियां लखनऊ म्यूज़ियम में भी भेजी गई थीं।

धमेक स्तूप-जनरल कनिंगहम साहब ने इस स्तूप की देख भाल में अधिक समय लगाया है इनकी रिपोर्ट का संक्षिप्त मि० शेरिंग के बनारस नामक पुस्तक में दिया है। इस स्तूप के बीच का स्तूपदण्ड भीतर को धंस गया था। उसके बीच का हाल जानने के लिये भीतर आने जाने को कई मार्ग खोदे गये। यह स्तूप ११० फुट ऊँचा है चारो ओर से दृढ़ता के साथ घेरा बंधा है। आस पास की ज़मीन से १८ फुट की ऊंचाई पर यह स्तूप है इस प्रकार कुल मिलाकर स्तूप की ऊँचाई १२८ फुट होती है। इसका नीचे का घेरा १९३ फुट है और फिर ऊपर क्रमशः छोटा होता चला गया है। ज़मीन से ४३ फुट ऊपर तक यह पत्थर का बना है, बाद में पत्थर, ईंट और चूने की जुड़ाई है। इस स्तूप के पत्थरों में एक शिला भी मिली थी। उसमें बौद्ध धर्म का प्रतिज्ञा-वाक्य खुदा था।

स्तूप का जितना अंश पत्थर का है उस पर सुन्दर खुदाई की गई है। कनिंगहम साहब लिखते हैं कि इस स्तूप के नीचे आठ चौपहल विभाग हैं। प्रत्येक विभाग की चौड़ाई २१ फुट है। हर एक विभाग में अर्ध गोलाकार आला है। प्रत्येक आले में मूर्तियों के बैठाने के लिये कुछ छिद्र बने हुए हैं किन्तु मूर्तियां नहीं हैं। अनुमान किया जाता है कि प्रत्येक आले में बुद्धदेव की मूर्तियां स्थापित थीं। आलों का आकार देखने से मूर्तियां मनुष्य के बराबर ऊँची होनी जानी जाती हैं। आलों के घेरे के नीचे ६ फुट चौड़ा स्तम्भ का घेरा है और उसमें सुन्दर काम किया हुआ है। घेरे में तीन तीन फुट की चौड़ी पट्टियां लगी हैं एक मैज्यमिति का नक्शा और सब से नीचे की पट्टी में फूलों की लता आदि बने हैं. एक स्थान पर कुछ जीव, जन्तुओं के चित्र खुदे हैं। छोटे छोटे मनुष्यों के चित्र भी अंकित हैं। यह मनुष्य मूर्तियां पद्म पुष्प पर बैठी हुई हैं। उनके हाथ में एक एक कमल के फूल हैं। स्तूप की यह सुन्दर कारीगरी बतलाती है कि प्राचीन समय में शिल्प विज्ञान की कैसी उन्नति हुई थी।

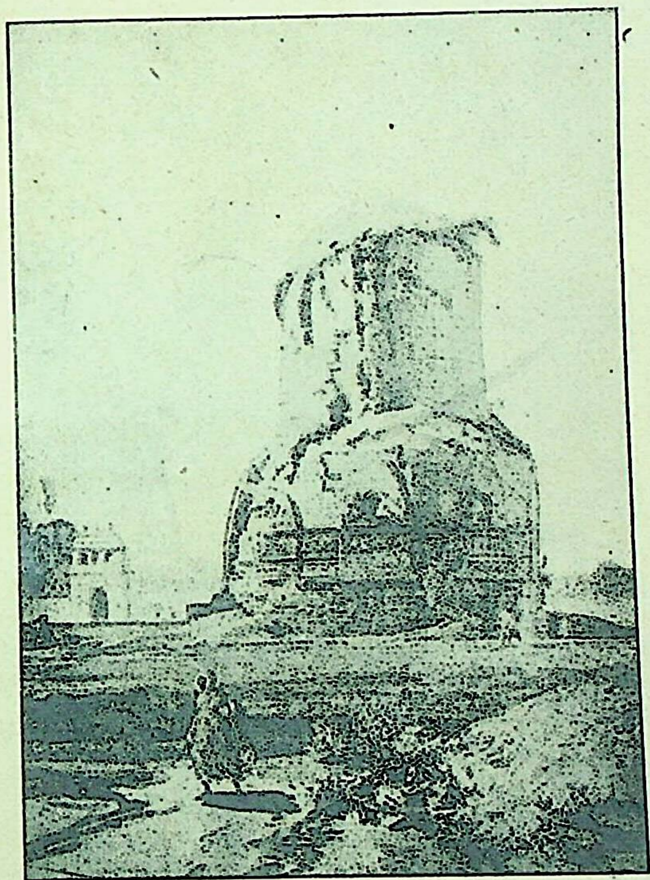
चौखण्डी—धमेक से थोड़ी दूर दक्षिण-पश्चिम के मैदान में चौखण्डी नाम का एक टावर ज़मीन से ७४ फुट ऊंचे ईंटों के बे डौल ढीहे पर है। उस पर २३ फुट ऊँचा ईंट का अठपहल टावर है। जिसका घेरा ६० फुट है, इसके चारो तरफ दरवाज़े



[illegible] के का जितना अंश पत्थर का है उस पर सुन्दर [illegible] है। कनिंघम साहब लिखते हैं कि इस [illegible] आठ चौपहल विभाग हैं। प्रत्येक विभाग की चौड़ा[illegible] हुआ है। हर एक विभाग में अर्ध गोलाकार आला है। [illegible] आले में मूर्तियों के बैठाने के लिये कुछ छिद्र बने हुए [illegible] मूर्तियां नहीं हैं। अनुमान किया जाता है कि प्रत्येक [illegible] बुद्धदेव की मूर्तियां स्थापित थीं। आलों का आकार [illegible] मूर्तियां मनुष्य के बराबर ऊंची होती जाती आती हैं। [illegible] के ऊपर [illegible] फुट चौड़ा स्तम्भ का घेरा है और [illegible] सुन्दर काम किया हुआ है। घेरे में तीन तीन फुट [illegible] पट्टियां बनी हैं एक जैनमिति या नक्शा और सब [illegible] की पट्टी में फूलों की लता आदि बने हैं, एक स्थान [illegible] जाल, जन्तुओं के चित्र खुदे हैं। छोटे छोटे मनुष्यों के चित्र [illegible] अंकित हैं। पर मनुष्य मूर्तियां एक पुष्प पर बैठी हुई हैं [illegible] हाथ में एक एक कमल के फूल हैं। स्तूप की यह सुन्दर [illegible] बातें बतलाती है कि प्राचीन समय में शिल्प विज्ञान की [illegible] उन्नति हुई थी।

कौसाम्बी—प्रयाग से थोड़ी दूर दक्षिण-पश्चिम की ओर [illegible] कौसाम्बी नाम का एक टीला जमीन से ४० फुट ऊंचे [illegible] है और [illegible] है। उस पर [illegible] फुट ऊंचा है [illegible] है, जिसका घेरा [illegible] फुट है, इसके चारों तरफ [illegible]

बनारस



अशोकस्तंभ ।

ज्ञानमण्डल, काशी द्वारा प्राप्त ।

हैं। इस टावर के एक द्वार पर अरबी लेख है। जिससे पता चलता है कि हुमायूं बादशाह यहां सिंहासन पर बैठे थे, उस आनन्द की यादगार को बराबर याद रखने के लिये सम्राट अकबर ने सन् १५८८ ई० में इसे बनवाया था *

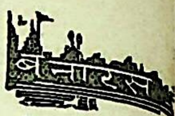
सन् १९०५ ई० में मि० एफ० ओ० अर्टल ने भी इस स्थान को खुदवाया था, इसके उपरान्त सरकारी पुरातत्व विभाग के डायरेक्टर मार्शल साहब ने खुदवाने का काम आरम्भ किया। डाक्टर स्टेन केनाओ और मि० डब्लु० एच० निकोलस ने इस काम में उनकी बड़ी सहायता की।

म्यूज़ियम—सारनाथ की ज़मीन को खोदने से जो चीज़ें मिली हैं वे सब एक सुन्दर पक्की इमारत बनवा कर रखी गई हैं। बड़ी चीज़ें दीवार के सहारे और छोटी चीज़ें शीशे की आलमारी और शोकेस में सुरक्षित की गई हैं, पुरातत्व वेत्ताओं ने अनुसंधान से जो खोज की है वह मूर्तियों आदि के साथ सुन्दर काली छोटी छोटी तख़्ती पर नाम और सन् सहित रखी गई हैं। म्यूज़ियम में रखी हुई चीज़ों में:—

सिंहस्तम्भ-महाराज अशोक का शिलालेख-युक्त स्तम्भ-कुशान नृपति कनिष्क के समय की एक बोधिसत्व की मूर्ति-

---

* इतिहास से पता चलता है कि जब शेरशाह से लड़ने के लिये हुमायूं बादशाह ने बिहार पर चढ़ाई की थी तब वह इस जगह पर आये थे।

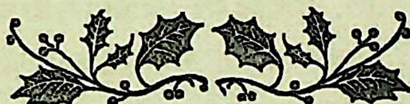


पत्थर का छत्र मन्दिर-राजा अश्वघोष की शिला लिपि-पा
बड़े संघाराम की भित्ति-खड़ी और बैठी बौद्ध मूर्तियां-प्राचीन
काल के मिट्टी के बर्तन-हिन्दू मूर्तियां-मिट्टी की मुहरें-विश्वपा
और कुमार देव की लिपि-स्तम्भ और मूर्तियों के टूटे टुकड़े
चार सिंह मूर्तियां-राजा कनिष्क के समय की लाल पत्थर
की बनी बड़ी मूर्ति-शिव की दस भुजावाली मूर्ति आदि विशे
उल्लेख योग्य हैं।

ह्यानसांग एक स्थान पर यह भी लिखता है कि "प्रथम
मठ के द्वार पर एक पत्थर का स्तम्भ है जो ७० फुट ऊँचा
है। इसका पत्थर जेड नामक पत्थर की तरह चिकना और
चमकीला है। इस स्तम्भ में शीशे की तरह छाया दीख पड़ती
है * * इसी स्थान पर बुद्धदेव ने पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर अपने
धर्म का प्रचार किया था" खोदते समय इस स्तम्भ का जितना
अंश मिला है वह लगभग २७ फुट के है। सम्राट अशोक ने
बुद्धदेव के जीवन से सम्बंध रखने वाले प्रसिद्ध स्थानों में
स्तम्भों की स्थापना की थी और उन स्तम्भों पर अनुशासन
वाक्य खुदवाये थे। कपिलवस्तु, कुशिनगर, उरवेला, श्रावस्ती
बुद्धगया आदि स्थानों की तरह सारनाथ में भी उन्होंने यह
स्तम्भ स्थापित किया था। स्तम्भ के ऊपरी भाग में एक ही
पत्थर में चार सिंह मूर्तियां हैं जो चारो दिशाओं की ओर मुख
किये हैं, इन पर की संगतरासी का काम बहुत ही बढ़ियां है।

सिंह मूर्तियों और स्तम्भ की पालिश देखने योग्य है। जान पड़ता है कि आजकल का यह बना हुआ है। पास ही में पत्थर की छड़दार दालान में भी बौद्ध और हिन्दू देवताओं की मूर्तियां रखी हुई हैं। मैदान में मकान के खंडहर, आंगन, दरवाज़े, स्तूप, शिला आदि दिखलाई देते हैं।

गौड़ेश्वर राजा महिपाल ने बुद्धदेव के पाद पद्मों की पूजा करके सौ इशान और चित्रघंटा बनवाया था। सम्राट अशोक के बाद महाराज कनिष्क ने भी इस स्थान की उन्नति की, पाल वंशीय राजाओं ने भी बौद्ध धर्म्म की रक्षा की, मुसलमानी राजत्व काल में बौद्ध धर्म यहां से विदा हुआ और चीन, जापान, जावा, ब्रह्मदेश और लंका में इस धर्म के अनुयायी अधिक हो गये। इसमें सन्देह नहीं कि पुरातत्व वेत्ताओं के लिये यह स्थान बड़े महत्व का है। देशी और विदेशी यात्री भी इस स्थान को देखने के लिये अब अधिक आया करते हैं।



म्युनिसिपैल्टी की सीमा



स समय बनारस म्युनिसिपैल्टी की सी[illegible] आठ वार्डों में बँटी हुई है। वार्डों के ना[illegible] ज़मीन का पैमाना, मुहल्लों के नाम त[illegible] किस मुहल्ले में कितने मकान हैं अथ[illegible] उनमें कितने लोग रहते हैं यह सब [illegible] नीचे दी जाती हैं।

आदमपुरा—यह वार्ड ४६२ एकड़ ज़मीन पर बसा हु[illegible] है। इस वार्ड में ३६ मुहल्ले और ३,३२१ मकान हैं जिन[illegible] १८,४७३ मनुष्य रहते हैं। मुहल्ले के नाम ये हैं,—

पाटनदरवाज़ा, माथा टोला, गायघाट, कामेश्वर महादे[illegible] त्रिलोचन, सिढ़ी नान्दू, मुकीमगंज, सदर महाल, फाटक काज़[illegible] तकी अली खाँ, तेलिया नाला, कायस्थ टोला, प्रहलाद घाट, न[illegible] महादेव, बाज़ार राजघाट, घसियारी टोला, भदऊं, आद[illegible] पुरा, पठानी टोला, दीवान गंज, चौहट्टा लाल खां, जेरगुल[illegible] नचनी कुआं, जुगल टोला, कोयला बाज़ार, सुगा गढ़ह[illegible] सलीम पुरा, हसन पुरा, आलम पुरा, चन्दू पुरा, बलुआ बहादु[illegible] हनुमान गंज, छित्तन पुरा, ओंकालेश्वर, नवापुरा, फुलवरिया[illegible] तेलियाना, जलाली पुर, राजघाट।

कोतवाली—यह वार्ड ३३२ एकड़ ज़मीन पर बसा हुआ है। इस वार्ड में ६८ मुहल्ले और ४,५५६ मकान हैं जिनमें ३२,४३० मनुष्य रहते हैं। मुहल्लों के नाम ये हैं,—

बंगाली बाड़ा, गणेश गली, लट्टूगली, भंडारीगली, पौटिया गली, कातरागली, कुचा लालासूर, घासीटोला, पत्थर गली, हाजीदरस, शुकल की गली, लछमन जती, कूचा लाला संड, कूचा माधो दास, भैरोबाज़ार, गली गणेशचमरिया, कालभैरव, भाट गली, जेठाजी गोविन्दजी नायक, दूध विनायक, फाटक रंगील दास, सूत टोला, रामघाट, ग्वालदास साह, बुलानाला, सिद्ध-माता भीतरी, ब्रह्मपुरी, बाहरी सिद्धमाता गली, गली गनेश-दीक्षित, दादुलचौक, माधोराव, हाथी गली, नारायन दीक्षित, कूचा मदनमोहन, गली सिवा चौधरी, उंचवा गली, राजमन्दिर, वृद्धकाल, दारानगर, हरतीरथ, बाग सुन्दरदास, बुचइटोला, गायघाट, मछोदरी, कतुवापुरा, कूचा हिम्मत बहादुर, मद्धमे-श्वर, नवापुरा, कुतवन शहीद, दुल्ली गड़ही, मैदागिन, बाड़ा गणेश, बाजार अन्नपूर्णा गंज, भुतई इमली, कूचा मंसाराम, ब्रह्मपुरी, मलदहिया, कूचा अमीचंद, घाट माधोराव, मंडी अम्बिया, विश्वेश्वर गंज, करनघण्टा, ईश्वर गंगी, सप्तसागर, भूतभैरव नखास, गोला दीनानाथ भीतरी हिस्सा, गोला दीना-नाथ बाहरी हिस्सा, नरहरपुरा, औसानगंज, राजापुरा।

चौक—यह वार्ड १९५ एकड़ ज़मीन पर बसा हुआ है।

इस वार्ड में ६८ मुहल्ले और ४,०१६ मकान हैं जिनमें २४,
मनुष्य रहते हैं। मुहल्लों के नाम ये हैं,—

ज्ञानवापी, राजगीर टोला, मुरली गली, चमरिया ग
पांचोपंड्या, गली नन्दूफरिया, गली विश्वेश्वरनाथ, लाहो
टोला, टिकैतराय, नैपाली खपरा, कोतवालपुरा, कुन्दीगढ़टो
आदि विश्वेश्वर, घुघरानी गली, चाहमहिमा, सेख सलीम
फाटक, रेशम कटरा, छत्तातला, सरायँ हड़हा, भीखाशाह प
लवान, सरायँ सिताबराय, हक्काकटोला, काशीपुरा ग़र्वी, का
पुरा शर्की, गोविन्दपुरा खुर्द, राजादरवाज़ा, बांदीटोला, कू
मोअज्ज़म खां, मछरहट्टा, कूचा विन्ध्याचल, कूचा चम्पाशही
बुलानाला, पियरीखुर्द और कलाँ, भूलोटन, हड़हा, सुड़ि
आसभैरव, बाबर शहीद, गली सेवकराम सदावर्ती, वा
मुनारुद्दौला, काग़ज़ी टोला, रानी कुंआ, छोटी कुंजगली, ग
चन्दू हज्जाम, कूचा प्राणनाथ, गोपालदास साह, कूचा खदे
मल, ठठेरी बाजार, गोबिन्दपुरा कलां, कचौरी गली नं० १ औ
२, फाटक घासीराम, ब्रह्मनाल, मणिकर्णिका घाट, सुखला
साव, कुञ्जगली, नन्दन साह, सिद्धेश्वरी, गढ़बासी टोला, न
घाट, गोलागली, सूत टोला, भिखारी दास, पटनी टोला, पियर
कलां, बेनिया, कटरा कर्णघण्टा, हीरा पुरा।

चेतगंज—यह वार्ड ५१३ एकड़ ज़मीन पर बसा हुआ है।
इस वार्ड में ३० मुहल्ले और ३,६६८ मकान हैं जिनमें १९,
मनुष्य रहते हैं। मुहल्लों के नाम ये हैं,—

सेख़ सलीम का फाटक, हँकार टोला, कालीमहल, गोवर्धन की सरायँ, इंग्लिशिया लेन, बाग बरियार सिंह, तेलियाना, कबीरचौरा, चन्दन शहीद, नई बस्ती, पुरानी टकसाल, बाग़ कन्हैयालाल, सैनपुरा, चेत गंज, हबीबपुरा, नई पुरवा, पितरकुंडा, शर्की और ग़र्वी, जयपुरा, लहंगपुरा शर्की और ग़र्वी, माताकुण्ड, लल्लापुरा कलां और खुर्द, पिशाच मोचन, जगत गंज, तेलिया बाग़, राघोवीर, मलदहिया।

जैतपुरा—यह वार्ड ६०२ एकड़ ज़मीन पर बसा हुआ है। इस वार्ड में ३४ मुहल्ले और ४,८२३ मकान हैं जिनमें २२,२६५ मनुष्य रहते हैं। मुहल्लों के नाम ये हैं,—

कटेहर, मानउल्लापुरा, छोहरा, आग़ागंज, हुसैन पुरा, जैनपुरा, कम्मन गड़हा, उसमान पुरा, ख्वाज़ा पुरा, सलारपुरा, जमालुद्दीन पुरा, जलालुद्दीन पुरा, अलई पुरा, गोपाल गंज, कमाल पुरा, जैत पुरा, डिगिया, ओरई पुरा, बाकराबाद, रसूल पुरा, लुद्धन पुरा, दोसी पुरा, नवा पुरा, क़ाज़ी सादुल्ला पुरा, नई बस्ती, धूपचंडी, चौकाघाट, हैंसतले, समन की बाजार, उधो पुरा, बसनियां, कच्चीबाग़, वंधू, खेत बसनिया।

दशाश्वमेध—यह वार्ड ५६२ एकड़ ज़मीन पर बसा हुआ है। इस वार्ड में ६० मुहल्ले और ५,८०२ मकान हैं जिनमें ४१,६६१ मनुष्य रहते हैं। मुहल्लों के नाम ये हैं,—

गली विश्वेश्वरनाथ, कालिका गली, सकरकन्द गली,



साक्षीविनायक, टेढ़ी नीम, नीची ब्रह्मपुरी, कोतवालपुरा, भ गली, हौज कटोरा, पत्थर गलिया, बड़ादेव, कोदई चौ काज़ीपुरा कलां और खुर्द, लहंगपुरा शर्की और ग़र्वी, दशा मेध, अहिल्याबाई की ब्रह्मपुरी, केवल गली, मुंशीघाट, रा महल, चौसट्टी घाट, चौसट्टी बाजार, पाँड़े घाट, गंगा म देवनाथ पुरा खुर्द और कलां, ब्रह्मपुरी नाथूसाव, बंगाली टो ख़ालिस पुरा, गणेश महाल, आगस्त कुंडा, जंगमबाड़ी, म पुरा, जगजीवन पुरा, पांड़े हौली, लछमनपुरा, बाज़ार सदा रामापुरा, लाहौरी टोला, धर्मकूप, मीरघाट, त्रिपुरा भैरवी, प डेढ़मल, रानी भवानी की ब्रह्मपुरी, सुमेश्वर गली, मान मन्दि मिश्रपोखरा, भ्रुवेश्वर, कब्र आशिक माशूक, लक्ष्मी कुण्ड, प दरीबा, जद्दूपुरा, मीरबाग, घी हट्टा, लक्सा, मनिहारी टोल नई बस्ती रामापुरा, बाग़ रानी भवानी, सिगरा, शिवपुरवा

भेलूपुरा—यह वार्ड ७४३ एकड़ ज़मीन पर बसा हुआ है इस वार्ड में २९ मुहल्ले और ४,५२२ मकान हैं, जिनमें २३,३ मनुष्य रहते हैं। मुहल्लों के नाम ये हैं,—

अस्सी संगम, भदैनी, शिवाला, अवध शर्की और ग़र्वी पितास्बर पुरा, बाग़ हाड़ा, बाड़ा गम्भीर सिंह, फ़ीलख़ाना क्रीम कुण्ड, हाता रोहिला, गौरी गंज, सोनार पुरा, मा सरवर, फ़रीद पुरा, पांड़े हौली, तिल भंड़ेसर, रेवड़ी तालाब डौरिया बीर, भेलुपुरा, कमच्छा, खोजवां, नई बाज़ार, कश्मीरी

गंज, हनुमान गंज, नवाब गंज, दुर्गा कुण्ड, गौरी गंज, तुलसी पुरा।

सिकरौल—यह वार्ड १,२५७ एकड़ ज़मीन पर बसा हुआ है। इस वार्ड में २१ मुहल्ले और ३,६७३ मकान और बँगले हैं, १६,६०० मनुष्य रहते हैं। मुहल्लों के नाम ये हैं,—

सिकरौल, छुप्पे पुर, चौका घाट, घउसाबाद, अराज़ी लेन, अंधरा का पुल, लच्छी पुरा, नदेसर, राजा बाज़ार, बाजार जदीद, खजुरी, पहाड़ पुरा, डिठौरी महाल, मियानामहाल, चमरोटिया, ताज पुरा, हुकुल गंज, तेलिया बाग़, पिपरिया पुखरी, नई बस्ती, इंग्लिशिया लेन।

इस प्रकार काशी की बस्ती म्युनिसिपैल्टी की सीमा में ४,६९६ एकड़ ज़मीन में है। जिनमें ३४६ मुहल्ले और ३३,०४० मकान हैं इन मकानों में १,९९,६९२ मनुष्य रहते हैं, मनुष्य गणना के अनुसार भारतवर्ष में काशी की गणना छठी है।

सन १९११ की मनुष्य गणना के अनुसार बनारस शहर की आबादी १,९९,८६८ थी; इसमें १,०३,१२६ पुरुष और ९६,७४२ स्त्रियां थीं। इनमें हिन्दू १,४२,७५६, आर्य हिन्दू ३७१, जैन २४४, सिख ९७, मुसलमान ५५,४०७, कृस्तान ९८१, पारसी ४ और यहूदी ८ थे। इनमें हिन्दी जानने वाले ३९,४२८ पुरुष और ६३६ स्त्रियां हैं।

काशी की जनसंख्या प्रति वर्ष घटती जाती है। आज से

३२ वर्ष पूर्व सन् १८६१ की मनुष्य गणना में २,२३,३७५
संख्या थी। सन् १६०१ में २,१३,०७६ सन् १६११ में १,६६
सन् १६२१ में १,६५,३७३ रह गई। इस ओर स्थानीय म्युनि
पैल्टी का ध्यान होना चाहिये।

काशी में प्रायः सभी जाति के लोग देखे जाते हैं, नि
नए यात्री आते और जाते हैं। जो यात्री काशी में आते
उन पर म्युनिसिपैल्टी का टैक्स लगा है जो रेलवे टिकट
साथ ले लिया जाता है। यहां के प्रसिद्ध रईस बाबू
प्रसाद खत्री ने 'डारविन पिलग्रीम संघ' के नाम से
वाले यात्रियों के सुविधे के लिये एक फण्ड स्थापित किया
इसमें और भी कितने ही सज्जनों ने चंदे दिये हैं। जिस
व्याज से यात्रियों के हितकर कार्य होंगे। इस प्रबंध
बराबर चलाने के लिये स्थानीय, अधिकारियों तथा कु
सज्जनों की एक समिति बना दी गई है। श्रीमान् काशीनरे
इसके संरक्षक चुने गये हैं। इसमें सन्देह नहीं कि यदि
कार्य सुचारु रूप से हुआ और अधिकारी वर्गों ने उत्सा
तथा सहानुभूति दिखलाई और उनमें सेवा करने का
आया तो देश के लिये यह शुभ लक्षण है।

सन् १८०८ में पुराना चौक बाज़ार तोड़ा गया, नया बा
सड़कें आदि बनीं, १८१० में चुङ्गी और हाउस टैक्स
निश्चय हुआ सन् १८३० में विश्वेश्वर गंज बाजार बना।

बाद में शहर का प्रबंध करने के लिये म्युनिसिपैल्टी का सितम्बर १८६७ में जन्म हुआ। उसमें २१ सज्जनों की एक कमेटी बनी, जिसमें १६ चुने हुए ४ सरकारी और १ सभापति। एक वर्ष बाद नियम छापे गये, छः वार्ड में शहर बाँटा गया। सन् १८८४ में यह निश्चय हुआ कि १८ चुने हुए २ सरकारी १ सभापति। सन् १९०४ में बनारस आठ वार्ड में बाँटा गया और २८ मेम्बरों का निश्चय हुआ, जिसमें २१ चुने हुए ६ सरकारी और एक सरकारी चेयरमैन, नवम्बर सन् १९१६ से २४ मेम्बर का निश्चय हुआ, जिसमें २ गवर्नमेण्ट के ८ मुसलमान और १४ हिन्दू और एक हिन्दुस्तानी चेयरमैन। यह पद श्रीयुत् राजा मोतीचन्द साहब सी० आई० ई० को प्राप्त हुआ।

ज़िले का प्रबंध करने के लिये सन् १८८३ में डिस्ट्रिक बोर्ड बना और उस समय के नियमानुसार ११ सज्जनों की एक कमेटी बनी, जिसमें आठ चुने हुए और तीन सरकारी। इस बोर्ड द्वारा कितने ही सुधार हुए, स्कूल बने, सड़कें निकलीं, कितनी सड़कों की मरम्मत की गई। छाये के लिये सड़क के दोनों तरफ़ पेड़ लगाये गये, मिडिल और वर्नाक्यूलर स्कूल खोले गये। सन् १९२३ में नए नियम के अनुसार चुनाव हुआ, जिसमें २९ मेम्बर चुने गये, उसमें २७ जनता की ओर से २ सरकारी, इसमें २० हिन्दू ८ मुसलमान और १ अंग्रेज हैं। इसी वर्ष से हिन्दुस्तानी चेयरमैन चुनने का भी नियम हुआ, जिसके पहिले हिन्दुस्तानी सभापति गो० रामपुरी जी हैं।

बनारस ज़िले की तहसी

परगना और गांव ।

अजगरा
अलीनगर
अठगांवा
बाबतपुर
बबुरी
बलुआ
बड़ागांव
बारह परगना
बरहवाल
बसनी
चन्दौली तहसील
चन्द्रावती
चौबेपुर
चोलापुर
डंडुपुर
देहातअमानत
धरहरा
धूस
धूस परगना
गंगापुर
जखनी
जाल्हूपुर
कैथी
कसवार राजा
कसवार सरकार
कठिहर
कटिरांव
कोल असलाह
लोहता
मवारी
मझवार
मवई
मिरजामुराद
मुग़लसरायँ
नादी निधौरा
नरवन परगना
नौबतपुर
नियारडीह
पिंडरा
राजातालाव
रालूपुर
रामगढ़
रामनगर
रोहनिया
सैय्यदराजा
सकलडीहा
सारनाथ
शहनशाहपुर
शिवपुर
सिन्धौरा
सुलतानीपुर
टांडा
ठटरा

बनारस राज्य।





काशी से पांच कोस दक्षिण कुशवार परगने के थिथरिया (वर्तमान गंगापुर) में श्री मनो-जन सिंह नाम के एक गौतम भूमिहार जमींदार रहते थे, इनके चार पुत्र थे—मनसाराम, दशाराम, दयाराम, मायाराम। सब से बड़े लड़के श्री मनसाराम ने काशी राज्य की नींव डाली जो कि अभी तक उन्हीं के वंशधरों के अधिकार में है। श्री मनसाराम मीर रुस्तम अली के यहां काम करते थे, आप बड़े चतुर और बुद्धिमान थे, अपने उत्तम कार्यों द्वारा थोड़े दिनों में यह मीर रुस्तम अली के विश्वास-पात्र हो गये। मीर रुस्तम अली के सम्बंध में लखनऊ में नवाब सआदत खां के कान भरे जाने लगे, उधर मालगुज़ारी देर से पहुंचने लगी, जिससे रुष्ट हो कर सन् १७३४ ई० में नवाब ने अपने नायब सफदर जंग को मीर को बनारस के बाहर निकालने के लिये भेजा। बुद्धिमान श्री मनसाराम ने इस अवसर पर मीर के आज्ञानुसार जौनपुर जाकर नायब को बहुत कुछ समझा बुझाकर उनका क्रोध शान्त किया, इधर श्री मनसाराम के शत्रुओं ने उलटी सीधी

सुझानी आरम्भ की। मीर को कहा कि आप यह क्या कर
हैं ? जिस मनसाराम को आप ने अपना हितू समझ कर
है, वह तो आप का शत्रु है, इस पर नायब को समझाने
लिये। मीर की तरफ़ से दूसरा आदमी भेजा गया। उधर
मनसाराम को भी इस चाल की ख़बर लगी, वे भी बड़े
में पड़ गये कि क्या करना चाहिये ? जिन मीर ने मुझे
उन्हीं का मेरे विरुद्ध ऐसा ख्याल है, भविष्य में न जाने क्या
खूब सोच समझ कर उन्होंने नायब के सन्मुख एक प्रस्
उपस्थित किया, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया, नायब
पहिले से इस काम को सोचे बैठे थे, चट श्री मनसाराम
तेरह लाख वार्षिक पर बनारस, जौनपुर और चुनार के परग
को अपने पुत्र श्री बलवंत सिंह के नाम बन्दोवस्त करा लि
सन् १७३८ में धूमधाम से श्री मनसाराम ने बनारस में प्र
किया किन्तु दुःख है कि आपको यह राज्य सुख अधिक सम
तक नहीं हुआ, एक वर्ष के बाद श्री मनसाराम का शरीरा
हो गया, उनके पुत्र श्री बलवन्त सिंह काम देखने लगे।

राजा बलवन्त सिंह

श्री मनसाराम के बाद उनके पुत्र श्री बलवंत सिंह ने इला
हाबाद के सूबेदार अमीर खां के द्वारा अपना एक आदमी दिल्ली
भेजा। उसने श्री बलवंत सिंह के दिये २१,७७५) रुपये नज़र
बादशाह मुहम्मद शाह को भेंट किये और उनसे राजा का खिता



तथा तीन मौज़ों का पट्टा लिखवा लिया, अब राजा बलवंत सिंह ने गांव का नाम बदल कर गंगापुर रखा और वहीं पर एक किला बनवाना आरम्भ किया, जिसके तीन तरफ़ खाईं खोदी गई और एक तरफ़ से रास्ता रखा गया। इसी अवसर पर अस्सी संगम से एक मील दक्षिण-पूर्व गंगा के दाहिने किनारे पर रामनगर का किला भी बनवाया जो इनकी राजधानी हुआ, इसके बाद ही विजय गढ़, अगौरी, लतीफ़ पुर और पतीता का किला अधिकार में किया, भदोही और केरामंगरौर भी इनका हो गया। विजय गढ़ का किला चन्देल राजपूतों का दो हजार फीट नदी के ऊपर कैमोर पहाड़ पर बना है और सिवाय एक तंग रास्ते के ऊपर जाने का और कोई राह नहीं है। राजा बलवन्त सिंह ने बड़े कौशल से इस किले को लिया, दूसरा पतीते का किला भगवत परगने के मुसलमानों का था, यह विन्ध्य पहाड़ के नीचे चुनार से पांच मील पर है, इसे एक महीने तक घेरा डाल के लिया, तीसरा लतीफ़ पुर का किला भी एक मुसलमान का था, यह रामनगर से विजय गढ़ जाते हुए रास्ते में है, इस पर चढ़ाई कर अधिकार में कर लिया, चौथा अगौरी का किला बड़हर के चन्देल राजा का था, जो कि सोन नदी के ऊपर एक ऊंचे पहाड़ पर है, इसे भी लड़कर दख़ल कर लिया। शाहाबाद का केरामंगरौर परगना दायम खां का था, उसे अपने चचा श्री दशाराम की कृपा से पाया, फिर दायम खां ने चढ़ाई की, राजा बलवंत सिंह ने मुकाबला किया, पीछे

से सूबा बिहार के नवाब के नायब के साथ सात हजार रु
वार्षिक मालगुज़ारी पर परगने का ठीका कर लिया, बाद में अ
हजार दे आलमगीर बादशाह से माफ़ी करा लिया, जो अ
तक उस सनद के अनुसार माफ़ी चला आता है। जौनपु
ज़मींदारों को मार भगाया और सब ज़मींन्दारी अपने हाथ
कर ली, अवध के नवाब नाज़िम सफदर जंग के बाद उन
पुत्र शुजाउद्दौला गद्दी पर बैठा। लाख रुपया चुनार के किले
को देना मंजूर करके राजा बलवंत सिंह ने किले को अपने हाथ
लिया चाहते थे, मगर शुजाउद्दौला को इसकी ख़बर लग गई।
एक बड़ी फ़ौज के साथ बनारस आ गया लेकिन राजा बल
सिंह उनके आने का समाचार पा अपने कुटुम्ब के लोगों
साथ लतीफ़ पुर के किले में चले गये। नवाब ने रुष्ट हो
ग़ाज़ीपुर के मालगुज़ार फ़ज़ल अली को बुलाकर राजा को गि
रफ़्तार करने के लिये कहा और इनाम में सब इलाक़े उन्हें सालि
बन्दोबस्त में देने को कहा, फ़ज़ल अली तैयार हो गया,
राजा साहब ने नवाब को पांच लाख रुपबा नज़र का भें
और सालाना पांच लाख रुपया मालगुज़ारी में अधिक
दिया, साथ ही नवाब के सरदारों को रुपया देकर अपनी तर
मिला लिया, परिणाम अच्छा हुआ, नवाब ने पांच लाख अधि
मालगुज़ारी स्वीकार कर ली और सनद दे कर चले गये।

ठीक समय पर मालगुज़ारी न मिलने से ग़ाज़ीपुर
मालगुज़ार फ़ज़ल अली को सज़ा देने के लिये नवाब ने अप



नायब को फ़ौज के साथ भेजा और इधर राजा बलवन्त सिंह को भी उनकी सहायता करने को लिख भेजा, दोनों ने मिलकर आज़मगढ़ पर चढ़ाई की, फ़ज़ल अली ग़ाज़ीपुर होता हुआ पटने की तरफ़ भाग गया, राजा बलवंत सिंह को इसके बदले में नवाब ने आठ लाख वार्षिक मालगुज़ारी पर ग़ाज़ीपुर ज़िले के २२ परगने दिये, भाग्य लक्ष्मी राजा साहब के अनुकूल थीं, उन्होंने आस पास के कितने ही किले और इलाक़े तथा सिरांग का किला जीत कर अपने अधिकार में कर लिये।

इसमें सन्देह नहीं कि राजा बलवंत सिंह अति वीर और बुद्धिमान राजा थे। आपने काशी राज्य की सीमा पर कई किले बनवाये और अपनी फ़ौज बढ़ाई। इसी समय बंगाल के नवाब मीर कासिम अंग्रेज़ों द्वारा भगाये जाने पर अवध के नवाब शुजाउद्दौला की शरण में आये और सहायता मांगने लगे। उधर दिल्ली के सम्राट शाह आलम बिलकुल बेबश और असहाय हो रहे थे, उन्होंने भी अवध के नवाब की शरण ली। सन् १७६४ ई० में तीनों की सलाह से अंग्रेज़ों को रोकने के लिये एक बड़ी फ़ौज लेकर मीर कासिम, शाहआलम, और नवाब शुजाउद्दौला बंगाल की तरफ़ बढ़े, बनारस से राजा बलवंत सिंह को भी चलने को कहा, राजा साहब बड़े चतुर और दूरदर्शी थे, उन्होंने समझ लिया कि अंग्रेज़ों के विरुद्ध हथियार उठाना व्यर्थ है, साथ ही वे यह भी जानते थे कि जो इस समय इनसे मिला रहेगा वही अपना राज्य स्थिर रख सकेगा।



नवाब अपनी फ़ौज़ सहित बक्सर पहुंचे, यहीं पर लड़ाई। रम्भ हुई, नवाब और अंग्रेज़ों का।युद्ध होने लगा। नवाब। चढ़ाई का हाल अंग्रेज़ों को पहिले ही से लग गया था। दो और अंग्रेज़ी फ़ौज दे नवाब को रोकने के लिये सेनापति मे मनरो भेजे गये, बक्सर के सामने मैदान में दोनों दलों में मु भेड़ हो गई। इधर मुसलमान और रुहेले लड़ रहे थे, उ बक्सर युद्ध पर ही अंग्रेज़ों की विजय के कारण सदा के लि उनके पांव जमते थे, इस कारण खूब जम कर युद्ध हुआ, औ परिणाम भी अच्छा हुआ, नवाब घबरा गये और थोड़े आदमी साथ ले अवध की तरफ़ चल पड़े, मीर कासि अवसर पा भाग गया, शाह आलम ने आत्म समर्पण किया।

२२ अगस्त सन् १७७० ई० में प्रतापी राजा बलवंत सिं की मृत्यु हो गई। राजा साहब ने पहिले ही से अपने भतीं बाबू मनियार सिंह को अपने पास रख लिया था और वह भी राज्य के काम काजों की देख भाल करते थे। अपने बाद इन्हीं को गद्दी पर बैठाने का राजा साहब ने निश्चय कर लिया था। बाबू मनियार सिंह जिस समय राजा साहब के मृत शरीर को लेकर मणिकर्णिका घाट पर दाह कर रहे थे उस समय एका एक रामनगर से तोप की आवाज़ आई, लोग चकित हुए इसी समय रामनगर से एक आदमी ने आ कर कहा कि बाबू औसान सिंह की सहायता से-



राजा चेत सिंह

गद्दी पर बैठ गये और ख़ज़ाना दख़ल कर लिया। यह सुन बाबू मनियार सिंह प्राण के भय से नेपाल की तरफ़ भाग गये। इधर राजा चेत सिंह ने गद्दी पर बैठ के बाबू औसान सिंह को अपना मंत्री बनाया, अवध के नवाब यह सुन कर फ़ैजाबाद से बनारस को चल पड़े। बाबू औसान सिंह की सम्मति के अनुसार राजा चेत सिंह नवाब का स्वागत करने के लिये जौनपुर गये और बड़ी नम्रता से मिले, नवाब भी इनसे प्रसन्न हुए और बनारस में रह कर एक दिन रामनगर किले में भी गये, सवा लाख रुपया बिछा कर उस पर नवाब का मसनंद लगाया गया, उनके बैठने पर अनेक प्रकार के कपड़े दो किश्ती जवाहिरात, पन्द्रह घोड़े, पाँच हाथी नज़र में दिये। नवाब बहुत प्रसन्न हुए और अपने पुत्र आसफ़ुद्दौला से राजा साहब की पगड़ी बदलवा दी। उधर अंग्रेज़ों ने भी चेत सिंह को ही गद्दी दी जाने की सम्मति दी और नवाब पर भी ऐसा करने का दबाव डाला था।

राजा चेत सिंह राज्य करने लगे। इस बीच कम्पनी और मरहठों में लड़ाई छिड़ गई। उधर टीपू सुलतान की भी छेड़ छाड़ होने लगी, इस पर गवर्नर जेनरल वारेन हेस्टिंग्स ने पांच लाख वार्षिक राजा चेत सिंह से लड़ाई के लिये ख़र्च मांगा, तीन वर्ष तक यह बराबर देते रहे। बाद में देने में कुछ देर हुई,

जिसके कारण इनसे दण्ड सहित ५० लाख रुपये और स[...] मांगे गये, फिर भी राजा चेत सिंह २० लाख किश्त में देने [...] तैयार थे। मगर गवर्नर जेनरल रुपया वसूल करने स्वयं बनार[स] आये और माधव दास के बाग़ में ठहरे, राजा चेत सिंह उन[से] मिलने आये, मगर राजा के शत्रुओं के झूठी सच्ची बातें ल[गा] देने से गवर्नर जेनरल इनसे नहीं मिले। बाबू औसान सिंह औ[र] राजा चेत सिंह में भी अनबन हो चुकी थी, वह भी इनके [...] हो रहे थे और अंग्रेज़ों के कान भर रहे थे, ऐसे समय लौट[कर] राजा साहब अपने शिवाले घाट वाले महल में आ गये। दूस[रे] दिन प्रातःकाल जब कि राजा साहब सो रहे थे उस सम[य] उनको मार्कहम साहब के आने की सूचना मिली। मार्कहम [ने] राजा चेत सिंह के सामने आकर कहा; "कि गवर्नर जेनरल [ने] कुछ समय तक आप को नज़रबंद रखने का हुक्म दिया है[,] बाद में जो जुर्म लगे थे वह कागज़ पढ़ा गया। इस पर रा[जा] साहब ने उनकी इच्छा पूर्ण करने का वचन दिया, जिससे मार्क[-] हम माधव दास के बाग़ में चले गये, मगर तीन अफ़सर और कुछ सिपाहियों को वहीं छोड़ गये। हेस्टिंग्स साहब उत्त[र] पाकर कुछ पसीजे, इतने में मार्कहम का दूसरा पत्र राजा चेत सिंह को मिला कि मैं थोड़ी देर में आता हूं तब तक आप [...] निपट कर भोजन कर लें, इधर राजा पर और दबाव डालने के लिये फ़ौज भेजी गई, जो बराबर भीतर घुसने का उद्योग[,]

करने लगी। इसी समय सिपाहियों में कुछ झगड़ा हुआ, राजा को समझाने के लिये मार्कहम ने चेतराम नाम के अपने चोपदार को भेजा, मगर चेतराम ने आकर कुछ ऐसी कड़ी बातें कहीं जिससे राजा साहब के आदमी क्रुद्ध हुए मगर फिर भी शांत रहे पर चेतराम तो झगड़ा बढ़ाया चाहता था। परिणाम यह हुआ कि भीतर बाहर खूब मार काट हुई, चेतराम, कई अफ़सर तथा फ़ौजी सिपाहियों के अधिकांश लोग मारे गये और घायल हुए * राजा चेत सिंह खिड़की की राह से उतर नाव पर सवार हो रामनगर चले गये। यह झगड़ा १७ अगस्त सन् १७८१ ई० को हुआ था। बनारस शहर में भी बलवा हो गया, उसको शांत करने के लिये गवर्नर जेनरल ने बाबू औसान सिंह को नायब बनाया।

इस समय वारेन हेस्टिंग्स ने अपना बनारस में रहना उचित न समझा और रातो रात चुनार चले गये। वहां से रामनगर पर चढ़ाई करने के लिये फ़ौज भेजी, मगर राजा चेत सिंह पहिले ही रामनगर से चल चुके थे। चारो ओर चढ़ाई कर विजय गढ़ पपीता और लतीफ़ पुर का किला अधिकार में कर लिया। बाद में गवर्नर जेनरल बनारस आये। उस समय पं० बेनीराम जी ने उनकी बड़ी सहायता की थी। इसके लिये राजा महीप नारा-

---

* मरे हुए लोग चेत गंज थाने के बग़ल में गाड़े गये हैं और उनके पत्थर लगे हैं।



यण सिंह से गवर्नर जेनरल ने उन्हें पचीस हजार रुपया वार्षिक की जागीर दिलाई। बनारस में आने पर राजा बलवंत सिंह की कन्या के पुत्र—

राजा महीप नारायण सिंह

को राज्य पर बैठाया, उस समय आप की उम्र केवल १४ वर्ष की थी, इनके पिता बाबू दुर्ग विजय सिंह नायब बनाए गये, मगर कुछ गड़बड़ करने के कारण यह हटा दिये गये और रेज़िडेण्ट राज्य की देख भाल करने लगे, नये नये कई नायब बदले गये, पहिले बाबू जगरदेव सिंह फिर बाबू अजीत सिंह आदि। राजा महीप नारायण सिंह के तीन पुत्र कुंवर उदित नारायण सिंह, बाबू दीप नारायण सिंह, और बाबू प्रसिद्ध नारायण सिंह हुए। सन् १७९५ ई० में केवल ३८ वर्ष की अवस्था में राजा का परलोक वास होने पर सबसे बड़े पुत्र कुंवर उदित नारायण सिंह को कम्पनी ने बनारस का राजा बनाया।

राजा उदित नारायण सिंह

ने राज्य का शासन भार हाथ में लिया। आप के राज्य काल में सन् १७९७ ई० में अवध के नवाब आसफुद्दौला की मृत्यु हुई और वज़ीर अली गद्दी पर बैठा, किन्तु थोड़े दिन बाद इसकी बड़ी शिकायत हुई और वह गद्दी से उतारा गया। ता० २१वीं जनवरी सन् १७९८ को सआदत अली खां नवाब

बनाये, गये वज़ीर अली को बनारस में रहने की आज्ञा हुई और उनकी पेंशन डेढ़ लाख कर दी गई, इस बीच में सरकार को मालूम हुआ कि वज़ीर अली काबुल से लिखा पढ़ी कर रहा है और झगड़ा खड़ा करना चाहता है। तब उसे यहां से कलकत्ते जाने की आज्ञा मिली। इस बात से दुःखी होकर सन् १७९९ की २४ जनवरी को उसने चेरी साहब के बंगले पर आक्रमण किया और कई अंग्रेज़ों *को मार डाला तथा खूब उपद्रव मचाया, फ़ौज के आने पर वह यहां से भागा और कुछ दिन के बाद पकड़ा जाकर कलकत्ते भेज दिया गया। सन् १८३५ ई० में राजा उदित नारायण सिंह का देहान्त हुआ, उनके कोई पुत्र नहीं था इसलिये अपने भाई प्रसिद्ध नारायण सिंह के पुत्र कुंवर ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह को गोद लिया।

महाराज ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह

काशी के राजा हुए, आप बाल्यावस्था से बड़े गुणग्राही और स्वयं गुणी थे। इनके बनवाये हुए हाथी दांत के बहुत से सामान अब तक राजप्रासाद में मौजूद हैं। आप राजकार्य से अवसर पाकर अपना अधिक समय पूजा पाठादि में व्यतीत करते थे, आपने तुलसीकृत रामायण की एक टीका भी की थी। लार्ड लिटन ने पहिले दिल्ली दर्बार में इनकी बड़ी प्रशंसा की थी, आप को तेरह तोप की सलामी का सम्मान और

* यह लोग चौकाघाट पर गाड़े गये हैं।

महाराज की उपाधि मिली थी। यह दोनों सम्मान वंशानु-क्रम से चल रहे हैं, इङ्गलैण्ड में आक्सफोर्ड के पास आपने एक कुंआ बनवाया है जो कि हिन्दुस्तानी ढंग का है।

सन् १८५७ ई० की १०।मई को मेरठ में बलवा हुआ और दिल्ली कानपुर, लखनऊ, बरेली, इलाहाबाद में फैलता हुआ बनारस तक उसकी ख़बर आ पहुंची, उधर आज़मगढ़ से देशी रेजिमेंट के बाग़ी होने का समाचार मिला, उस समय बनारस में तीन देशी रेजिमेंट और एक यूरोपियन आर्टिलरी कम्पनी थी, परेट के समय देशी पल्टन से हथियार रखवा लिये गये, पल्टन बिगड़ गई। मगर दिल्ली शहर को बाग़ियों के हाथ से छीन लेने पर तथा अन्य शहर के बाग़ियों के भागने पर बनारस में भी शान्ति हो गई, इस समय बाबू देव नारायण सिंह ने बड़ी सहायता की थी * १३ जून सन् १८८९ में ७१ वर्ष की अवस्था में महाराज ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह

* इस समय राजा साहब को महाराजा बहादुर का ख़िताब मिला। बाबू देव नारायण सिंह को राजा का टाइटिल और सैदपुर में ज़ागीर मिली, बाबू सूरत सिंह को सरदार बहादुर का ख़िताब और अवध में ज़ागीर दी गई। बाबू गोकुल चंद को ख़िल्लत मिली, दारानगर के बाबू देवी सिंह को बाबू गुरुदास मित्र, बाबू हर्ष चंद, राम नारायन दास, को भी खिल्लत मिली।

के परलोक गमन करने पर ३० जून सन १८८९ ई० को इतिहास प्रसिद्ध नदेसर कोठी में एक दबार किया गया और परलोक गत महाराज के भाई श्री नर नारायण सिंह के पुत्र—

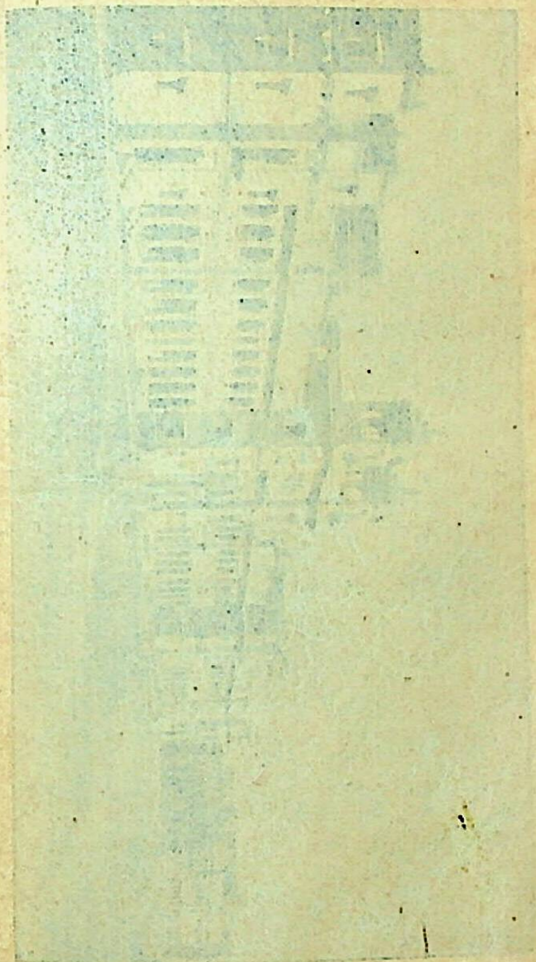
महाराज प्रभु नारायण सिंह

को राज्याधिकार मिला, स्वर्गीय महाराज ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह के कनिष्ट सहोदर श्री नर नारायण सिंह का विवाह बेतिया राज्य के महाराज नवल किशोर सिंह की कन्या से हुआ था। सन् १८५५ के २६ नवम्बर को सिंह लग्न में कुँवर प्रभुनारायण सिंह का जन्म हुआ, आप ही राज्य के उत्तराधिकारी थे, इस कारण राजप्रासाद में खूब आनन्द मनाया गया, महाराज ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह ने आपको राज्योचित शिक्षा देने में कोई बात उठा नहीं रखी। भारत के उस समय के बड़े लाट लार्ड केनिंग से लिखा पढ़ी कर महाराज ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह ने धर्म शास्त्रानुसार कुंवर प्रभु नारायण सिंह को ६ वर्ष की अवस्था में दत्तक पुत्र लिया। सन् १८७० में सूर्यपुर के रईस बाबू हर प्रसाद सिंह की कन्या से कुंवर साहब का विवाह हुआ। विवाह के स्मारक में एक घंटाघर काशी शहर के नीचीबाग़ में महाराज ने बनवाया। सन् १८८८ में कुंवर साहब का द्वितीय विवाह भी हुआ। आप की प्रथम रानी से सन् १८७४ की १७ हवीं को कुंवर आदित्य नारायण सिंह जी का जन्म हुआ। वर्तमान महाराज के



समय रामनगर राज्य की बड़ी उन्नति हुई। प्राचीन स्थानों की मरम्मत और कितनी ही नई इमारतें बनीं। स्कूल, अस्पताल, गोशाला, धर्मशाला, थाना, सड़कें आदि बनीं। सन् १८ ई० में आप के० सी० आई० ई० हुए। इसी सन् में महाराज साहब ने मथुरा की यात्रा की और वहां स्वर्ण मुद्रा का तुलादान किया। इससे आपकी बड़ी सुख्याति हुई। पहली जनवरी सन् १८९८ में आपको जी० सी० एस० आई० का दूसरा टाइटिल गवर्नमेंट ने दिया। सन् १९०२ में आपने अपनी राजधानी रामनगर में एक धर्मशाला बनवाई और प्रबन्ध भार एक कमेटी को सौंप दिया। इसी सन् में काशी की नागरी प्रचारिणी सभा भवन की आपने नींव दी और उसकी २००० रु० से सहायता की, काशी का शिवाला घाट वाला महल * जो राजा चेत सिंह के बाग़ी हो जाने पर अंग्रेज़ों के हाथ में चला गया था, उसे लाखों रुपया दे कर सन् १९१० में पुनः ले लिया और मरम्मत करा के वहां के मन्दिरों का पुनः जीर्णोद्धार कराया। मुजफ्फ़र पुर के भूमिहार ब्राह्मण कालेज की आपने पचास हजार रुपया से सहायता की, हिन्दूकालेज को आपने ज़मीन मकान और अधिक रुपये दिये, हिन्दू विश्व विद्यालय को एक मील चौड़ी और दो मील लम्बी ज़मीन और एक

* इसे अंग्रेज़ों ने दिल्ली के बादशाह के वंशधरों को दे दिया था।



[illegible] राज्य की बड़ी उन्नति हुई। [illegible]

[illegible] और [illegible] ही नई इमारतें बनी। [illegible]

[illegible] धर्मशाला, [illegible] आदि बनी। [illegible]

[illegible] हुए। इसी सन् में [illegible]

[illegible] की यात्रा की और वहाँ [illegible]

[illegible] बड़ी सुख्याति हुई। [illegible]

[illegible] में आपको [illegible] ओ० सी० एस० आई० [illegible]

[illegible] से दिया। सन् १८०२ में आपने [illegible]

[illegible] में एक धर्मशाला बनवाई और [illegible]

[illegible] दिया। इसी सन् में काशी की [illegible]

[illegible] नींव दी और उसकी [illegible]

[illegible] काशी का [illegible]

[illegible] पानी हो जाने पर अंग्रेजों के [illegible]

[illegible] सन् १८१० में [illegible]

[illegible] के [illegible] का [illegible]

[illegible] के [illegible] कालेज [illegible]

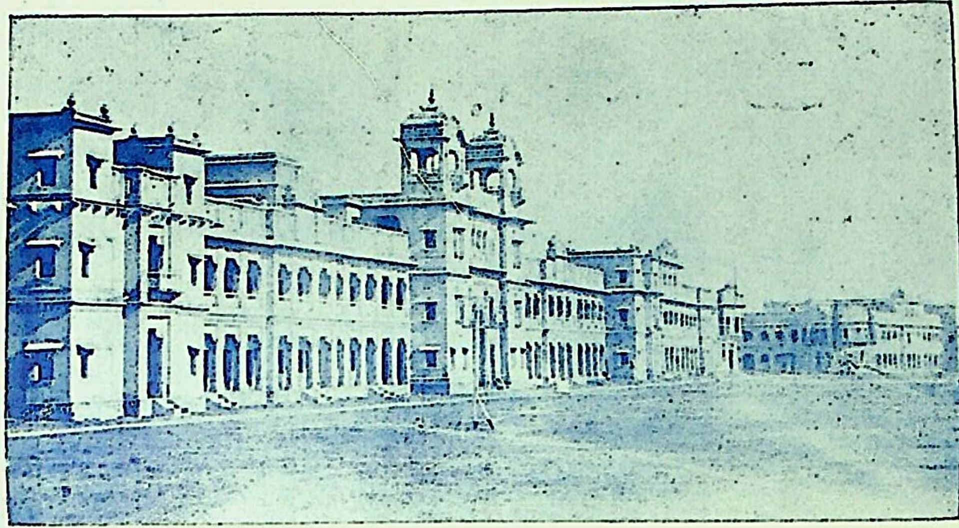
[illegible] की, हिन्दू कालेज [illegible]

[illegible] दिये, हिन्दू [illegible]

[illegible] और [illegible]

[illegible] के [illegible]

बनारस



विश्वविद्यालय, छात्रावास ।



लाख रुपया दिया, आप काशी के प्रायः बहुतेरे सार्वजनिक कामों में योग देते हैं।

आप ने १६०५ में फिर तीर्थ यात्रा की और वैद्यनाथ, जगन्नाथ जी होते आप श्री रामेश्वर पहुंचे वहां से आप द्वारिका जी जाने वाले थे कि राजधानी रामनगर में भयंकर प्लेग फैलने का आपको समाचार मिला आप ने आगे जाने का विचार छोड़ दिया, बम्बई होते आप राजधानी में आ गये और नगर के बाहर डेरे, खेमे और छोलदारियाँ खड़ी करा दीं फूस की मड़इयां बनवा दीं जिससे लोगों को बड़ा आराम पहुंचा इससे आप के प्रजा प्रेम का परिचय मिलता है। रामनगर में जलकल और बिजली लगाकर आप ने प्रजा के कष्टों को दूर किया है। रोगियों की चिकित्सा के लिये 'लवेट अस्पताल' शिक्षा के लिये छोटे लाट के नाम पर 'मेस्टन हाई स्कूल' चीफ कोर्ट, कृषकों की सहायता के लिये कर्मनाशा से नहर का प्रबंध किया गया है। रामनगर में स्टेट बंक भी खोला गया है जिसकी शाखा देहातों में ग़रीब किसानों की सहायता के लिये खोली गई है।

रामनगर के तालाब पर सुन्दर नक्काशीदार सुमेरु मन्दिर राजा चेत सिंह का बनवाया हुआ है, जिसमें दुर्गा जी की दिव्य झांकी होती है। पास में महाराज का सुन्दर उद्यान देखने योग्य है।



सन् १६०५ ई० में युक्त प्रदेश के छोटे लाट की मारफत भारत सरकार के पास आपने एक आवेदन पत्र भेजा था जिसमें लिखा था कि भारत के अन्यान्य स्वाधीन राजाओं की तरह हमें भी शासन करने की क्षमता दी जाय और हमारे अधिकार बढ़ा दिये जायें। बहुत दिनों तक विचार होने के बाद ६ नवम्बर सन् १६१० ई० को उसका फल प्रकट हुआ। भारत सरकार और स्टेट सेक्रेटरी के अनुमोदन से रामनगर और उसके आस पास की ज़मीन, भदोही और कैरामंगरौ पर शासन करने का अधिकार ले० कर्नल महाराजा सर प्रभु नारायण सिंह बहादुर जी० सी० एस० आई० को दिया गया है। इसकी सूचना भूत पूर्व बड़े लाट लार्ड मिण्टो ने काशी में राज्य भोज के समय दी थी। ता० ४ अप्रैल सन् १६११ को उस समय के छोटे लाट सर लेस्ली पोर्टर बहादुर ने काशी में दर्बार कर महाराजा साहब बहादुर को स्वतंत्र शासन की सनद दी। आप को १३ तोपों की सलामी का सम्मान भी मिला है। १ जनवरी सन् १६२१ को आपको जी० सी० आई० ई० का टाइटिल मिला।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारे वर्तमान महाराजा साहब जिस प्रकार प्रजा के दुःख सुख पर ध्यान देते हैं, वह प्रशंसनीय है। श्रीमान् से यह नम्र निवेदन है कि आप नागरी प्रचारिणी सभा के संरक्षक हैं। काशी हिन्दी का केन्द्र स्थान है, समय समय पर आप के दर्बार से हिन्दी के लेखक और



कवियों का उत्साह बढ़ाया गया है। आशा है कि आप राज्य में उर्दू के साथ साथ हिन्दी को भी स्थान देंगे जैसा कि संयुक्त प्रांत की गवर्नमेएट ने किया है।

कुंवर आदित्य नारायण सिंह पढ़े लिखे योग्य कुमार हैं। आप राज्यके कामों को भली प्रकार देखते हैं। गवर्नमेंट ने आप को लेजिएलेटिव कौंसिल का मेम्बर चुनी है। आप राज्य की फ़ौज के कमाँडर-इन चीफ़ भी हैं।

बनारस राज्य का क्षेत्रफल ८७० वर्गमील तक फैला हुआ है। इसमें सन्देह नहीं कि महाराजा बहादुर ने अपने राजत्व काल में जिस प्रकार अपने राज्य की श्री वृद्धि की है उसी प्रकार प्रजा की भलाई और उसके पुकार पर भी ध्यान दिया है। योग्य शासक का यही धर्म है। विश्व विद्यालय की आपने जो सहायता की है उस पर उसके चांसलर प्रसिद्ध विद्वान महाराज सर सय्याजी राव गायकवाड़ बहादुर जी० सी० एस० आई ने २८ जनवरी सन् १९२४ को काशी हिन्दू विश्व विद्यालय में आपको डाक्टर आफ़ लिटरेचर की सम्मानित उपाधि से भूषित किया है, यह महाराज बहादुर के विद्या-प्रेम का सजीव उपहार है। कहां तक लिखा जाय महाराज जैसे सुयोग्य नरेश से काशी वासियों को बहुत कुछ आशा है।

बृटिश अधिकार में बनारस



ईस्ट इण्डिया कम्पनीके अधिकार में आने के पहिले बनारस की अवस्था बड़ी शोचनीय थी। एक ओर से राजाओं और दूसरी तरफ़ से नवाबी आज्ञाओं और आपस के नित्य प्रति के झगड़ों ने लोगों को चूर कर दिया था दूसरे ठग चोर उचक्के और लुटेरों के कारण नाको दम हो गये थे * शहर में यात्रियों के साथ मनमाने उपद्रव होते थे। उनकी कहीं सुनवाई नहीं थी यही कारण था कि यात्रियों की संख्या बराबर घटती जाती थी, वे बहुत कम आने लगे थे। उस समय मनुष्यों के प्राण का कुछ मूल्य नहीं था वे भेंड़ बकरी की तरह काटे जाते थे। प्रति दिन दो चार खून का हो जाना साधारण सी बात थी, बाहर से व्यापारी आते घबड़ाते थे, शहर में कोई जेवर पहर कर

---

* बनारस के कमिश्नर मि० बर्न के पास प्राचीन छपी Views and Illustrations of Benares. नाम की एक पुस्तक बनारस के सम्बन्ध की थी उससे पता चला कि वर्तमान विश्वेश्वर गंज, चौखम्भा, बुलानाला और ब्रह्मनाल आदि स्थान उस समय भयंकर नाले थे। उस समय यह स्थान इतने निर्जन और झाड़ झंखाड़ों से भरे रहते थे कि दिन के समय भी लोग लुट जाया करते थे।

जल्दी बाहर नहीं निकलता था। बीस पच्चीस सशस्त्र आदमी के बिना साथ लिये कोई रईस उमरा बाहर नहीं होते थे। बात की बात में झगड़े खड़े हो जाते थे और तलवार, लाठी, लोहांगी, गड़ासा और बिछुआ चलते थे। प्रजा की पुकार व्यर्थ जाती थी उनकी सुनने वाला कोई न था। ठीक समय पर कर न देने से घर लूट लिया जाता था। राजा और प्रजा में किसी प्रकार का सद्व्यवहार नहीं था। कर्मचारियों की ख़ूब बन आई थी उनके मनमाने अत्याचारों और नए टैक्सों से लोग दुखी हो गये थे।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कानों तक इसकी ख़बर पहुंची उसने प्रबंध भार अपने हाथ में लिया और व्यर्थ के कर उठा दिये, ग़रीबों की जो ज़मीनें छिन गई थीं उसे उनके अधिकारियों को दिलाई। ख़ूंखार जानवरों से बचाने के लिये जंगल साफ़ कराये, पेड़ कटवा दिये गये, भयंकर नाले पाट दिये गये, नये कानून बनाये गये और कचहरी में मुकद्दमे होने लगे जिससे यह लाभ पहुंचा कि यात्री और व्यापारी अधिक आने लगे। यात्रियों के आराम के लिये सड़कें बनीं, उन पर पेड़ लगे। नए कुंए खुदवाये गये, पिआउ बैठाये गये शहर में पहरे और रोशनी का प्रबंध हुआ, ग़रीबों के लिये दवाख़ाना खोला गया। शिक्षा के लिये मदरसे और पाठशालाएँ हुईं। नाव का पुल तैयार किया गया जो बरसात में हटा दिया जाता था। सन्ध्या समय घोड़ी और नालकियों पर चढ़ कर रईस और उमरा

घूमने निकलने लगे, हर प्रकार की शांति हो गई। क्रम से स्कूल कालेज, अस्पताल, सड़कें नई इमारतें बनने लगीं डाक, तार और रेल का प्रबंध हुआ, डफरिन बृज तैयार हुआ, बनारस हुआ, व्यापारी तरह तरह की चीज़ें लाने लगे और चलते समय यहां से बनारस की बनी चीज़ें ले जाने लगे। परस्पर ऐसा करने से व्यापार बढ़ने लगा कारीगरों का उत्साह बढ़ा वह नये नए डिज़ाइन की चीज़ें तैयार करने लगे। बनारसी माल की भी उन्नति हुई मदनपुरा, लल्लापुरा. और अलईपुरा, से साड़ी दुपट्टे, साफ़े, पोत के थान, किमख़ाब, अमरु, चोलखण्ड, वाफ़्ता वग़ैरह तैयार होकर प्रधान कुञ्जगली और कोठियों में आने लगे और यहां से व्यापारियों और डाक पार्सल से बाहर जाने लगे। इस प्रकार यह व्यापार खूब चला। आरम्भ से अब तक भी यह व्यापार खत्रियों के ही हाथ में है। यद्यपि कारीगरों के ५२ पुरा हैं मगर प्रसिद्ध कारीगर ऊपर के पुरा में ही रहते हैं।

भारत के शासन की बागडोर भारतेश्वरी महाराणी विक्टोरिया के हाथ में आई उन्होंने घोषणा निकाल कर शान्तिमय राज्य किया और प्रजा के जान माल की रक्षा का सुप्रबंध हुआ। नई सड़कें, इमारतें, बाजार, हाट, गंज, स्कूल और कालेज बने, म्युनिसिपैल्टी के बनने से शहर की सफाई, रोशनी और जलकल का प्रबंध हुआ। नगवा पर श्रद्धेय पण्डित मदनमोहन मालवीय जी के उद्योग से हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना हुई, कलकत्ते के धनी मारवाड़ी ने संस्कृत पढ़ाने के लिये ठीक



महारानी विक्टोरिया।

ओर) संस्कृत कालेज की लाखों रुपये की बिल्डिंग अलग कर ज्ञानमन्डल गली में खोली। प्रसिद्ध देश भक्त बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने विद्यापीठ के लिये अच्छा दान दिया और कई हजार रुपया व्यय कर 'भारत का मान चित्र' संगमरमर पत्थर का बाबू दुर्गा प्रसाद बी० ए० की देख रेख में बनवा रहे हैं इसमें सन्देह नहीं कि बन कर तैयार हो जाने पर यह एक अद्भुत चीज़ होगी।

महारानी विक्टोरिया की घोषणा।

अनेक कारणों से पार्लियामेंट की दोनों सभाओं की सम्मति से भारतवर्ष का जो प्रबंध अब तक मेरी ओर से आनरेबिल ईस्ट इण्डिया कम्पनी करती थी उसे अब मैंने अपने हाथ में लेना निश्चय किया है। इस लिये अपनी समस्त प्रजा को मैं आज्ञा देती हूं कि वह सदा इस शासन की शुभचिन्तक बनी रहे और जिस प्रतिनिधि को मैं वहाँ का प्रबंध करने के लिये यहाँ से भेजूं उसका आदर करे। इस समय मैं पहिला वायसराय चार्लस जान वाईकौंट कैनिंग को अपनी ओर से प्रतिनिधि नियत करती हूं। यह मेरी ओर से भारतवर्ष का शासन करेंगे और जो आज्ञाएँ या सूचनाएं यहाँ से जायेंगी उनके अनुसार काम करेंगे।

उस समय जो ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकार में कर्मचारी काम करते हैं उन्हें मैं पुनः उसी [illegible]



महारानी विक्टोरिया।

मणि संस्कृत कालेज की लाखों रुपये की बिलडिंग बनवा कर सकरकन्द गली में खोली। प्रसिद्ध देश भक्त बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने विद्यापीठ के लिये अच्छा दान दिया और कई हजार रुपया व्यय कर 'भारत का मान चित्र' संगमरमर पत्थर का बाबू दुर्गा प्रसाद बी० ए० की देख रेख में बनवा रहे हैं इसमें सन्देह नहीं कि बन कर तैयार हो जाने पर यह एक अद्भुत चीज़ होगी।

महाराणी विक्टोरिया की घोषणा।

अनेक कारणों से पार्लियामेंट की दोनों सभाओं की सम्मति से भारतवर्ष का जो प्रबंध अब तक मेरी ओर से प्रतिनिधि की तरह ईस्ट इण्डिया कम्पनी करती थी उसे अब मैंने अपने हाथ में लेना निश्चय किया है। इस लिये अपनी समस्त प्रजा को मैं आज्ञा देती हूं कि वह सदा इस शासन की शुभचिन्तक बनी रहे और जिस प्रतिनिधि को मैं वहां का प्रबंध करने के लिये यहां से भेजूं उसका आदर करे। इस समय मैं पहिला वायसराय चार्लस जान वाईकौंट केनिंग को अपनी ओर से प्रतिनिधि नियत करती हूं। यह मेरी ओर से भारतवर्ष का प्रबंध करेंगे और जो आज्ञाएँ या सूचनाएँ यहां से जायेंगी उसके अनुसार काम करेंगे।

इस समय जो ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकार में कर्मचारी काम करते हैं उन्हें मैं पुनः उसी पद पर नियत करती हूं

किन्तु भविष्य में उनकी नियुक्ति मेरी कृपा पर रहेगी और अब से जो कानून क़ायदे बनेंगे उसी के अनुसार उन्हें चलना होगा।

देशी राजाओं को भी प्रकट किया जाता है कि उनके साथ जिस प्रकार की संधियां ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने की है उसे मैं स्वीकार करती हूं और आगे से उसी के अनुसार बर्ताव किया जायगा, मुझे आशा है कि आप लोग भी संधिपत्र के अनुसार चलेंगे।

मेरे अधिकार में जितने देश इस समय हैं उनका विस्तार मैं बढ़ाना नहीं चाहती और न किसी के देश को लेने या देने के कार्य को पसन्द करती हूं। देशी राजाओं के स्वत्व मान सम्मान को मैं अपनी प्रतिष्ठा और सम्मान के बराबर समझूंगी। मैं यह भी चाहती हूं कि प्रजा शान्ति और सुप्रबंध में रहे। जो काम अपनी प्रजा के हित के लिये मुझे करने चाहिये उन्हें परमेश्वर के आशिर्वाद से पालन करती रहूंगी।

ईसाई धर्म पर विश्वास रख मैं कहती हूं कि मेरे धर्म को मेरी किसी प्रजा को स्वीकार कराने या दबाव डालने का मैं निषेद करती हूं। मैं रानी के पद से यह प्रकट करती हूं कि किसी के धर्म्म सम्बन्धी मत में पक्षपात न होगा और न किसी को कष्ट दिया जायगा। मैं अपने आधीन कर्म्मचारियों को आज्ञा देती हूं कि वह किसी भी प्रजा के धर्म सम्बन्धी मत में हस्तक्षेप न करें।

मैं यह भी आज्ञा देती हूं कि जहां लौं हो सके प्रजा को चाहे वह जिस जाति वा जिस मत की हो पक्षपात छोड़ योग्यता और बुद्धिमता के अनुसार उन्हें नौकरी दी जाये ।

भारतवर्ष के लोग अपने पूर्वजों से प्राप्त ज़मींदारी पर बड़ा प्रेम रखते हैं उसे मैं समझती हूं सरकारी नियमानुसार वह अपने स्वत्व की रक्षा करें। मैं यह भी चाहती हूं कि नए कानून आदि बनने के समय पुराने नियम और अधिकार पर भी ध्यान रखा जाय ।

मुझे इस बात का बड़ा दुःख है कि कुछ लोगों ने झूठी बातें उड़ा कर आपस में झगड़ा खड़ा कर दिया है। इस उपद्रव को दबाने में हमारी शक्ति ने काम किया है। मैं चाहती हूं कि जो लोग बहकावे में आ गये और अब ठीक राह पर चलना चाहते हैं उन सब के अपराध क्षमा कर उनके साथ दया दिखाई जाय ।

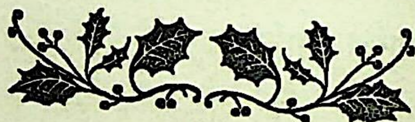
राज्य में शान्ति स्थापित करने के लिये मेरे भेजे वायसराय ने उपद्रव में कुछ सम्मलित होने वालों को क्षमा प्रदान किया है और बाकी को दंड दिया है, मैं इससे सहमत हूं ।

अंग्रेज़ प्रजा के मारे जाने में या उसका साथ देने के जो अपराधी हैं वा होंगे उनके अतिरिक्त बाकी के सब लोगों के प्रति मेरी दया होगी, बध करने वालों पर दया करना न्याय के विरुद्ध है।

जिन लोगों ने खूनियों और मुखियों को अपने यहां आश्र
दिया है उनके प्राण की रक्षा न की जायगी, किन्तु झूठी खबं
फैलाने वालों के अपराध पर कुछ रिआयत की जायगी। बाक़ी
के लोग अपने अपने घर लौट कर शान्ति से रहें उनका अप-
राध क्षमा किया जाता है। यह नियम उन्हीं के साथ काम मे
लाया जायगा जो जनवरी सन् १८५८ ई० से पहले अपने स्थान
पर आ जावेंगे।

ईश्वर के आशिर्वाद से देश में शान्ति हो। प्रजा की भलाई
उन्नति और उसके सन्तोष से ही मुझे आनन्द है। ईश्वर मुझे
और मेरे अधिकारियों को इस काम में सफलता दे।

महाराणी विक्टोरिया की घोषणा १ नवम्बर सन् १८५८
में प्रयाग में केनिंग साहब ने पढ़ा।



बनारस के घाट।



असी संगम घाट-मैदान में यह कच्चा घाट है। घाट के ऊपर जगन्नाथ जी का मन्दिर है। इसी घाट से उतर कर दुर्गा जी के दर्शन को लोग जाते हैं। ऊपर गुदर जी, दिगम्बरी कृष्णाचारी आदि के कई अखाड़े हैं। * रला मिश्र घाट-यह घाट बहुत पक्का बना हुआ है इसे रला मिश्र नाम के एक सारस्वत ब्राह्मण ने बनवाया था। इनके पूर्वज महाराजा रणजीत सिंह के यहां रहते थे। आज कल यह रीवां नरेश के अधिकार में है।

बाजीराव घाट-यह घाट तुलसीघाट से लगा हुआ बे मरम्मत पड़ा है। पूना के अन्तिम पेशवा बाजीराव ने इसे बनवाया था।

तुलसीघाट-यह पुराने ढंग का बना हुआ है। घाट के ऊपर तुलसीदास जी का मन्दिर है इसी स्थान पर वह

---

* यहीं से पंचकोशी का रास्ता गया है. अस्सीघाट काशी के पांच पवित्र घाटों में से एक है पांच घाटों के नाम ये हैं १. अस्सी २ दशाश्वमेध ३ मणिकर्णिका ४ पंचगंगा और ५ वरुणा संगम।

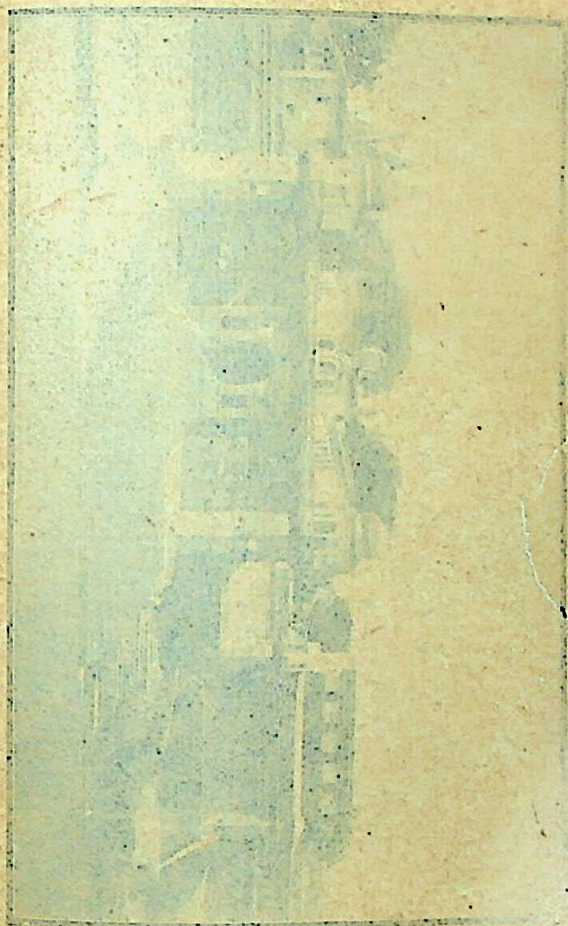


रहते थे और सम्बत १६८० में यहीं उनका शरीरान्त हुआ था। इन्हीं गो० तुलसीदास जी ने सम्बत १६३१ में रामायण लिखी थी। तुलसी दास जी की खड़ाऊं यहां पर रखी हुई है जिसे वह स्वयं पहिनते थे। बहुत दिन होने से खड़ाऊं की लकड़ी जीर्ण हो गई है। कुछ और ऊपर जाने पर लोलार्क कुण्ड मिलता है, जिसे महाराणी अहिल्या बाई ने बनवाया था। लोलार्क कुण्ड के उत्तर राम मन्दिर है।

जानकी घाट-इस घाट को सुरसर की रानी ने बनवाया है, घाट के ऊपर रानी का मकान और मन्दिर है। इसी घाट के पास वाटर पम्पिग इंजिन का कारख़ाना है यहीं से गंगा जी का पानी भेलूपुरा वाटर वर्क्स में जाता है और साफ़ होकर शहर भर में आता है।

वत्सराज घाट-इसको अब जैन लोगों ने ख़रीद लिया है। घाट के ऊपर कई सुनहरे कलशदार जैन मन्दिर हैं।

शिवाला घाट-इस घाट को राजा बलवंत सिंह के ख़ज़ांची बैजनाथ मिश्र ने बनवाया था। यह घाट पक्का बना है जगह जगह पर अठपहल पाये दिये हैं। घाट के ऊपर बारहदरी और मकान तथा बाग़ हैं जिसे बनारस के राजा चेत सिंह अपने काम में लाते थे। यहीं से राजा चेत सिंह के भाग जाने पर यह जगह ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथ में आ गई और इसमें सरकार से पेंशन पाने वाले मुग़ल बादशाह के खान्दान



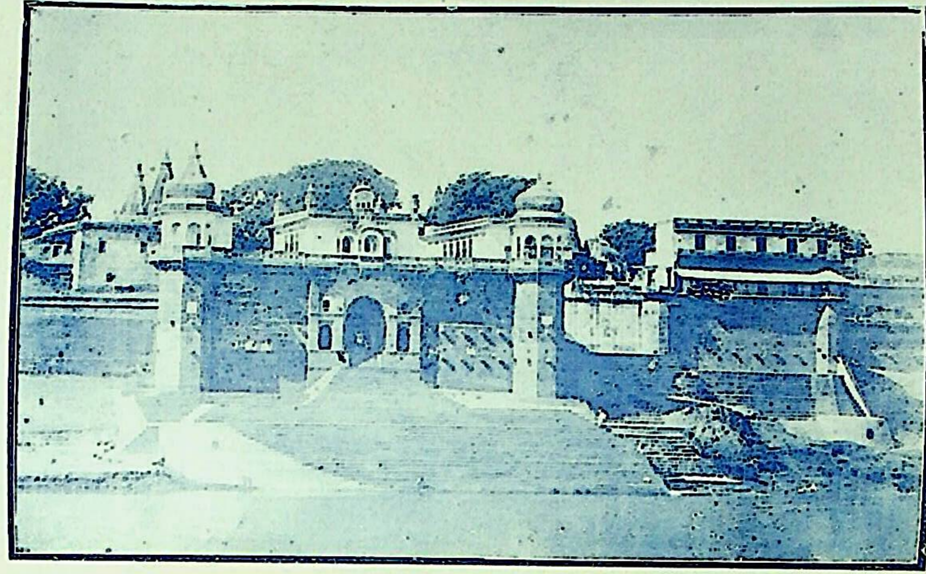
[illegible] थे और सम्वत १६८० में यहीं उनका [illegible]
था। यहीं गो० तुलसीदास जी ने सम्वत १६३१ में [illegible]
लिखी थी। तुलसी दास जी की खड़ाऊं यहाँ पर [illegible]
लिये कर [illegible] [illegible]। बहुत दिन होने से [illegible]
[illegible] हो गई है। कुछ और ऊपर आने पर [illegible]
[illegible] दिखता है, जिसे महारानी अहिल्या बाई ने [illegible]
था। [illegible] के ऊपर राम मन्दिर है।

[illegible] घाट-इस घाट को [illegible] की रानी ने [illegible]
है, घाट के ऊपर रानी का मकान और मन्दिर है। [illegible]
के पास [illegible] इंजिन का कारखाना है [illegible]
[illegible] पाइप [illegible] में जाता है [illegible]
[illegible] है।

[illegible] घाट-इसको अब जैन लोगों ने [illegible]
घाट के ऊपर दो सुन्दर [illegible] जैन मन्दिर है।

शिवाला घाट-इस घाट को राजा बलवन्त सिंह [illegible]
[illegible] सिंह के [illegible] था। यह घाट [illegible]
[illegible] पर [illegible] पाये दिये हैं। घाट के [illegible]
और मकान [illegible] हैं जिसे बनारस के [illegible]
[illegible] थे। यहीं से राजा चेत सिंह [illegible]
[illegible] इंडिया कम्पनी के हाथ [illegible]
[illegible] के [illegible] वाले [illegible]

बनारस



शिवाला घाट।

के लोग रहते थे। इसके बाद हमारे वर्तमान काशी नरेश ने इसे ख़रीद लिया है और मरम्मत करा के अपने अधिकार में कर लिया है।

दंडी घाट–इस घाट पर कई मठ हैं जिनमें दंडी साधु रहते हैं।

हनुमान घाट–इस घाट की सीढ़ियां मज़बूत हैं। घाट के ऊपर बड़े हनुमान जी का मन्दिर है। पास ही में महा प्रभु जी की बैठक भी है।

हरिश्चन्द्र घाट–काशी का यही प्राचीन श्मशान घाट है, यहीं पर सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र आकर चौधरी का काम करते थे और रानी शैव्या प्राण तुल्य रोहिताश्व की लाश को लिये हुई आई थीं। यहां पर कई सतियों के पत्थर के चिन्ह हैं। अब इस घाट के ऊपर की जगह लेकर सड़क से घाट तक म्युनिसिपैल्टी ने एक नई सड़क निकाली है और उसका नाम "राजा हरिश्चन्द्र रोड" रखा है।

लल्ली घाट–यह घाट लल्लीदास का बनवाया हुआ है। ऊपर निरवानी और निरंजनी अखाड़ा है।

केदार घाट–यह घाट भी पक्का बना हुआ है। घाट के ऊपर केदारेश्वर का मन्दिर है, मन्दिर के दरवाज़े पर दाहिने बायें छः छः फुट लम्बे द्वारपाल खड़े हैं। आगे चौकी घाट और सोमेश्वर घाट हैं। पास ही में राजा ताहिरपुर का मकान है।



मानसरोवर घाट–यह घाट आमेर के राजा मानसिंह का बनवाया हुआ है। इसके बाद नारद घाट है।

राजाघाट–इस घाट को पेशवा के नायब राजा विनायक राव ने बनवाया था। आगे चलकर पांड़े घाट है।

चौसट्ठी घाट–बंगाल के राजा दिगपति ने इस घाट को बनवाया था। घाट के ऊपर चतुःषष्टी देवी का मन्दिर है। चैत मास के प्रथम दिन यहां अच्छी भीड़ होती है, लोग दर्शन के लिये आते हैं।

राणाघाट—यह घाट उदयपुर के राणा का बनवाया हुआ है।

मुंशीघाट—यह घाट देखने योग्य और पत्थर का मज़बूत बना है। इसको नागपुर के दीवान मुंशी श्रीधर नारायण दास ने बनवाया था। ऊपर के मकांन में अच्छी कारीगरी ख़र्च की गई है। आजकल इस घाट को महाराज दरभंगा ने ख़रीद लिया है, और मरम्मत भी करा दी है।

अहिल्याबाई घाट–यह घाट इन्दौर की महारारणी अहिल्याबाई ने बनवाया था। आजकल सन्ध्या समय इस घाट पर हरि कीर्तन और कभी कभी व्याख्यान होते हैं। इसी घाट के एक कोने पर शीतलादेवी का मन्दिर है जहां चैत मास में पूजन की धूम रहती है। ऊपर प्रसिद्ध कविराज श्री उमा चरण जी का मकान है।

दशाश्वमेध घाट–यह घाट शहर के मध्य में और खुला होने से अच्छा मालूम होता है। इस घाट पर माघ महीने में स्नान दान करने का बड़ा फल लिखा है। यों तो प्रायः सभी घाटों पर नाव रहती हैं मगर इस घाट पर नाव बहुतायत से हैं। इस घाट पर तिजारती चीज़ें, असबाब, लकड़ी, पत्थर, कंकड़, घास वग़ैरह उतरते हैं। बाहर से आने वाले या गाड़ी घोड़े अथवा मोटर से उतर कर गंगा में नाव पर चढ़ कर घूमने और घाटों को देखने के लिये ज़ियादह कर लोग इसी घाट से किश्ती पर सवार होते हैं। अंग्रेज़ या जेण्टिलमेनों के लिये बजरों पर मोंढ़े लगे रहते हैं। घाट के उत्तर पोटिया राज्य का (जो बंगाल में है) बनवाया हुआ ऊंचा शिव मन्दिर है अब रानी साहिबा ने घाट को भी फिर से बनवा दिया है।

मान मन्दिर घाट–आमेर के राजा मानसिंह ने इस घाट को बनवाया था, ऊपर का मकान भी उन्हीं का बनवाया हुआ है, जिसमें कई कमरे और कोठरियां हैं। गंगा तट वाला कमरा विशेष उत्तम है। इसी मकान के ऊपर राजा मानसिंह के वंशज सवाई जयसिंह के बनवाए हुए आकाश के गृह और नक्षत्रों के वेधने के लिये यंत्र बने हुए हैं। सवाई जयसिंह ज्योतिष विद्या में बड़े प्रसिद्ध थे केवल आपने बनारस ही में नहीं बल्कि दिल्ली, मथुरा, उज्जैन और जयपुर में भी 'आवजरवेटरी' बनवाया था।

मीरघाट–यह घाट कच्चा और दो जगह बीच में पक्का

पत्थर का बना हुआ है। पुस्ते के ऊपर काशीराज के भूतपूर्व दीवान मुंशी दया शंकर का बनवाया हुआ सुन्दर मकान है जिसके आगे के हिस्से में फूल पत्ती और कुछ पेड़ हैं। इस समय पुस्ता खराब हालत में खड़ा प्राचीन कारीगरी और मसाले की मज़बूती दिखला रहा है। * इन्हीं मीर रुस्तम अली के यहां श्री मनसाराम कार्य्यकर्ता थे।

ललिताघाट--एक साधारण घाट है। ऊपर की इमारत गो० सिद्धगिर † की है जो इस समय उनके शिष्य के हाथ से विक

* मीर रुस्तम अली ने इस स्थान पर एक बहुत बड़ा किला बनवाया था जिसे तोड़ कर राजा बलवन्त सिंह ने उसी सामान से रामनगर का किला बनवाया—

† गो० सिद्धगिर जी एक सिद्ध पुरुष हो गये हैं। उन्हीं के बगल में गो० उमरावगिर जी भी पहुंचे हुए पुरुष थे। उमराव गिर जी जब अपना पुस्ता बनवाने लगे तो सिद्ध गिर जी ने उन्हें अपने पुस्ते के बराबर में बनवाने को कहा, मगर उन्होंने हठ किया और कुछ आगे बढ़कर बनवाया, परिणाम यह हुआ कि सिद्धगिर जी ने श्राप दिया कि जा तेरे स्थान पर नीच लोग बास करेंगे—उमराव गिर जी ने श्राप दिया कि तेरी गद्दी विध्वंश होगी, बातें दोनों सिद्ध पुरुषों की यथार्थ घटीं उमराव गिर की ज़मीन पर छोटी जाति के लोग बास करते हैं और सिद्ध गिर की गद्दी यहां शून्य हुई, इस प्रकार आपस के द्वेष के कारण दो महात्माओं के स्थान नष्ट हुए।

गई है। इन्हीं इमारतों में से एक में राजराजेश्वरी जी की दर्शनीय मूर्ति है। पास ही में नैपाली शिव मन्दिर है इसमें लकड़ी पर तरह तरह के काम बने हुए हैं। बाएँ तरफ़ उमराव गिर का पुस्ता शोचनीय अवस्था में खड़ा है।

श्मशान घाट—मणिकर्णिका के जनाने घाट से सटा हुआ श्मशान घाट है, इस घाट पर मृतक मनुष्य जलाये जाते हैं। बरसात के समय जब गंगा जी का जलखूब बढ़ता है, उस समय के लिये एक नई जगह ऊँचे पर मुर्दे जलाने के लिये चन्दे से बनवाई गई है। एक घटना का उल्लेख करने से यह पता चलता है कि मणिकर्णिका वाले इस श्मशान को बने केवल १६४ वर्ष हुए हैं। बात यों है कि अवध के नवाब सफदर जंग के तोशाख़ाने के रक्षक लाला कश्मीरी मल खत्री के मां की मृत्यु हुई [काशी में उस समय केदार घाट के पास वाला ही श्मशान था] रथी लेकर लोग वहां पहुंचे मगर वहां के डोम चौधरी ने कर स्वरूप बहुत बड़ी रकम मांगी और तंग किया। लाला साहब चाहते तो इस रकम को दे देते, मगर उस चौधरी की बड़ी शिकायत थी लोगों को वह बहुत तंग किया करता था इस लिये रथी को वहां से उठवा कर मणिकर्णिका पर ले आये और जमींदार तथा गंगापुत्र को बहुत अधिक रुपया देकर यह ज़मीन उनसे ली और नए श्मशान को कायम कर माता का अग्नि संस्कार किया। बाद में अपनी जाति के लिये एक मज़बूत

मढ़ी बनवा दी उसी दिन से सारस्वत और खत्री जाति के
इस मढ़ी पर जलाये जाते हैं और इस जाति से कर का
-)। लिया जाता है।

इसी स्थान पर प्राचीन काल की सतियों के स्मारक
थे जो बरसाती स्थान बनने पर इस स्थान से अलग कर
गये हैं। जनाने घाट के ठीक सामने फर्श पर मिट्टी के नीचे
पत्थर का पक्का कुण्ड है।

मणिकर्णिका घाट—काशी के अन्य घाटों से कहीं अधि
भीड़ इस घाट पर रहती है। बाहर से आने वाले यात्री प्रा
इसी घाट पर स्नान करने आते हैं। घाट के ऊपर बहु
हज्जाम रहते हैं और पिंडदान की आवश्यक चीज़ें भी
मिलती हैं। इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई ने इस घाट
बनवाया था देखने से जान पड़ता है कि जनाने घाट का
अभी पूरा भी नहीं हुआ था कि पुण्यशीला अहिल्याबाई
संसार से चल बसीं और सब काम अधूरा रह गया, इन्दौ
राज्य को चाहिये कि इस घाट को जो अब खराब हो रहा
ठीक करा दे। घाट के सामने कुछ सीढ़ी चढ़ कर एक दाला
है जिसमें लोग मृतक का क्रिया कर्म और पिंडदान आदि
करते हैं। कुछ आगे चल कर घाट के ऊपर विष्णु के मार
पत्थर के चरण चिन्ह हैं जिसके पास राजा महाराजाओं के
मृत शरीर मैजिस्ट्रेट की आज्ञा से जलाये जाते हैं। पास ही

में चारो तरफ़ लोहे के मज़बूत जंगलों से घिरा मणिकर्णिका कुण्ड है। काशी खण्ड में इसे चक्रपुष्करिणी कहते हैं। कुण्ड ऊपर से ६० फुट लम्बा चौड़ा और नीचे लगभग २० फुट के है। कुण्ड की सीढ़ी पर दो तीन सोते हैं जिनसे बराबर पानी आया करता है। जिस समय कार्तिक शुक्ल वैकुण्ठ चौदस को कुण्ड साफ़ किया जाता है उस समय यह दृश्य देखने योग्य होता है। कुण्ड की तह में एक भैरव कुण्ड है। यहां बराबर पूजन आरती होती है। ऊपर की मढ़ी पर काशी के तीर्थ पण्डा या उनके आदमी रहते हैं और यात्रियों के शंका करने पर प्राचीन बही निकाल कर उनके पूर्वजों के हस्ताक्षर आदि दिखलाते हैं जिनसे यात्री संतुष्ट हो जाते हैं और उन्हें अपना तीर्थ पुरोहित मानते हैं। कुण्ड का प्रबंध भार पं० कवज़नन्द चौबे के हाथ में था बाद में पं० महाबीर प्रसाद मिश्र के हाथ में आया, आपने सम्बत् १९७१ से ७३ तक प्रबंध भली प्रकार से किया, अक्षय तृतीया वाला वार्षिक उत्सव बड़े समारोह से होने लगा शृंगार पूजन के अतिरिक्त वेद पाठ भी होने लगे। इन उत्सवों के आमदनी का प्रबंध ४५ वर्ष पूर्व से पं० ताड़केश्वर नाथ बालकेश्वर नाथ ने श्राद्ध करने वाले यात्रियों से केवल एक पैसा लेकर किया था। पं० महाबीर प्रसाद के समय में जो रिपोर्ट प्रकाशित हुई हैं उससे पता चलता है कि ४००) से ऊपर वार्षिक आय होती है। घाट के ऊपर महाराज अलवर



और अमेठी के राजा के सुन्दर देखने योग्य मन्दिर हैं। ग्रहण के समय इस घाट पर बहुत भीड़ होती है।

सेंधिया घाट—यह घाट टूटा पड़ा है। पत्थर पर नकाशी का सुन्दर काम देखने योग्य है। नींव ठीक न होने से घाट पीछे की तरफ़ झुक गया है। सन् १८३० ई० में ग्वालियर की महाराणी बैजाबाई ने इस घाट को बनवाना आरम्भ किया था, अब वर्तमान महाराज ग्वालियर का ध्यान इस ओर होना चाहिये। यहीं दत्तात्रेयका मन्दिर है।

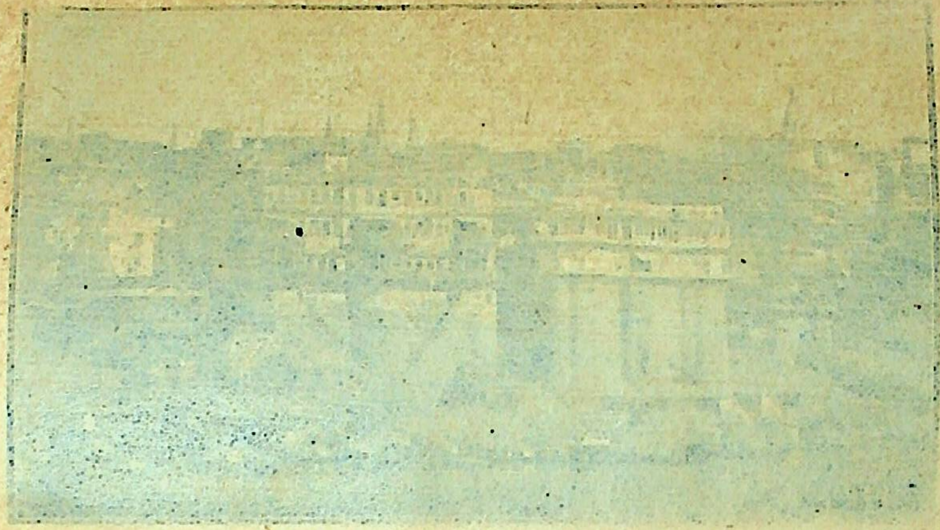
संकठा घाट—यह पत्थर का पक्का बना हुआ है। घाट के ऊपर सीढ़ी चढ़ कर जाने से गहना बाई का बनवाया हुआ श्री संकठा देवी का सुन्दर मन्दिर है। नवरात्र और प्रत्येक शुक्रवार को यहां दर्शन के लिये अधिक भीड़ होती है। पास ही के एक मकान में श्री विन्ध्यवासिनी देवी का भी मन्दिर है।

गंगामहल घाट—यह घाट पक्का और बहुत अच्छा बना है।

भोंसला घाट—नागपुर के भोंसला राजा ने १७९५ में इस घाट को बनवाया था जो बहुत मज़बूत और देखने योग्य बना है। ऊपर श्री लक्ष्मीनारायणजी का सुन्दर मन्दिर है।

अग्नीश्वर घाट—पूना के अन्तिम बाजीराव पेशवा ने इसे बनवाया था।

बनारस



और पत्थरों के [illegible] के सुन्दर देखने योग्य मन्दिर हैं। [illegible] समय इस घाट पर बहुत भीड़ होती है।

[illegible] घाट–यह घाट टूटा पड़ा है। पत्थर पर [illegible] का सुन्दर [illegible] देखने योग्य है। नींव ठीक न होने से सीढ़ी भी [illegible] गया है। सन् १८३० ई० में [illegible] ने इस घाट को बनवाना आरम्भ [illegible] ग्वालियर का [illegible] हुए [illegible] मन्दिर है।

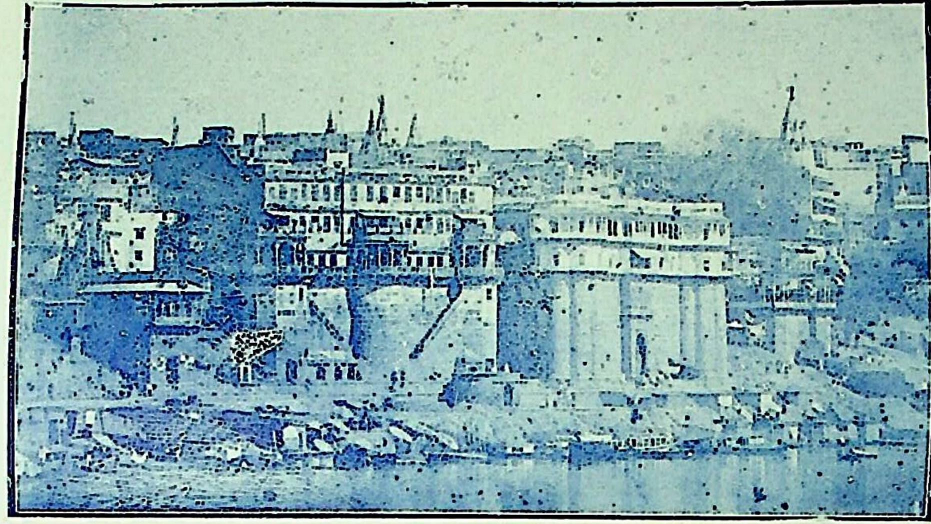
[illegible] घाट–यह पत्थर का पक्का बना हुआ है [illegible] बाई का बनवाया [illegible] का सुन्दर मन्दिर है। नवरात्र और [illegible] दिनों में अधिक भीड़ होती है। पास [illegible] विन्ध्यवासिनी देवी का भी मन्दिर है।

[illegible] घाट–यह घाट पक्का और बहुत [illegible]

[illegible] घाट–नागपुर के भोंसला राजा ने [illegible] घाट को बनवाया था जो बहुत मज़बूत और देखने योग्य है। ऊपर श्री लक्ष्मीनारायणजी का सुन्दर मन्दिर है।

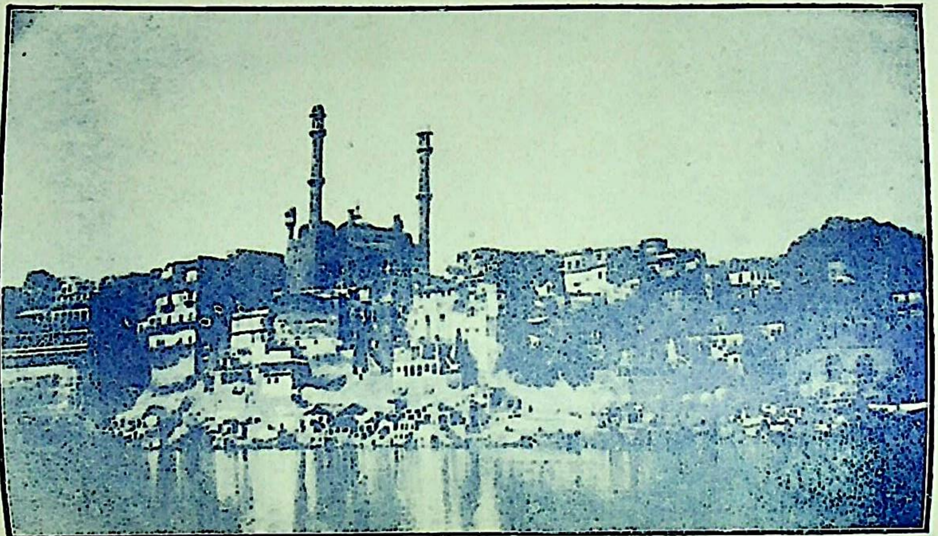
[illegible] घाट–पूना के अन्तिम बाजीराव पेशवा [illegible] बनवाया था।

बनारस



गंगामहल घाट ।

बनारस—



पंचगंगा घाट।

रामघाट—दो सौ वर्ष से पहिले इस घाट को महाराज जयपुर ने बनवाया था चैत मास की नौवमी को यहाँ स्नान की भीड़ होती है। घाट के ऊपर राम जानकी विराजमान हैं।

लक्ष्मण बाला घाट—यह घाट भी पक्का पत्थर का है। घाट के ऊपर बाजीराव पेशवा का बनवाया हुआ खिड़कियों वाला एक मकान है जो आजकल महाराज सेंधिया के अधिकार में है। घाट के सिरे पर सेंधिया राज्य का बनवाया हुआ लक्ष्मण बाला जी का सुन्दर मन्दिर है। पास ही में ग्वालियर राज्य के [illegible] बाला जीवन उद्धार का दर्शनीय मन्दिर है, मन्दिर के सामने भाग और खम्भों में जड़ाऊ काम किया हुआ है जिससे इसे जड़ाऊ मन्दिर भी कहते हैं। कार्तिक मास में यहां दर्शन के लिये अधिक लोग आते हैं। मन्दिर के आगे गान बाद्य भी होते हैं।

पंचगंगा घाट—आमेर के राजा मानसिंह ने इसे बनवाया था, कार्तिक मास भर यहां स्नान की भीड़ रहती है, इस घाट पर पांच नदियां गंगा, जमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा आ मिली हैं; घाट के ऊपर औरंगजेब की बनवाई हुई एक बड़ी मसजिद है। पास ही में बेनीमाधव और [illegible] के मन्दिर हैं।

दुर्गा [illegible] में [illegible] का [illegible] मन्दिर है

बनारस





रामघाट—दो सौ वर्ष से पहिले इस घाट को महाराज जयपुर ने बनवाया था चैत मास की नौवमी को यहां स्नान की भीड़ होती है। घाट के ऊपर राम जानकी विराजमान हैं।

लक्ष्मण बाला घाट—यह घाट भी पक्का पत्थर का है। घाट के ऊपर बाजीराव पेशवा का बनवाया हुआ खिड़कियों वाला एक मकान है जो आजकल महाराज सेंधिया के अधिकार में है। घाट के सिरे पर सेंधिया राज्य का बनवाया हुआ लक्ष्मण बाला जी का सुन्दर मन्दिर है। पास ही में ग्वालियर राज्य के दीवान बाला जीपन जटार का दर्शनीय मन्दिर है, मन्दिर के अगले भाग और खम्भों में जड़ाऊ काम किया हुआ है जिससे इसे जड़ाऊ मन्दिर भी कहते हैं। कार्तिक मास में यहां दर्शन के लिये अधिक लोग आते हैं। मन्दिर के आगे गान वाद्य भी होते हैं।

पंचगंगा घाट—आमेर के राजा मानसिंह ने इसे बनवाया था, कार्तिक मास भर यहां स्नान की भीड़ रहती है, गुप्त रह कर पांच नदियां गंगा, जमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा यहां मिली हैं, घाट के ऊपर औरंगजेब की बनवाई हुई एक बड़ी मसजिद है। पास ही में बेनीमाधव और द्वारकाधीश के मन्दिर हैं।

दुर्गा घाट—पास में दिनकर राव का सुन्दर मन्दिर है।



ब्रह्म घाट—इस घाट की मरम्मत बाजीराव पेशवा ने एक बार कराई थी इसके बाद राजमन्दिर और शीतला घाट है।

लाल घाट—यह घाट पत्थर का बना हुआ है आजकल कलकत्ते के प्रसिद्ध व्यवसायी राजा बलदेवदास बिड़ला ने इसकी कुछ मरम्मत करा दी है और ऊपर अपने रहने के लिये कई अच्छे मकान बनवाये हैं।

गाय घाट—यह और घाटों से आगे बढ़ा पक्का बना है।

त्रिलोचन घाट—इस घाट को और ऊपर के मन्दिर को पूना के नाथूबाला ने बनवाया था।

नया घाट—इस घाट को चैनपुर भभुआ के बाबू नरसिंह दयाल ने बनवाया था। इसके पास तेलिया नाला है।

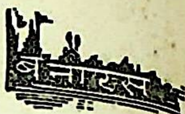
प्रह्लाद घाट—यह घाट लम्बा और सादा बना है।

राजघाट—यह घाट कच्चा है। काशी रेलवे स्टेशन से नीचे घाट पर आने के लिये रेलवे की तरफ़ से ईंटे की सीढ़ी बनी है। पुरानी सड़क से भी एक रास्ता घूमता हुआ यहां आ मिला है, जो यात्री गाड़ी इक्के से शहर में नहीं आते वह यहां से नाव पर सवार होकर आते हैं। पास ही में एक पीपे का पुल बंधा हुआ है जो बरसात के दिनों में खोल दिया जाता है बाक़ी के दिनों में बराबर लोग इस पर से आ जा सकते हैं।

इक्के, गाड़ी, घोड़ा बैलगाड़ी वगै़रह सब इसी पुल पर से आते जाते हैं। पुल का किराया किसी से कुछ नहीं लिया जाता।

रेलवे का पुल—काशी स्टेशन की लाइन से मिला यह पुल लोहे का लाल रंग से रंगा हुआ बना है। बड़े बड़े पन्द्रह पायों के ऊपर पुल खड़ा है, बरसात के दिनों में जब पीपे का पुल तोड़ दिया जाता है तो इस बड़े पुल पर से गाड़ी, इक्का, मोटर वगै़रह आते जाते हैं, आदमी सब दिन बराबर आ जा सकते हैं, पुल की लम्बाई ३५८ फुट और गहराई १४१ फुट है। इसके बनवाने में ७५००००० रुपये से भी अधिक ख़र्च पड़ा है। इस पुल के बनाने का काम सन् १८८० ई० में आरम्भ हुआ और सन् १८८७ ई० में भारत के बड़े लाट लार्ड डफरिन ने इसे खोला, उसी दिन से इसका नाम डफरिन ब्रृज पड़ा। पुल का महसूल पहिले एक पैसा फ़ी आदमी लगता था अब उठा दिया गया है।

राजघाट का क़िला—काशी स्टेशन के उस पार घाट से ३५ फुट की ऊँचाई पर यह किला बिलकुल टूटी फूटी अवस्था में है। इस जगह पर राजा बनार का एक समय बहुत बड़ा किला था। सन् १०१८ में महमूद ग़ज़नवी बराबर बनारस तक आया था, उसने राजा बनार पर चढ़ाई की, राजा लड़ाई में वीर गति को प्राप्त हुए, किला तोड़ डाला गया। सन् १८५७ के बलवे के समय अंग्रेज़ कम्पनी ने इस जगह को फिर आबाद



किया किन्तु वायु अनुकूल न होने के कारण इसे छोड़ दिया। यहां पर दो पुराने फाटक और सन् १८६८ का बना सिपाही लाल मुहम्मद खां का मकबरा है। सन् १९०५ ई० में इसी स्थान पर स्वर्गीय श्री गोपाल कृष्ण गोखले के सभापतित्व में २१ वीं कांग्रेस और प्रदर्शिनी हुई थी उसी समय से यह ज़मीन और भी ठीक हो गई है।

वरुणासंगम घाट—पश्चिम से वरुणा नाम की एक छोटी नदी आकर यहां गंगा में मिल गई है। महावारुणी आदि पर्व के समय इस घाट पर बड़ी भीड़ होती है। घाट से ऊपर सीढ़ी चढ़ कर जाने पर आदि केशव का मन्दिर मिलता है। वर्षाकाल में गंगा जी का जल खूब बढ़ जाता है। चारो ओर पानी पानी दिखलाई देता है। उस समय का दृश्य भी देखने योग्य होता है।

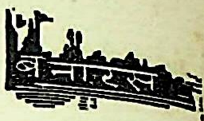
पंचक्रोशी यात्रा—काशी के चारो ओर की परिक्रमा ४७ मील की है। मणिकर्णिका घाट से पहिला स्थान 'कर्दमेश्वर' ६ मील, दूसरा स्थान 'भीमचण्डी' १० मील, तीसरा स्थान 'रामेश्वर' १४ मील, चौथा स्थान शिवपुर ८ मील, पांचवां स्थान, कपिलधारा से मणिकर्णिका ६ मील है। इस प्रकार कुल पंचक्रोशी की परिक्रमा ४४ मील अर्थात् २२ कोस की है। पंचक्रोशी की सब जगहों पर धर्मशाला और ज़रूरी चीज़ों की दूकानें हैं। अगहन और फाल्गुन मास में भीड़ अधिक जाती



है। फाल्गुन में ठाकुर जी जाते हैं जगह जगह रामलीला और कृष्ण लीला होती जाती है। सब स्थानों में ठहरने के लिये धर्मशालाएँ हैं।

नौ दुर्गा—नवरात्र के महीने में नौ दुर्गाओं की नौ दिन यात्रा और दर्शन पूजन होते हैं। पहिले दिन अलईपुर स्टेशन के उस पार मढ़ियाघाट पर 'शैलपुत्री देवी' दूसरे दिन 'ब्रह्मचारिणी' दुर्गाघाट पर, तीसरे दिन 'चित्रघंटा' चौक के पास की गली में, चौथे दिन 'कुष्मांडादेवी' दुर्गा कुण्ड पर, पांचवें दिन 'बागेश्वरी' जैतपुरा में, छठवें दिन 'कात्यायनी' आत्मा विश्वेश्वर के मन्दिर में, सातवें दिन 'काली जी' कालका गली में, आठवें दिन 'अन्नपूर्णा' विश्वनाथ जी के मन्दिर के पास, नौवें दिन 'सिद्धमाता' बुलानाला के आगे सिद्धमाता गली में।





प्रसिद्ध मन्दिर ।



विश्वनाथ जी- यह मन्दिर पत्थर का बना ५१ फुट ऊंचा है। मन्दिर के दरवाज़ों के किवाड़ों पर चांदी चढ़ी हुई है। मन्दिर के ऊपरी हिस्से और जगमोहन के गुम्बज के ऊपर ताम्बे पर सोने का पत्तर है, जिसको लाहौर के महाराज रणजीत सिंह ने सन् १८३६ में दीवान तेजासिंह को भेज कर चढ़वाया था, मन्दिर के बाहर महाराज नैपाल का चढ़ाया हुआ एक बड़ा घण्टा है जिसकी आवाज़ दूर दूर तक पहुंचती है। मन्दिर के भीतर अंग्रेज़ी ढंग के पत्थर अब लगाये गये हैं। महाराज बहादुर कृष्ण प्रताप शाही के० सी० आई ई० हथुआ नरेश के बनवाये सुन्दर चांदी के हौज में शिव लिंग स्थापित है। फाल्गुन सुदी रंगभरी एकादसी को अपूर्व शृंगार होता है। चांदी और सोने की सुन्दर मूर्ति अधिकारी के यहां से लाकर रखी जाती हैं। मन्दिर की सजावट दर्शनीय होती है। इस मन्दिर को इन्दौर की महाराणी अहिल्याबाई ने सन् १७८५ ई० में बनवाया था।

अन्नपूर्णा जी—बीच में मन्दिर और चारो तरफ दो मंजली इमारत है। मन्दिर के अन्दर चांदी के सिंहासन पर अन्नपूर्णा देवी की दिव्य मूर्ति है। नवरात्र में यहां अधिक भीड़ होती

है, बंगाली यात्री अधिक आते हैं और विधि पूर्वक पूजन करते हैं। समय समय पर सुन्दर श्रृंगार होता है, चांदी की मूर्ति रखी जाती है। वर्ष में एक बार दिवाली में ऊपर के कमरे में सोने के काम की मूर्ति के दर्शन होते हैं, मूर्ति के आगे शिव जी खप्पर लिये खड़े बड़े सुन्दर मालूम पड़ते हैं। इस मन्दिर को विष्णु पंत गाजड़े ने बनवाया था।

ज्ञानवापी—विश्वेश्वर के मन्दिर के उत्तर ४८ खम्भों पर चारो तरफ से खुला हुआ पत्थर का मंडप है जिसे ग्वालियर की महाराणी बैजाबाई ने सन् १८२८ ई० में बनवाया था, इसके मध्य में एक कूप है जिसमें नीचे जाने की सीढ़ियां हैं। औरंगज़ेब ने जिस वक्त विश्वनाथ जी के मन्दिर को तोड़ा उस समय विश्वनाथ ज़ी इस कूप में आ गये, उस दिन से इस कूप की महिमा और भी अधिक बढ़ गई है। पास ही में नेपाल के महाराज का दिया हुआ सात फुट ऊंचा पत्थर का बहुत बड़ा बैल है।

काशी करवट—ज्ञानवापी के पास ही के एक मकान के दालान में सूखे कूप में शिवलिंग है। नीचे जाने के लिये एक तरफ़ से सीढ़ी गई है जिसमें ताला बंद रहता है और ताली चौक थाने में रहती है प्रत्येक सोमवार को नीचे का हिस्सा साफ़ करने के लिये ताली पुलीस लेकर आती है। यात्री लोग ऊपर से ही कपूर का टुकड़ा बाल कर नीचे फेंकते और दर्शन



पूजन करते हैं। भंडर और यात्रावाल भोले भाले यात्रियों को मनमानी बातें गढ़ कर बतलाते हैं और धूर्तता से पैसे वसूल करते हैं।

संकटा देवी—यह स्थान भी दर्शनीय है। मन्दिर में देवी की सुन्दर मूर्ति चांदी के सिंहासन पर विराजमान है, इस मन्दिर को गहना बाई ने बनवाया था। मन्दिर के बाहर एक सिंह पत्थर का बैठा है जिसमें संगतरासी का अच्छा काम किया हुआ है। पास ही के एक मकान में श्री विंध्यवासिनी देवी की अपूर्व झांकी होती है।

आत्मा विश्वेश्वर—संकटा देवी के मन्दिर के पीछे आत्मा विश्वेश्वर का यह मन्दिर अब चन्दे से बहुत अच्छा बन गया है। इसी मन्दिर में नौ दुर्गा में से कात्यायनी और मंगलेश्वर और बुधेश्वर हैं मन्दिर के सामने वृहस्पतेश्वर का मन्दिर है जहां प्रत्येक वृहस्पतिवार को दर्शन पूजन की भीड़ होती है।

राम मन्दिर—दुर्गा घाट पर ग्वालियर के दीवान दिनकर राव का बनवाया हुआ यह मन्दिर है। मन्दिर के सुन्दर सिंहासन पर राम लक्ष्मण और जानकी जी की मूर्तियां खड़ी हैं, मन्दिर अच्छे ढंग से सजा हुआ है।

जड़ाऊ मन्दिर—ग्वालियर के दीवान वाला जीपन जटार ने इस मन्दिर को बनवाया था। मन्दिर की सुन्दर सजावट

और अगली दीवार तथा खम्भों पर जड़ाऊ काम देखने योग्य हुआ है। इसी से लोग इसे जड़ाऊ मन्दिर कहते हैं, मन्दिर में श्री लक्ष्मी नारायण जी की मूर्ति विराजमान है।

लक्ष्मण बाला—इसी नाम के घाट के ऊपर श्रृंगार से सुसज्जित श्री लक्ष्मण बाला जी की दिव्य मूर्ति है। मूर्ति के एक ओर सोने का सूर्य और दूसरी तरफ चांदी का चन्द्रमा है, यह मन्दिर ग्वालियर के महाराज का बनवाया हुआ है। सामने के दालान में राशलीला हरिकीर्तन और भजन भाव होते हैं।

द्वारकाधीश—पास ही में यह मूर्ति भी दर्शनीय है, कार्तिक मास में यहां कई प्रकार से अवतारों की झांकी होती है।

बेनीमाधव—पंच गंगा घाट के ऊपर सीढ़ी ख़तम होने पर सामने के मकान में बेनीमाधव की सुन्दर श्यामल चतुर्भुज मूर्ति है। कार्तिक मास में यहां बड़ी भीड़ होती है।

त्रिलोचन महादेव—इसी नाम के घाट के ऊपर प्राचीन ढंग का यह शिखरदार मन्दिर है। इसे १०० वर्ष के ऊपर हुए पूना के नाथू बाला ने बनवाया था। शिखर पर पत्थर का काम देखने योग्य है। मन्दिर के चारो ओर चार दरवाज़े हैं भीतर त्रिलोचनेश्वर शिवलिंग है, मन्दिर में और भी कई मूर्तियाँ हैं।



आदिकेशव—काशी स्टेशन के उस पार गंगा और वरुणा के संगम की ऊंची ज़मीन पर सीढ़ी चढ़कर आदि केशव का शिखरदार मन्दिर है। आदि केशव का श्याम रंग की चतुर्भुज मूर्ति खड़ी है। शंख, चक्र, गदा, पद्म में चांदी लगी हुई है।

लाट भैरव—शहर के बाहर जलालीपुरा गांव में पत्थर का एक बड़ा फ़र्श है जो कि मुसलमानों का निमाज़गाह है। पश्चिम तरफ मसजिद और पूर्व की ओर नौ गज़ लम्बे चौड़े घेरे में सात फुट ऊंची ताम्बे से मढ़ी भैरव की लाट है। इसे लाट भैरव और कपाल भैरव भी कहते हैं। औरंगज़ेब की कृपा इधर भी हुई थी तब से कई बार हिन्दू मुसलमानों में झगड़ा हो चुका है।

काल भैरव—यह मन्दिर पत्थर का बना है, इसके चारो ओर दालान है। मन्दिर के भीतर भैरवनाथ की मूर्ति खड़ी है मुख और हाथ पैरों में चांदी चढ़ी है। इन्हें लोग काशी का कोतवाल भी कहते हैं। अगहन मास की अष्टमी को दर्शन पूजन की बड़ी भीड़ होती है। इस मन्दिर को सन् १८२५ ई० में पूना के बाजीराव पेशवा ने बनवाया था।

गोपाल मन्दिर—चौखम्भा नाम के मुहल्ले में बल्लभ संप्रदाय वालों का यह मन्दिर लम्बा चौड़ा राजसी ठाट का है। नियत समय पर श्री गोपाल लाल और बगल में श्री मुकुन्द

लाल जी की झांकी अपूर्व होती है। श्रावण में झूलन का और मनोरथ का उत्सव बड़े समारोह से होता है। मन्दिर के फाटक के सामने श्री रणछोड़ जी का मन्दिर, पास ही में बड़े महाराज जी का मन्दिर, बलदेव जी का मन्दिर, भाट के मुहल्ले में दाऊ जी का मन्दिर यह सब वल्लभ संप्रदाय के स्थान हैं। जतनबड़ नाम के मुहल्ले में महाप्रभु जी की बैठक, दूसरी पंचगंगा पर और तीसरी हनुमान घाट पर है।

जैन मन्दिर—टाउनहाल के पास तथा अस्सी और भदैनी मुहल्ले में जैन संप्रदाय के कई मन्दिर हैं।

मृत्युंजय महादेव—वृद्धकाल के पास यह मन्दिर है। बीमार होने पर रोगी की ओर से पूजा पाठ जप हुआ करता है इन्हें जन्म मृत्यु हरेश्वर भी कहते हैं।

बड़े गणेश जी—कम्पनी बाग़ के पास बड़े गणेश जी की मूर्ति बड़ी भव्य और दर्शनीय है। इन्हें हस्तदंत विनायक भी कहते हैं। माघ मास की चौथ को यहाँ बड़ा मेला लगता है। यह मन्दिर ५० वर्ष का बना हुआ है।

यज्ञेश्वर और गुहागंगा—ईश्वरगंगी के पास सड़क के मोड़ पर कुछ सीढ़ी के चढ़ने पर क़रीब तीन हाथ ऊँचा और दस हाथ के घेरे में श्याम रंग अग्निध्रेश्वर शिवलिंग है। मन्दिर के आगे काले पत्थर का नन्दी है, आगे 'अग्निध्र कुण्ड'



अब ईश्वरगंगी के नाम से प्रसिद्ध है। यज्ञेश्वर के मन्दिर में एक छोटी कोठरी में जाने पर अंधेरी गुफा मिलती है इसी को गुहागंगा कहते हैं।

पंचक्रोशी—गोला गली में यह शिवाला भी दर्शनीय स्थान है। इसमें पंचक्रोशी भर के मुख्य मुख्य देवता, तालाब आदि स्थान बने हुए हैं। जो लोग पंचक्रोशी नहीं जाते उन्हें यहां की यात्रा अवश्य करनी चाहिये।

आदि विश्वेश्वर—ज्ञानवापी के पास सड़क पर पुराने विश्वनाथ का यह मन्दिर जयपुर नरेश का बनवाया हुआ है। मन्दिर में मारबल का फ़र्श लगा है। बाहरी हिस्से में सत्य नारायण जी का मन्दिर है। जहां सन्ध्या समय नित्य भजन आदि होते हैं।

हनुमान जी—मीरघाट महल्ले पर हनुमान जी का अपूर्व दर्शन होता है मूर्ति देखने योग्य है।

लक्ष्मी कुंड—दशाश्वमेध से आगे सड़क से चल कर एक बड़े तालाब के किनारे पर लक्ष्मी जी का मन्दिर है। यहां कुवार मास में १६ दिन तक सोरहिया का मेला होता है।

बटुक भैरव—हिन्दू कालेज के पास भैरव जी का यह मन्दिर है। पास ही में कामच्छा देवी हैं।

तिल भांडेश्वर—बंगाली टोला स्कूल के पास की गली में एक मन्दिर है जिसमें एक शिव लिंग स्थापित है जिसकी ऊँचाई साढ़े चार फुट और चारो ओर का घेरा १५ फुट के है। जनश्रुति है कि एक एक तिल यह बराबर बढ़ते हैं।

केदारेश्वर—बंगाली टोला से आगे बहुत बड़े स्थान के भीतर केदारेश्वर शिव लिंग है। शिवरात्रि को यहां अधिक भीड़ होती है। श्रावण के प्रत्येक सोमवार को दर्शन पूजन के लिये भी लोग आते हैं।

दुर्गा कुण्ड—पास के बड़े तालाब और मन्दिर को रानी भवानी ने बनवाया था। मन्दिर में दुर्गा देवी की सुन्दर मूर्ति है। प्रत्येक मंगल को यहां अधिक लोग दर्शन के लिये आते हैं। मन्दिर में और उसके आस पास बन्दर बहुतायत से रहते हैं। श्रावण मास में यहां पर अच्छा मेला होता है, पास के बाग़ में लोग आकर बैठते हैं और यहीं से मेला देखते हैं। महाराज नेपाल का दिया एक घंटा यहां भी लगा है।

संकट मोचन—दुर्गा जी के आगे यह मन्दिर एक बड़े बाग़ में है। झांकी देखने योग्य है सामने राम मन्दिर और तालाब पं० गुरु प्रसाद शुक्ल का बनवाया हुआ है। पहले यह स्थान बड़ा निर्जन था।



गोरख नाथ—कम्पनी बाग़ के पास गोरख टीला के एक मकान के मध्य में शिखरदार मन्दिर है जिसमें ऊंची गद्दी पर गोरखनाथ का चरण चिन्ह है। मन्दिर के चारो ओर गोरख सम्प्रदाय के साधु लोग रहते हैं।

राधा स्वामी सत्संग—यह दीनानाथ के गोले में किंग एड॰ वर्ड अस्पताल के बग़ल में माधवदास सामिया वाले बाग में है। यहीं वारेन हेसटिंग्स आकर ठहरे थे। आजकल इस बाग़ का नया रूप हो गया है। सत्संग का सुन्दर बड़ा फाटक देखने योग्य है।

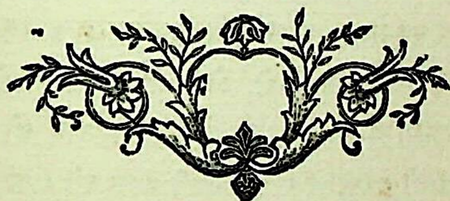
कबीर चौरा—इसी नाम के महल्ले में एक मकान में छोटे से मन्दिर के बीच कबीर जी के चरण चिन्ह रखे हैं। पास ही के दो मंजिले मकान मे इनकी टोपी और चित्र रखा है। यहीं पर उनके गुरु श्री रामानन्द स्वामी का भी चित्र लगा है, कबीर जी का मत था कि हिन्दू और मुसलमान दोनों का ईश्वर एक ही है, इसी कारण इनके शिष्य दोनों जाति के लोग हैं। जिस समय सिकन्दर बादशाह काशी में आया उस समय कबीर जी के चमत्कार को देखकर वह इनको साथ में प्रयाग ले गया। कुछ दिन बाद यह काशी लौट आये, इनका शरीरान्त गोरखपुर के मगहर में हुआ।

वैरागियों का—स्थान अस्सी पर सीतल दास जी का अखाड़ा है। और उदासियों का जतनबड़ महल्ले में हैं।



बड़ी संघत—ठठेरी बाजार के पीछे गली में सिक्ख धर्म की बड़ी संघत है। इसे गुरु तेग़ बहादुर ने बनवाया था।

रामानुज सम्प्रदाय—का अस्सी संगम पर द्वारकाधीश का मन्दिर है जिसे ब्रह्मचारी श्री कृष्णाचार्य का मठ भी कहते हैं।



बनारस के मेले तमाशे।



सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण—काशी में ग्रहण स्नान का बड़ा माहात्म्य है। भारतवर्ष के दूर दूर के शहरों से लाखों यात्री उस समय यहां आते हैं। बड़ी भीड़ होती है, पुलीस और सेवा समिति का प्रवंध होता है। कितनी ही नई दूकानें बाज़ारों में लग जाती हैं, व्यापारियों को अच्छा लाभ होता है।

बुढ़वा मंगल—काशी में नित्य ही मेले तमाशे होते हैं मगर बुढ़वा मंगल का मेला बहुत प्रसिद्ध था। इसको देखने के लिये दूर दूर से लोग आते थे, मेले के समय राजे महाराजे या बाहरी लोगों के आ जाने से मेला ज़ोरदार हो जाता था। काशी नरेश की तरफ़ से सात बड़ी नाव को एक कर कच्छा पाटा जाता था स्वयं महाराजा बहादुर मोरपंखी या घुड़दौड़ पर आते थे और एक बार घाट की तरफ़ से होकर तब कच्छे पर जाते थे नाच रंग होते थे। चैत के प्रथम मंगलवार को लोग दुर्गा जी दर्शन के लिये नाव से जाते थे धीरे धीरे इसी ने मेले का रूप धारण किया मगर राजा चेत सिंह ने इस मेले का नाम बुढ़वामंगल रख नया रूप दिया और स्वयं भी सम्मि-



लित हुए। मंगल से लेकर शनिवार तक यह मेला मणिकर्णिका घाट से आरम्भ होकर शुक्रवार को रामनगर जाता था लौटकर शनिवार तक समाप्त होता था, हज़ारों नाव बजरे आदि खूब सजे जाते थे हिन्दू और मुसलमान दोनों इसमें सम्मलित होते थे। गंगा जी पर खूब बहार रहती थी घाटों पर अच्छी चहल पहल रहती थी नाव पर बैठे हुए खाने पीने की चीज़ें आदि मिल जाती थीं। केवल इसी मेले से ग़रीबों और मल्लाहों को अच्छी आमदनी हो जाती थी। एक साल गोपालमन्दिर के महाराज स्वर्गीय श्री जीवन लाल जी का गुलाबी कच्छा भी अच्छा सजा था कांकरौली, पोरबन्दर, कामवन, मथुरा आदि के महाराज भी सम्मलित हुए थे। पंचगंगा घाट पर गुलाबबाड़ी का दृश्य देखने योग्य था। इधर कई वर्ष पूर्व से मेला कुछ साधारण सा होने लगा मगर चार वर्ष से तो बन्द ही हो गया है।

चैतमास में 'गनगौर का मेला' राज मन्दिर घाट पर होता है। चैत सुदी नौमी को रामघाट पर स्नान और राम जी के दर्शन की भीड़ होती है।

वैसाख शुक्ल की चौदस को बड़े गणेश जी के पास अच्छी भीड़ होती है। नृसिंह अवतार की झांकी देखने योग्य होती है। रात्रि में प्रह्लाद घाट पर भी लीला होती है।



बैसाख शुक्ल की सप्तमी को घाट घाट पर गंगा जी का श्रृंगार होता है। कहीं कहीं नाच गान भी होते हैं।

जेठ बदी दसमी को गंगा दशहरा का स्नान इसी दिन रामनगर में और दूसरे दिन निर्जला एकादसी का स्नान होता है। इस दिन लोग खूब तैरते हैं। गंगा जी के उस पार रेती पर सन्ध्या को कवड्डी होती है और पंचगंगा घाट पर कुस्ती होती है।

आषाढ़ की दूज से तीन दिन तक रथयात्रा का मेला होता है। खूब भीड़ होती है। रथ पर जगन्नाथ जी सुभद्रा सहित विराजमान रहते हैं। मूर्ति अस्सी संगम से आती है।

आषाढ़ की पूर्णिमा को 'गुरुपूजा' होती है। श्रावण के रविवार को वृद्धकाल पर स्नान की भीड़ होती है। लोग 'अमृत कुण्ड' में स्नान करते हैं। लोगों का यह कहना है कि इसमें स्नान करने से कुष्ट आदि रोग छूट जाते हैं।

श्रावण शुक्ल की पंचमी को नागकुआँ पर मेला होता है। विद्यार्थी एक दूसरे से शास्त्रार्थ करते हैं।

श्रावण मास के मंगल और शुक्रवार को दुर्गा जी पर अच्छा मेला होता है।

श्रावण मास के प्रत्येक सोमवार को 'सारनाथ' और



मार्कण्डेय पर मेला होता है गांव और शहर से भी लोग दर्शन को जाते हैं।

श्रावण शुक्ल ११ से पूर्णमासी तक मन्दिरों में झूलन की बहार रहती है।

भादो कृष्ण की तीज को संखूधारा और ईश्वरगंगी पर कजरी का मेला होता है।

भादो शुक्ल की छठ को अस्सी संगम पर 'लोलार्क छठ' का मेला होता है। खूब कजरी होती है।

भादो कृष्ण की नौमी से साक्षी विनायक पर गो० राम-चरणपुरी जी के यहां "कृष्ण दर्शन" की अपूर्व झांकी होती है। कृष्ण लीला और दशो अवतार तथा महाभारत का युद्ध देखने योग्य है। इसमें सन्देह नहीं कि काशी में ऐसा उत्सव और दर्शन कहीं नहीं होता। नर नारियों का एक प्रकार मेला लग जाता है। दूर दूर से लोग देखने को आते हैं।

कुवार के महीने में काशी के मुहल्ले मुहल्ले में रामलीला होती है। मगर काशी राज के रामनगर में अनन्त चतुर्दशी से लीला आरम्भ होती है और मास के अन्त तक भिन्न भिन्न स्थानों में होती है। हज़ारों दर्शक मेले में जाते हैं स्वयं महा-राजा साहब बहादुर भी मेले में उपस्थित रहते हैं।

कुवार की विजया दशमी वाले दिन रामनगर में काशी नरेश की सवारी बड़े धूम से निकलती है। हाथी, घोड़े, सवार,

तोपखाने और अस्त्र शस्त्र देखने योग्य राजसी ठाट रहता है। उसी दिन सन्ध्या समय दशाश्वमेध घाट पर देवी भसान का भी मेला होता है। बंगाली लोग दुर्गा देवी की मूर्ति बाजे गाजे के सहित लाकर नाव पर रखते हैं सन्ध्या को उन मूर्तियों को गंगा में विसर्जन कर देते हैं।

दूसरे दिन एकादसी को चित्रकूट की रामलीला कानाटी इमलीपर 'भरतमिलाप' देखने योग्य होता है। यह लीला शहर में बड़ी प्रसिद्ध और प्राचीन है। उस दिन शहर के प्रायः सभी काम काज वन्द हो जाते हैं। नगर के उच्च अधिकारी और काशी नरेश भी आज के दिन आते हैं।

द्वादसी को रामनगर में 'भरत मिलाप' देखने योग्य होता है और त्रयोदसी को कुदई की चौकी की चौमुहानी पर गो० रामदास जी की स्थापित की हुई लीला का भरत मिलाप दर्शनीय होता है।

स्वर्गीय महाराज विजयानगरम् ने इस लीला को अपना कर इसमें जीवन डाल दिया था और बड़े उत्साह से यह काम होता था अब भी यह लीला चन्दे से लक्सा की लीला के नाम से होती है, इस लीला की फुलवारी और धनुषयज्ञ स्वर्गीय रईस बाबू कामेश्वर प्रसाद जी के बाग़ में होता है। लीला में आप तथा आपके पुत्र स्वर्गीय बा० गया प्रसाद, गदाधर प्रसाद और बा० कृष्ण प्रसाद पूर्ण भक्त और सहायक थे। आनन्द की बात

है कि अपने पूर्वजों की चलाई रीति को वर्तमान काल में कोठी के मालिक बाबू किशोरी रमण प्रसाद जी और चि० राधारमण प्रसाद बराबर करते हैं । इसके कार्यकर्ता और व्यास पं० भैरवदत्त दूबे जी का उत्साह और परिश्रम सराहने योग्य है। महाराज कुमार विजयानगरम् आजकल काशी में रहते हैं । आप को अपने पूर्वजों की इस लीला का स्मरण रखना चाहिये।

भादो की अष्टमी से कुवार की अष्टमी तक पन्द्रह दिन तक 'लक्ष्मी कुण्ड' का मेला होता है। इसमें मिट्टी के तरह तरह के बर्तन और लक्ष्मी जी की सुन्दर मूर्तियां बनके बिक्री के लिये आती है । इसे सोरहिया का मेला भी कहते हैं। कुण्ड में स्नान कर लोग मन्दिर में दर्शन के लिये जाते हैं।

कार्तिक मास भर पंचगंगा घाट पर स्नान और दर्शन होते हैं। धनतेरस वाले दिन ठठेरी बाजार में पीतल, ताम्बे और काँसे के बर्तन खूब बिकते हैं। मिट्टी के खिलौने भी यहां अच्छे बन कर बिक्री के लिये आते हैं ।

कार्तिक कृष्ण १३ को 'धनतेरस' की भीड़ ठठेरी बाज़ार में होती है बर्तन खूब बिकते हैं ।

कार्तिक कृष्ण की चौदस को हनुमान जी का जन्म होता है । मीरघाट, गली विश्वेश्वर नाथ, भदैनी और संकटमोचन पर दर्शनीय झांकी होती है । दूसरे दिन दीपावली को लक्ष्मी पूजन की धूम रहती है चौक, दालमंडी और ठठेरी बाज़ार में रोशनी होती है ।



कार्तिक शुक्ल ६ और सप्तमी को गंगा तट पर सूर्य की पूजा होती है जिसे डालाछठ कहते हैं।

कार्तिक शुक्ल गोपअष्टमी को टौनहाल के पास गौशाला में अच्छी भीड़ होती है। गउओं को गुड़, मिठाई, चने, घास, वगैरह लोग खिलाते हैं। इसी दिन वार्षिक सभा होती है उसमें यहां के व्यापारी गौशाला की सहायतार्थ द्रव्य देते हैं।

अगहन कृष्ण की अष्टमी को 'भैरवनाथ' के दर्शन पूजन के लिये बहुत लोग जाते हैं। मन्दिर के पास खिलौने भी बिकते हैं।

अगहन सुदी १४ को लोटा भंटा का मेला पिशाच मोचन पर होता है माघ में रामनगर किले के वाहरी पुस्ते पर वेदव्यास के दर्शनों को लोग नाव से जाते हैं। भोजन आदि भी साथ में ले जाते हैं। रामनगर से तीन मील पर बड़े वेदव्यास भी लोग जाते हैं।

माघ कृष्ण की चौथ को बड़े गणेश जी पर मेला होता है। सैकड़ों दूकानें बाहर लग जाती हैं। मन्दिर में गणेश जी की झांकी अपूर्व होती है। इसी मास की मकर संक्रांति को दशाश्वमेध में स्नान की भीड़ होती है।

फाल्गुन कृष्ण की चौदस को शिवरात्रि होती है। इस दिन काशी के प्रायः सभी शिव मन्दिर में शृंगार और पूजन की धूम रहती है। इसी मास की रंगभरी एकादसी को विश्वनाथ जी और अन्नपूर्णा तथा अन्य मन्दिरों में दर्शनीय शृंगार होता है। सन्ध्या समय काशी नरेश भी दर्शनों को आते हैं।

बनारस ज़िले के मेले।



चैत और कुवार के नवरात्र में कालकाबाड़ा में देवी के दर्शन पूजन की भीड़ होती है।

चैत की नवमी को टिकरी, मझवार के हरदेवर में रामनवमी होती है।

आषाढ़ सुदी २ को राजा तालाव और हरपुर पर रथयात्रा का मेला होता है।

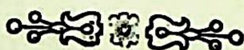
कुवार सुदी में करउत, कटिरांव, तारी, खरवान, हटवा, बलुआ, रसई, नियार, धरहरा, चौवेपुर, कैथी, सिन्धोरा बड़ा गांव, पिण्डरा, बसनी, शिवपुर, गङ्गापुर सकलपुर, बरउरा, भीखमपुर, किउली, छतरी, थातरा, रूपापुर, बनकट, गोरानी, कालकाबाड़ा। में रामलीला होती है।

अगहन मास में पंचक्रोशी की भीड़ कन्दवा, भीमचण्डा, रामेश्वर, शिवपुर, और कपिलधारा पर होती है।

फाल्गुन की शिवरात्रि में कैथी पर महादेव जी के दर्शन पूजन की बड़ी भीड़ होती है शहर से भी लोग जाते हैं।



देखने योग्य स्थान।



क्वीन्स कालेज—जगतगंज की सड़क पर सन् १७९२ में कालेज की यह इमारत देखने योग्य बनी है। चुनार के पत्थर से इसका वाहरी भाग और ऊपर का टावर तैयार हुआ है। कालेज का जो हिस्सा जिसके खर्च से बना है वहां दाता का नाम पत्थर के उभड़े हुए हिन्दी और अंग्रेज़ी अक्षरों में खुदा है अन्य लोगों के दान के अतिरिक्त सरकार का १९०३५०) रु० व्यय हुआ है। पूर्व में कालेज लाइब्रेरी और पश्चिम तरफ़ में म्यूज़ियम है जिसमें मेजर किटो द्वारा लाई गई सारनाथ की चीज़ें हैं। पत्थर का सुन्दर फौवारा, हौज, धूप घड़ी और ३२ फुट ऊंचा एक स्तम्भ देखने योग्य है। यह स्तम्भ सन् १८५४ ई० में ग़ाज़ीपुर से लाकर यहां खड़ा किया गया है, पिलर पर खुदे हुए अक्षरों से यह चौथी सदी का मालूम होता है। इसमें संस्कृत कालेज विभाग भी खोला गया है।

मान मन्दिर—सवाई जयसिंह जिन्होंने १७२८ ई० में जयपुर को बसाया था उन्हीं जयसिंह के बनवाये मान मन्दिर में ज्योतिष विद्या के यंत्र देखने योग्य हैं। वहां जाने पर सब से पहिले 'यम्योत्तर भिति' यंत्र मिलता है। महाराज जयसिंह ने इस यंत्र द्वारा सूर्य की सब से बड़ी क्रांति २३ अंश और २८ कला

निकाली थी। पास ही में यंत्र सम्राट, नाड़ी यंत्र, धूप घड़ी, चक्र यंत्र, दिगंश यंत्र, आदि ज्योतिष विद्या के चमत्कार दिखलाते हैं। चार वर्ष के लगभग हुए इनकी फिर से मरम्मत कर दी गई है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि काशी में यह स्थान देखने योग्य है।

हिन्दू कालेज—इस कालेज को सन् १८९८ ई० में डाक्टर एनी वेसेएट ने स्थापित किया था। कालेज पहिले पहिल सप्त-सागर पर स्थापित हुआ, यहाँ से उठ कर नन्दन साहु मुहल्ले में अंग्रेज़ी कोठी में गया, बाद में काशीराज के १३ बीघा ज़मीन देने पर यह कमच्छा में गया जहाँ इसकी सुन्दर इमारत देखने योग्य है। काशी नरेश ने इस कालेज की अधिक सहायता की है अपने कई मकान इसे दे दिये हैं। कालेज के काशी नरेश हाल में बड़ी मीटिंग हुआ करती हैं। आजकल यह कालेज हिन्दू विश्व विद्यालय में मिल गया है। सरस्वती का एक मन्दिर भी इसमें बना है।

माधवराव का धरहरा—घाट के ऊपर औरंगज़ेब की बनवाई हुई १४२ फुट ऊंची एक बड़ी मसजिद है, जो वहीं के बेनीमाधव के मन्दिर की सामग्री से बनी है। मीनार पर चढ़कर देखने से बनारस की बहार दिखलाई पड़ती है। ऊपर धरहरे पर जाने के लिये चक्करदार सीढ़ियाँ हैं। दो पैसा फ़ी आदमी लेकर वहां का मुसलमान लोगों को ऊपर चढ़ने देता है। मीनार का नाम माधवराव का धरहरा पड़ा है।



नागरी प्रचारिणी सभा—सन् १८९३ ई० में इस सभा का जन्म हुआ, टौनहाल के पास तारघर के सामने सभा का निज का सुन्दर भवन है। इसकी नींव काशी नरेश ने सन् १९०२ में दी थी। संयुक्त प्रदेश के लेफ्टिनेंट गवर्नर सर जेम्स लाटूस महोदय ने सन् १९०४ ई० में इसे खोला था। सभा भवन, उसका पुस्तकालय, प्राचीन हस्त लिखित हिन्दी पुस्तकें, हिन्दी के लेखक और कवियों के चित्र आदि देखने योग्य हैं। इस भवन के बनवाने में २५,०००) के लगभग व्यय हुआ है। इसके हाल में सभा के संरक्षक, सहायक और जन्मदाता के चित्र लगे हैं।

सभा ने ४०००) में पासही में एक और जमीन स्थानीय म्युनिस पेल्टी से ली है।





धर्मशालाएँ।



(१) काशी स्टेशन के पास तेजपाल जमनादास की पक्की धर्मशाला है। पास ही में खाने पीने की चीज़ें मिलती हैं।

(२) टौनहाल के पास सड़क पर "रेवाबाई भाईशंकर धर्मशाला" है। इसमें पलंग, बिस्तर और बर्तन भी मिलते हैं मगर केवल गुजराती यात्री इसमें ठहर सकते हैं।

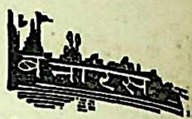
(३) पास ही में लखनऊ के शाह जी की धर्मशाला है। यह बारात आदि के ठहरने योग्य है।

(४) बुलानाला की ठीक चौमुहानी पर "सेठ मोतीलाल भागीरथ मल्ल डालमियां" की बनवाई बड़ी धर्मशाला है। इसमें यात्री बराबर ठहर सकते हैं।

(५) इसके पास ही में महाराजा रणजीत सिंह के दीवान "तारा चन्द" की धर्मशाला है। मगर यह बे मरम्मत हो रही है। ग़रीबों के ठहरने की इससे अच्छी और कोई जगह नहीं है।

(६) चौमुहानी के आगे बुलानाला की गली में 'विश्वेश्वर प्रसाद हनुमान प्रसाद की धर्मशाला" पक्की बनी हुई है।

(७) भुतई इमली के पास "सेठ वसन्त जी मुरार जी की



गोलघर धर्मशाला" के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें गुजराती और भाटिये अधिक ठहरते हैं।

(८) भैरवबाजार में "मधुवनदास द्वारिका दास" की धर्मशाला भी अच्छी है।

(९) रामघाट पर कलकत्ते के प्रसिद्ध व्यवसायी "गोकुल-चंद छुटका मल्ल खत्री" की धर्मशाला है। इसी के साथ एक आयुर्वेदिक औषधालय भी है।

(१०) गऊमठ मुहल्ले में "वृन्द्रावन सारस्वत" की धर्म-शाला है। इसमें सारस्वत और खत्री भाई अधिकतर ठहरते हैं।

(११) कुछ आगे वढ़कर मणिकर्णिकेश्वर में कलकत्ते के पं० विनायक जी मिश्र की वहिन की यह धर्मशाला है। इसमें बारात आदि बाहर से आकर ठहरती है।

(१२) मणिकर्णिका जाते समय रास्ते में चौमुहानी पर "सेठ विसन दास हरदयाल" की यह पक्की धर्मशाला है, इसमें थोड़े यात्री ठहर सकते हैं।

(१३) ब्रह्मनाल में "विशुन सिंह खत्री की धर्मशाला" भी बड़ी है। इसमें बराबर यात्री ठहरा करते हैं, पास ही में साग सब्ज़ी और खाने पीने की चीज़ें मिलती हैं।

(१४) चौक के आगे गली में सुखलाल साव के फाटक के भीतर "लच्छीराम मारवाड़ी" की बहुत बड़ी धर्मशाला है

इसमें बहुत यात्री ठहरा करते हैं। मारवाड़ी लोग अधिक उतरते हैं।

(१५) ज्ञानवापी मुहल्ले में "सेठ राधाकृष्ण की धर्मशाला" भी बहुत अच्छी है। यह धर्मशाला विश्वनाथ जी के मन्दिर के पास ही है।

(१६) नैपाली खपरे में केवल मैथिल लोगों के ठहरने के लिये दो स्थान हैं। एक महाराणी दरभंगा का मकान दूसरा "तारा मन्दिर बनेली की रानी पद्मावती" का मकान है।

(१७) लांगलेश्वर पर "जेठा भाई की धर्मशाला" गुजराती हिन्दुओं के लिये है।

(१८) ललिता घाट पर नैपाली मन्दिर के पास केवल नैपाली लोगों के ठहरने के लिये एक धर्मशाला है।

(१९) सकरकन्द की गली में बेतिया के सेठ भगत राम की धर्मशाला है।

(२०) सकरकन्द की गली में दूसरी धर्मशाला रामदास पेशावरिया की है। इसमें केवल पेशवरिये यात्री ठहर सकते हैं।

(२१) पत्थर गली में बैजनाथ पटेल की धर्मशाला है।

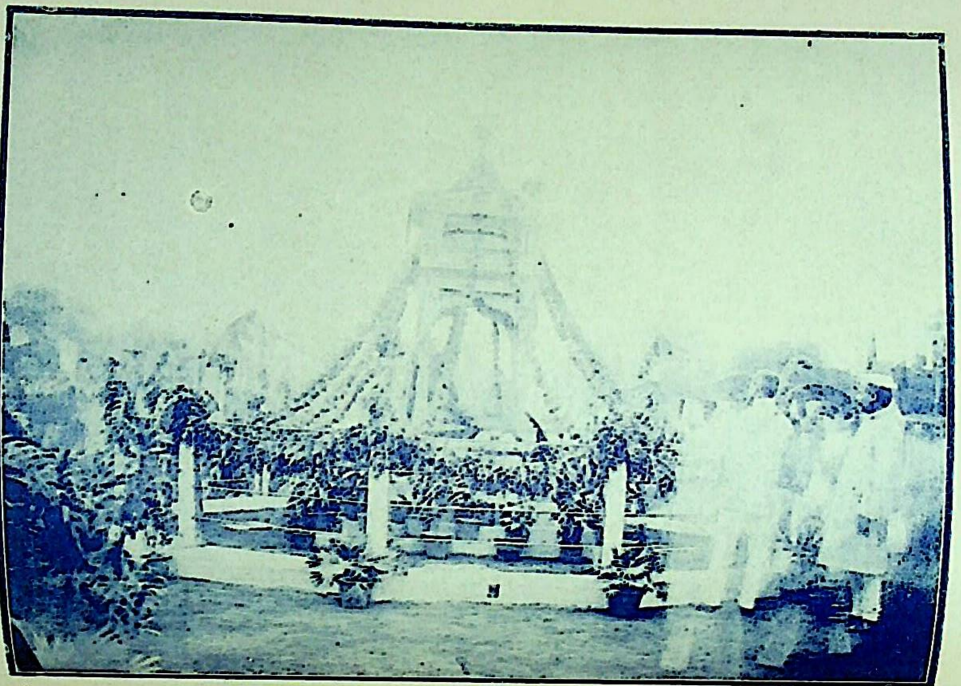
(२२) बुलानाला पर भाई शंकर ब्राह्मण की।

(२३) मीरघाट पर धर्मदास की।

(२४) नन्दन साह में दीपचंद की।

(२५) महल्ला सीतला गली में स्वर्गीय बाबू गोकुल चन्द

बनारस



गोकुल चंद मेमोरियल पार्क के उद्घाटन का दृश्य।

सर्व साधारण के टहलने के लिये पार्क।

कम्पनी बाग़—टौनहाल के सामने [illegible] मन्दाकिनी तथा [illegible] यह बाग़ चारों ओर से लोहे के जँगले से घिरा है, बीच में एक कच्चा बड़ा तालाब है जिसे मन्दाकिनी कहते हैं। तालाब के तीन तरफ़ के पक्के घाट को महाराज विजयानगरम् ने सन् १८६६ ई० में बनवाया था, बाग़ में हौज़ के बीच एक फव्वारा और लोगों के बैठने के लिये पत्थर की चौकी बनी हुई है। इसका प्रबंध म्युनिसिपैल्टी के हाथ में है।

गोकुलचन्द मेमोरियल पार्क—विश्वेश्वरगंज के आगे यह सुन्दर बाग़ है। बाग़ के बीच में एक कच्चा तालाब है जिसे मत्स्योदरी तीर्थ कहते हैं। इसे बनारस के रईस बाबू [illegible] खत्री ने अपने स्वर्गीय पिता के स्मारक में बनवाया है और उनका एक स्टैचू भी लगा दिया है। इस बाग़ को २१ मई सन् १९१४ को बनारस के कमिश्नर मि० [illegible] ने खोला था।

विक्टोरिया पार्क—यह बाग़ चेतगंज की सड़क पर है। पार्क बहुत लम्बा चौड़ा लोहे के जँगलों से घिरा है। बीच में स्वर्गीय महारानी विक्टोरिया की मूर्ति खड़ी हुई है। एक ओर छोटी सी झील है जो बरसात में पानी भर जाने से बड़ी खूबसूरत लगती है।

बनारस —





सर्व साधारण के टहलने के लिये पार्क।

कम्पनी बाग़—टौनहाल के सामने नागरी प्रचारिणी सभा के पश्चिम यह बाग़ चारो ओर से लोहे के जँगले से घिरा है, बीच में एक कच्चा बड़ा तालाब है जिसे मन्दाकिनी कहते हैं। तालाब के तीन तरफ़ के पक्के घाट को महाराज विजयानगरम् ने सन् १८६६ ई० में बनवाया था, बाग़ में हौज के बीच एक फ़व्वारा और लोगों के बैठने के लिये पत्थर की चौकी लगी हुई है। इसका प्रबंध म्युनिसिपैल्टी के हाथ में है।

गोकुलचन्द मेमोरियल पार्क—विश्वेश्वर गंज के आगे यह सुन्दर बाग़ है। बाग़ के बीच में एक कच्चा तालाब है जिसे मत्स्योदरी तीर्थ कहते हैं। इसे बनारस के रईस बाबू बटुक प्रसाद खत्री ने अपने स्वर्गीय पिता के स्मारक में बनवाया है और उनका एक स्टैचू भी लगा दिया है। इस बाग़ को २१ मई सन् १९१५ को बनारस के कमिश्नर मि० होपकिन्स ने खोला था।

विक्टोरिया पार्क—यह बाग़ चेतगंज की सड़क पर है। पार्क बहुत लम्बा चौड़ा लोहे के जँगलों से घिरा है। बीच में स्वर्गीय महाराणी विक्टोरिया की मूर्ति रखी हुई है। एक ओर छोटी सी झील है जो बरसात में पानी भर जाने से बड़ी सुहावनी लगती है।



बंक

इम्पीरियल बंक—इसका कार्य्यालय बनारस कैण्ट में कचहरी के सामने है और ब्रैंच चौक में है।

बनारस बंक—चौक की सुन्दर इमारत में इसका प्रधान कार्य्यालय है। ऊपर जाने के लिये संगमरमर पत्थर की सीढ़ियां हैं बाहर के फाटक पर सन्तरी का पहरा रहता है।

इलाहाबाद बंक—बनारस बंक के सामने इलाहाबाद बंक की बनारस शाखा का कार्य्यालय है।

विहार बंक—बांस के फाटक पर विहार बंक की बनारस शाखा का कार्य्यालय है।

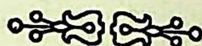
कोआपरेटिव बंक—इस का कार्यालय टौनहाल में है।

थियेटर हाल।

विश्वेश्वर थियेटर हाल बांस का फाटक, विश्वनाथ थियेटर हाल गुदौलिया, रामेश्वर थियेटर हाल बुलानाला सर्कस या दंगल के लिये टौनहाल, राजादरवाज़ा और मिश्र पोखरे पर बड़े मैदान हैं।

भारतेन्दु नाटक मण्डली, नागरी नाटक मण्डली, जैन नाटक मण्डली, बांधव समिति, हरिहर समिति भी यहां हैं।

अस्पताल



किंग एडवर्ड अस्पताल—यह इमारत बहुत अच्छी है, इसे बनारस के रईसों ने सन् १८७६ में प्रिंस आफ वेल्स के आने के स्मारक में बनवाया था और इसका नाम प्रिंस आफ वेल्स अस्पताल रखा था। अब इसी का नाम बदल कर किंग एडवर्ड अस्पताल हो गया है। इसमें ग़रीब रोगी रहते हैं और उन्हें भोजन भी मिलता है।

ईश्वरी मेमोरियल जनाना अस्पताल—यह भी कबीरचौरे पर बड़े अस्पताल के बग़ल में सुन्दर इमारत है। यह अस्पताल स्वर्गीय महाराज ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह के स्मारक में सन् १८९२ ई० में बनवाया गया है। इसमें केवल स्त्रियों और छोटे बच्चों का इलाज होता है। इसके तैयार होने में ९६०००) लगा है।

पशुओं का अस्पताल—यह इन दोनों अस्पताल से कुछ आगे है। यहां गऊ, बैल, घोड़ा, कुत्ता, तथा अन्य जानवरों का इलाज होता है।

चौकाघाट घोसाल अस्पताल—हुकुल गंज पर यह अस्पताल राजा काली शंकर की सहायता से सन् १८५२ में बना



है। यहां उस वार्ड के ग़रीब मरीज अधिक आते हैं। इसे अंधाखाना भी कहते हैं क्योंकि आंख का इलाज होता है।

जनाना ईसाई अस्पताल—यह सिगरे पर है।

मःमूरगंज अस्पताल—यह राजा मोतीचंद साहब के अजमतगढ़ पैलेस में है। ग़रीबों को यहां से आयुर्वेदीय दवा मुफ़्त मिलती है।

रामकृष्ण सेवा आश्रम—यह परमहंस रामकृष्ण सोसाइटी की तरफ़ से लक्सा मुहल्ले में है। ग़रीबों को रहने की जगह और उन्हें भोजन भी यहां दिया जाता है। यहां के कर्मचारी रोगी की सेवा बड़े उत्साह से करते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस आश्रम से ग़रीबों को बड़ा लाभ पहुंचा है।

भेलूपुरा अस्पताल—यह अस्पताल महाराज विजयानगरम् की कोठी के सामने है। सन् १८८५ ई० में बना था। उस वार्ड के मरीज लोग यहां अधिक आते हैं। ग़रीबों को रहने की जगह और भोजन भी मिलता है। जनाना हिस्सा इसका अलग है। इसका अधिकांश व्यय डिस्ट्रिक्ट बोर्ड से चलता है।

श्रीराम लक्ष्मीनारायण अस्पताल—इसे मारवाड़ी हिन्दू अस्पताल भी कहते हैं। यह तीन मंजली पक्की देखने योग्य इमारत है। इसे बनारस के श्रीराम लक्ष्मीनारायण कनोड़िया ने बनवाया था। इसके बनवाने में १५००००) रु० ख़र्च पड़ा है। इस अस्पताल को १२ अगस्त सन् १९१६ ई० में संयुक्त प्रांत के लेफ्टिनेण्ट गवर्नर सर जेम्स मेस्टन ने खोला था।

डाक और तार।



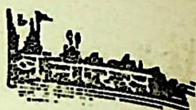
डाक घर और तार घर का प्रधान कार्य्यालय बनारस छाउनी में है। शहर में नीचीबाग़ में डाकघर अपने निज की इमारत में है। कोतवाली के पास विश्वेश्वर गंज पोस्ट आफिस और वहीं तारघर भी है। नीचे लिखे मुहल्लों में भी डाक घर और तार का काम होता है।

राजघाट, चौखम्भा, चेतगंज, जगतगंज, दशाश्वमेध, बंगालीटोला, शिवाला, कमच्छा और मामूरगंज। रोहनिया, पिसनहरिया, मिर्ज़ामुराद, अनेई, चौबेपुर, चोलापुर, कैथी, बड़ा गाँव, बाबतपुर, फूलपुर, सिन्धौरा, पिण्डरा, शिवपुर, सकलडीहा, मुग़लसरायँ, बलुआ, चन्दौली, सय्यदराजा, रामनगर, धीना, रामगढ़।

अंग्रेज़ी और हिन्दू होटल।

होटल डी पेरिस—यह अंग्रेज़ी होटल है। अधिकतर यहां अंग्रेज़ सज्जन ठहरते हैं। यह बनारस छाउनी में है, स्टेशन पर गाइड मिलते हैं।

क्लार्क्स होटल—यह भी अंग्रेज़ी स्टाइल का है। यहां भी अंग्रेज़ लोग ही ठहरते हैं।



जेनरल काश्मीरी होटल—बाहर से आने वाले सज्जन यहां ठहर सकते हैं। हिन्दुस्तानी खाना पीना यहां मिलता है। यह चौक के पास है।

काश्मीरी हिन्दू होटल—इसमें भी हिन्दुस्तानी ढंग का खाने पीने का सामान मिलता है। यह भी चौक में है।

दशाश्वमेध रोड पर बंगाली यात्रियों के लिये हिन्दू बोर्डिङ्ग और 'पार्वती आश्रम' है।

कचौरी गली के पास और बुलानाला पर 'मारवाड़ी बासा' है।

पुलीस स्टेशन (थाना)।

शहर में क़ोतवाली, चौक, दशाश्वमेध, भेलूपुर, चेतगंज, जैतपुरा, आदमपुरा, मडुवाडीह और राजघाट। शहर में कई चौकियां भी हैं। बनारस ज़िले में गंगापुर, सिकरौल स्टेशन, बनारस कैंएट, फूलपुर, चौबेपुर, चोलापुर, बड़ागाँव, रोहनिया, मिर्ज़ामुराद, चन्दौली, अलीनगर, सय्यदराजा, रामनगर, सकलडीहा, बलुआ, तमाचाबाद, राजा तालाब, सिन्धोरा, हरउआ, बबुरी और अमरा।



पुस्तकालय और लाइब्रेरी।



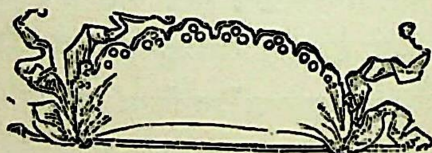
कारमाइकेल लाइब्रेरी—ज्ञानवापी की सीढ़ी के पास यह लाइब्रेरी है। इसमें हिन्दी, उर्दू, अंग्रेज़ी और बंग भाषा की पुस्तकें हैं। भिन्न भिन्न भाषा के कितने ही दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्र पत्रिकाएं यहां आती हैं। सर्व साधारण बराबर जाकर उन्हें देख सकते हैं, पुस्तकें घर लाकर पढ़ने से आठ आना मासिक देना होता है। इसे राय बहादुर मु० संकठा प्रसाद खत्री ने सन् १८७२ ई० में बनारस के कमिश्नर मि० सी० पी० कारमाइकेल के नाम से खोला था। लाइब्रेरी के लिये महाराज विजयानगरम् ने ज़मीन दी थी।

मालती शारदा सदन—यह लाइब्रेरी ठठेरी बाज़ार के सामने सड़क पर है। लोग बराबर जाकर पुस्तकें और पत्र पढ़ सकते हैं। घर पर लाने से कुछ चन्दा नहीं देना होता केवल ५) जमा करना होता है। इसे राय कृष्ण चन्द्र जी ने रानी मालती कुँवर के नाम पर स्थापित किया था। श्रीमान् काशी नरेश ने सन १९१० ई० में इसे खोला था।

आर्य्य भाषा पुस्तकालय—यह पुस्तकालय विश्वेश्वर गंज के पास कम्पनी बाग़ से मिला हुआ नागरी प्रचारिणी

सभा भवन में है। सन् १८६८ में स्वर्गीय बावू गदाधर सिंह ने अपना आर्य्य भाषा पुस्तकालय सभा को दे दिया जिसमें कितनी ही उत्तम पुस्तकें थीं सभा ने अपना नागरी भंडार भी इसी में मिला दिया और "आर्य्य भाषा पुस्तकालय" ही नाम रखा। इसमें सन्देह नहीं कि इस पुस्तकालय से सर्व साधारण को अच्छा लाभ पहुंचा है, सभा की देख रेख में यह बराबर उन्नति करता जा रहा है। प्रायः हिन्दी की पुस्तकें ही यहां अधिक हैं अन्य भाषा की पुस्तकें थोड़ी होने पर भी जो हैं वह विद्वानों के लिये एक महत्व की हैं। कितने ही दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्र यहां आते हैं जनता इससे विशेष लाभ उठा सकती है। चंदा ॥) मासिक लगता है।

श्रीयुत् पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने अपना पुस्तकालय सभा को दे दिया है।





पत्र और पत्रिकाएँ।



नाम			वार्षिक मूल्य
आज	दैनिक	......	१८)
हिन्दी केशरी	साप्ताहिक	......	२)
भारतजीवन ...	,,	......	२)
सूर्य्य ...	,,	......	२)
आवाज़ये ख़ल्क ...	,,	......	४)
प्रवास ज्योति ...	,,	......	२)
श्री भारत धर्म्म ...	,,	......	३)
भूमिहार ब्राह्मण पत्रिका	पाक्षिक	......	५)
उपन्यास लहरी ...	मासिक	......	३)
निगमागम चन्द्रिका ...	,,	......	३)
जासूस ...	,,	......	२)
गल्प माला ...	,,	......	२॥)
अलका ...	,,	......	३॥)
कान्य कुब्ज ...	,,	......	२)
त्रिशूल ...	,,	......	१)
नागरी प्रचारिणी पत्रिका	त्रैमासिक	......	४)
आर्य महिला ...	,,	......	३)



सभा समिति ।

अग्रवाल समाज	सातो चौक
आर्य समाज	बुलानाला
काशी क्लब	सिगरा
कांग्रेस कमेटी	नीचीबाग़
खत्री हितकारिणी सभा	कुंजगली
गुजराती मित्र मण्डल	चौखम्भा
खत्री एजुकेशन कमेटी	रानी कुआँ
थियासोफिकल सोसाइटी	लक्सा
नागरी प्रचारिणी सभा	विश्वेश्वर गंज
ब्राह्मण सभा	सोनारपुरा
बकर्स एण्ड ट्रेडर्स असोसियेशन	सुखलाल साव
बनारस क्लब	बनारस छाउनी
नागर क्लब	चेतगंज
भूमिहार ब्राह्मण सभा	
भारत धर्म महामण्डल	जगतगंज
रेट पेयर्स असोसियेशन	बुलानाला
संगीत समाज	कृष्ण बाग़
सेवा समिति	बुलानाला
सेवा मण्डल	कम्पनी बाग़

डाक्टर।

डाक्टर लक्ष्मी नारायण राय	कबीर चौरा
डाक्टर बिजेन्द्र नाथ मुकर्जी	बुलानाला
डाक्टर टी० एन० सिन्हा	बाबू की बाज़ार
डाक्टर गौरीनाथ	भेलूपुर
डाक्टर अमरनाथ बैनर्जी	ज्ञानवापी
डाक्टर एस० के० चौधरी	लक्सा
डाक्टर शोभाराम	बुलानाला
डाक्टर जगन्नाथ प्रसाद	चौक
डाक्टर ईश्वर बाबू	दशाश्वमेध

वैद्य।

पं० त्रैम्बक शास्त्री	राजमन्दिर
पं० रघुनन्दन जी	सुड़िया
पं० बद्री नाथ जी	जतनबर
पं० सोना जी	कचौरी गली
पं० मल्ही जी	पाटन दरवाज़ा
पं० राधाकृष्ण जी	ज्ञानवापी
पं० सत्यनारायण जी	अगस्तकुण्डा

कविराज।

पं० उमाचरण जी	दशाश्वमेध
पं० हरिदास जी	जंगमबाड़ी
पं० धर्मदास जी	दशाश्वमेध

हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक और कवि।

काशी हिन्दी भाषा का केन्द्र स्थान है। हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक और कवि काशी ही में अधिक हुए हैं, इस बात का इस नगर को गौरव है। आज यदि वे जीवित होते तो देखते कि उनका लगाया हुआ साहित्य वृक्ष हरा भरा होकर किस प्रकार लहलहा रहा है। उसकी शाखाएँ कैसी फैल रही हैं। इस समय हमें स्वर्गीय बाबू गोपालचन्द्र, राजा शिवप्रसाद सितारे-हिन्द, भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, साहित्याचार्य पं० अम्बिका दत्त व्यास, पं० बापूदेव शास्त्री सी० आई० ई०, पं० मन्ना लाल जी, पं० लक्ष्मी शंकर मिश्र एम० ए०, म० म० पं० सुधाकर द्विवेदी, बाबू राधाकृष्ण दास, बाबू कार्तिक प्रसाद खत्री, बाबू राम कृष्ण वर्मा, बाबू देवकी नन्दन खत्री और पं० राम शंकर व्यास आदि सज्जनों की याद आती है। आप लोगों ने हिन्दी की जो सेवा की है उसका जो उपकार किया है उसके लिये हम सब सदा इनके ऋणी रहेंगे। कवि सम्राट गो० तुलसीदास जी और कबीर जी को भी हम भूल नहीं सकते। आप दोनों भी इसी काशी के रत्न थे। यों तो काशी विद्या का केन्द्र है हिन्दी माता का प्रसिद्ध मन्दिर यहां पर है। यहां कितने ही विद्वान



और कवि हुए और हैं जिनमें से कुछ सज्जनों के नाम नीचे दिये जाते हैं जो आजकल इसकी सेवा कर रहे हैं। इनके अतिरिक्त कुछ और भी हमारे नवयुवक लेखक हैं जो बड़े उत्साह और प्रेम के साथ हिन्दी माता के मन्दिर पर चढ़ाने के लिये भिन्न भिन्न प्रकार के पुष्पों को एकत्र कर माला पिरो रहे हैं।

बाबू भगवान दास एम० ए०	सिगरा
पं० किशोरी लाल गोस्वामी	नन्दनसाहु
बाबू श्याम सुन्दर दास बी० ए०	कचौरी गली
पं० बाबू राव विष्णु पराणकर	जतनबर
पं० रामचन्द्र शुक्ल	
बाबू सम्पूर्णानन्द	जालपा
लाला भगवानदीन	गोबिन्दपुरा
बा० जगन्मोहन वर्मा	धूपचण्डी
बा० रामचन्द्र वर्मा	लाहौरी टोला
बा० रामदास गौड़	पियरी
बा० गंगा प्रसाद गुप्त	कुन्दीगढ़ टोला
बा० महाबीर प्रसाद गहमरी	चेतगंज
बा० गोपालराम गुप्त	महमूरगंज
बा० प्रेमचन्द्र	मद्धमेश्वर
बा० श्री प्रकाश	सिगरा
बा० हरिहरनाथ बी० ए०	मद्धमेश्वर

बनारस के दर्बारी।

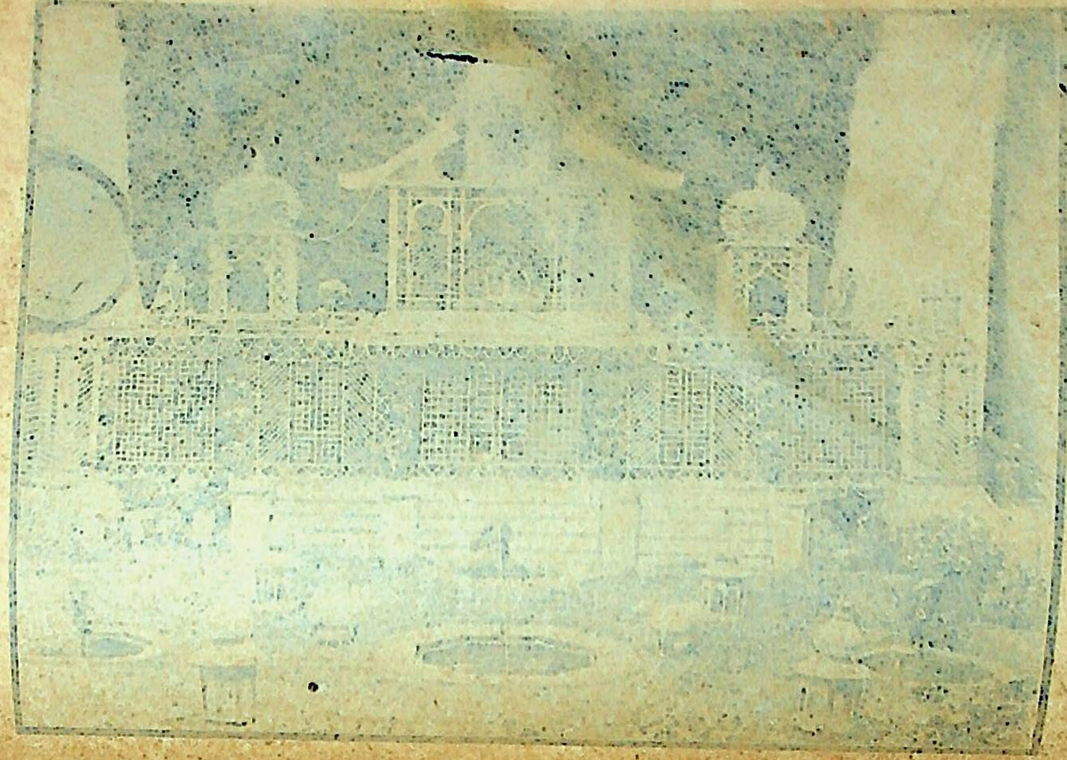
हिज हाइनेस महाराजा सर प्रभु नारायण सिंह बहादुर जी० सी० आई० ई०, काशी नरेश। आनरेबुल कुँवर आदित्य नारायण सिंह, काशी। राजा श्री पशुपति विजयरामा गजपति राज मानथा सुलतान बहादुर विजयानगरम्, काशी। राजा सत्यानन्द प्रसाद सिंह, काशी। राजा माधोलाल सी० एस० आई०, काशी। आनरेबुल राजा मोतीचंद सी० आई० ई०। समसुल उल्मा मौलवी मोहम्मद अब्दुल जही उसमानी। आनरेबुल महामहोपाध्याय पं० गंगा नाथ झा। महामहोपाध्याय पं० बिन्देश्वरी प्रसाद दूबे। म० म० पं० राम शास्त्री तैलंग। म० म० पं० जयदेव मिश्र। म० म० पं० नित्यानन्द पंत परवत्य व्याकरणाचार्य। म० म० पं० अयोध्यानाथ ज्योतिषी। म० म० पं० लक्ष्मण शास्त्री तैलंग। म० म० पं० अनन्दा चरण तर्क चूड़ामणि। म० म० पं० मुरलीधर झा। म० म० पं० वामा चरण भट्टाचार्य। म० म० पं० प्रभुदत्त जी। मिर्ज़ा अकबर बख़्श। मि० मुहम्मद बख़्श। मि० सिराजुद्दीन बख़्श। बाबू कवीन्द्र नारायण सिंह। लाल हरिहर शरण सिंह। बाबू श्याम कृष्ण। बा० शिव प्रसाद। बा० कृष्ण दास। बा० गोबिन्द चन्द। रा० ब० वैद्यनाथ दास बी० ए०। बा० मधुसूदन दास। बा० केशोदास। बा० गोविन्द दास। बा० नन्द गोपाल।

बा० श्यामदास । बा० बलदेवदास। गो० रामचरणपुरी। ठकुराई हरिहर प्रसाद सिंह । राव बल्लभदास। राय बटुक प्रसाद । राय बहादुर ज्ञानेन्द्र नाथ चक्रवर्ती । राय साहब पं० रामचन्द्र नायक कालिया। चौधरी रामप्रसाद । बाबू भगवती शरण सिंह । राय बहादुर मु० रविनन्दन प्रसाद। बाबू माता प्रसाद । बाबू वृजभूषण दास। खां बहादुर मौलवी मक़बूल आलम। राय बहादुर नील रतन बनर्जी। राय बहादुर पं० मानिक लाल जोशी। राय बहादुर श्री चन्द्र शेषर मल्लिक। राय बहादुर अपूर्व कुमार मुकर्जी। राय बहादुर ब्रजेन्द्र नाथ मुकर्जी, राय बहादुर विपिन बिहारी बनर्जी। राय बहादुर लेफ्टिनेएट कुंवर नन्द लाल। राय बहादुर बाबू ललित बिहारी सेन राय। राय साहब नानक चन्द। राय साहब ब्रजनाथ शाहा। खां साहब मौलवी खलीलुल रहमान। राय साहब सत्येन्द्र प्रसाद सान्याल । राय साहब मुरा लाल। राय साहब रामभवन जी। राय साहब काशी प्रसन्नो चटर्जी। राय साहब रघुनाथ वामन देव भंकर। पं० रघुनन्दन जी वैद्य । बाबू हर कृष्णदास। बाबू सुन्दर दास। बाबू लक्ष्मी दास बी० ए०। राय साहब भगवान प्रसाद। राय साहब गो० रामपुरी। खां साहब रहमतुल्ला। राय साहब पं० राजा राम लेले। राय साहब पं० काली प्रसाद। खां साहब म० मुहम्मद मिर्जा। राय साहब बाबू नरोत्तम दास।

बाबू निहाल चन्द रिटायर्ड सब-जज। बाबू किशोरी मोहन सेकदार रिटायर्ड सब-जज। बाबू निर्मल चन्द्र बनर्जी रिटायर्ड। बाबू बेनी माधव चटर्जी रिटायर्ड डिप्टी कलेक्टर। पं० केदार नाथ रिटायर्ड डिप्टी कलेक्टर। मु० बागेश्वरी दयाल रिटायर्ड मुंसिफ। मु० छोटे खां रिटायर्ड इन्सपेक्टर पुलीस। बा० काली प्रसन्नो मुकर्जी रिटायर्ड मुंसिफ। बाबू रजनी कान्त सेन रिटायर्ड डिप्टी सु० पुलीस। बाबू भगवान प्रसाद। मु० रामवंश लाल रिटायर्ड तहसीलदार। बा० गोबर्धनदास रिटायर्ड इन्सपेक्टर पुलीस। बाबू केदारनाथ रिटायर्ड डिप्टी इन्सपेक्टर स्कूल। सुबेदार मेजर बखान सिंह। राय बहादुर सरदार जय करन।



फूल बंगला—काशी के प्रसिद्ध रईस स्वर्गीय बाबू कामेश्वर प्रसाद के "श्री निवास मंदिर" के उत्सव का एक चित्र दिया जाता है इससे पता चलेगा कि फूल से किस प्रकार के कार्य हो सकते हैं। श्री निवास मन्दिर को सम्वत् १९४६ में स्थापित किया था और ख़र्च का इतना अच्छा प्रबंध कर दिया है जिससे उसके प्रत्येक कार्य और उत्सव भली प्रकार होते हैं। कोठी और मन्दिर का प्रबंध बाबू लक्ष्मी नारायणजी भली प्रकार करते हैं। आजकल कोठी के मालिक बाबू किशोरी रमण प्रसाद जी हैं।

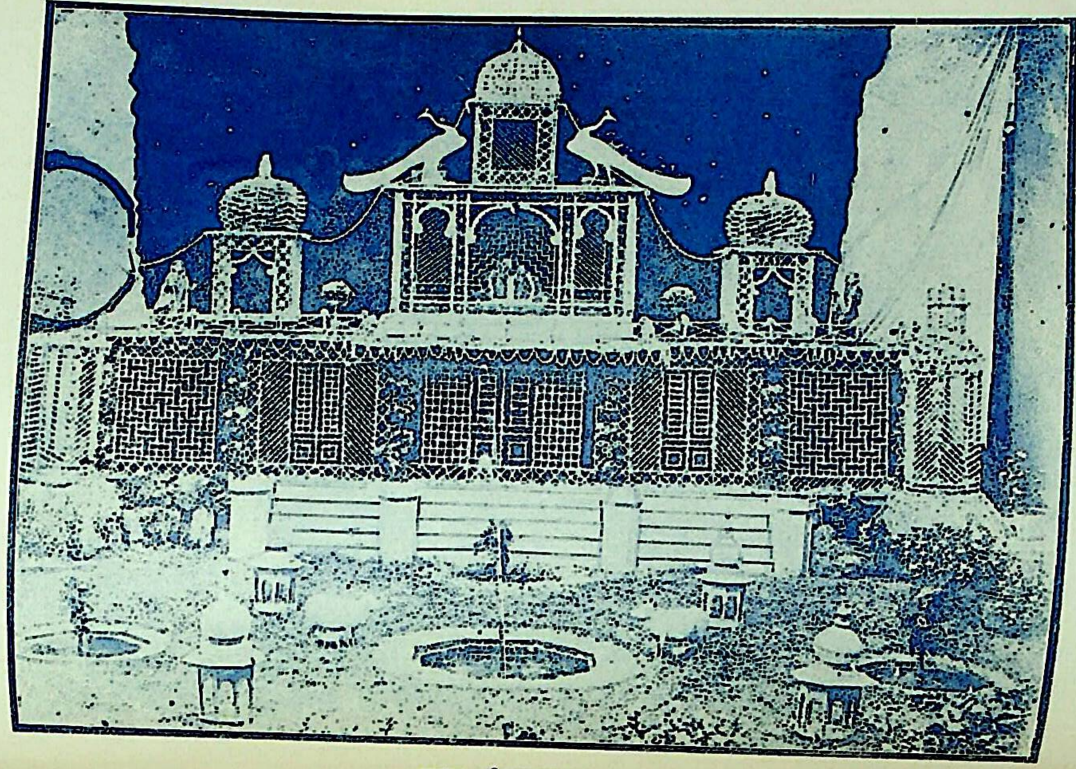


पुष्प मंडप।

बाबू त्रिलोक चन्द्र रिटायर्ड सब-जज । बाबू किशोरी [illegible] सेवाधार रिटायर्ड सब-जज । बाबू निर्मल चन्द्र [illegible] रिटायर्ड । बाबू बेनी माधव बनर्जी रिटायर्ड डिप्टी कलेक्टर । पं० केदार नाथ रिटायर्ड डिप्टी कलेक्टर । मु० [illegible] दयाल रिटायर्ड मुंसिफ । मु० छोटे खां रिटायर्ड इन्स्पेक्टर पुलीस । बा० काली प्रसन्न मुकर्जी रिटायर्ड मुंसिफ । [illegible] रजनी कान्त सेन रिटायर्ड डिप्टी सु० पुलीस । बाबू [illegible] प्रसाद । मु० [illegible] लाल रिटायर्ड तहसीलदार । [illegible] रिटायर्ड इन्स्पेक्टर पुलीस । बाबू केदारनाथ [illegible] डिप्टी इन्स्पेक्टर स्कूल । सूबेदार मेजर बख्तावर सिंह राय बहादुर सरदार [illegible] ।



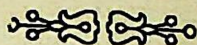
एक बंगला-वासी के प्रसिद्ध रईस स्वर्गीय बाबू [illegible] प्रसाद के "श्री निवास मंदिर" के उत्सव का एक चित्र [illegible] जाता है इससे पता लगेगा कि फूल से किस प्रकार के [illegible] हो सकते हैं। श्री निवास मन्दिर को सम्वत् १९४६ में स्थापित किया था और खर्च का इतना अच्छा प्रबंध कर दिया है जिससे उसके प्रत्येक कार्य और उत्सव भली प्रकार होते हैं। [illegible] और मन्दिर का प्रबंध बाबू लक्ष्मी नारायणजी [illegible] करते हैं। आजकल कोठी के मालिक बाबू किशोरी [illegible] प्रसाद जी हैं।



फूल बंगला।



ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट।



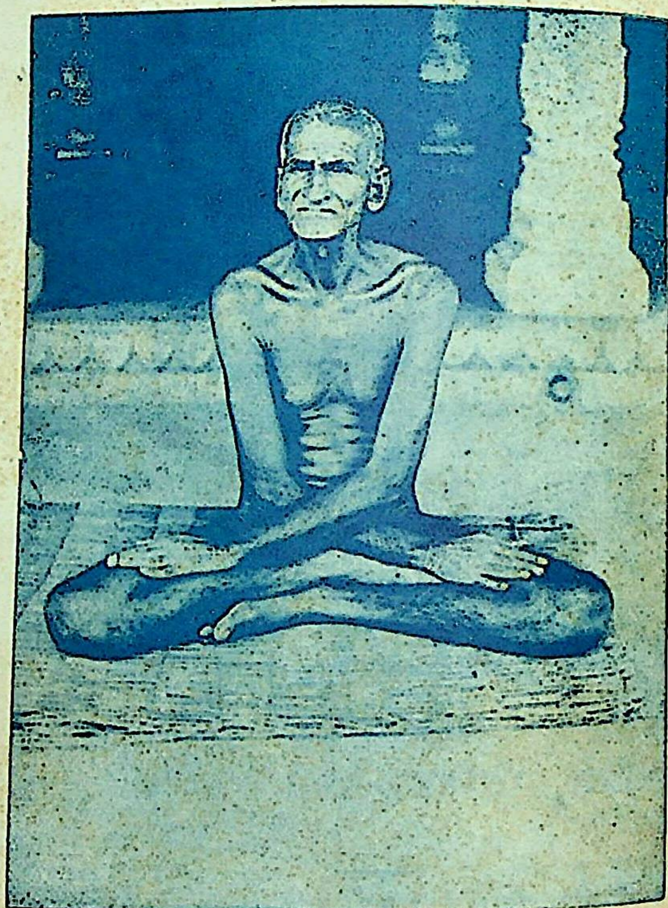
राय बहादुर बा० नीलरतन बैनर्जी	कुदई चौकी
मिर्ज़ा अकबर बख़्त	शिवाला
राय साहब पं० रामचन्द्र नायक कालिया	अगस्तकुण्डा
रायकृष्ण जी	फाटक रंगीलदास
राजा सत्यानन्द प्रसाद सिंह	भुतई इमली
श्री शिवेन्द्रनाथ बसु	चौखम्भा
बाबू माताप्रसाद	ईश्वरगंगी
राय साहब गो० रामपुरी	साक्षी विनायक
राय साहब बाबू नरोत्तम दास	गोलागली
राय बहादुर कुँअर नन्दलाल	चौखम्भा
बाबू हरिकृष्ण दास	गोलागली



प्रसिद्ध इमारतें।

हिन्दू विश्वविद्यालय–श्रद्धेय पं० मदन मोहन मालवीय जी की यह कीर्ति है। इस विश्वविद्यालय की नींव सन् १९१६ के फरवरी मास में श्रीमान् लार्ड हार्डिंञ्ज ने दी थी। जिस स्थान पर नींव का शिलान्यास हुआ वहां पर वर्षा काल में गंगा जी बढ़ कर आ गई। इस कारण कुछ दूर हट कर विश्वविद्यालय के कालेज और होस्टेल बनवाये गये हैं। नींव देने के समय भारत के कितने ही राजे, महाराजे, विद्वान और सम्भ्रांत पुरुष सम्मिलित हुए थे उस समय का समारोह दर्शनीय था। काशी नरेश की दी हुई ज़मीन के अतिरिक्त कई लाख रुपये की और भी ज़मीन ली गई है जिससे विश्वविद्यालय का विस्तार बहुत अधिक बढ़ गया है। अब तक एक करोड़ से अधिक आय हुई है, उसमें से ५०,०००००) रुपया तो स्थायी कोष में जमा है। बाक़ी रुपया कालेज, होस्टेल, सड़कें और मशीनें तथा फर्निचर आदि में व्यय हुआ है। महाराज काश्मीर, मैसूर और बीकानेर से १२,०००) रुपया, जोधपुर और पटियाले से २४,०००) रुपया और सरकार से १०००००) रुपया वार्षिक सहायता मिलती है। इन रुपयों के अतिरिक्त और भी दान के रुपये आया करते हैं। इस प्रकार विश्वविद्यालय की वार्षिक आय सात लाख रुपये से अधिक है। व्यय भी इसी के अनुसार

बनारस



स्वामी भास्करानन्द ।

इसमें सन्देह नहीं कि रोज़ [illegible] विद्यार्थी को [illegible] वहां लाते हैं।

इंजीनियरिंग कालेज, आर्ट्स कालेज, साइंस की [illegible] के भवन, छात्रावास, व्यायाम शाला, पुस्तकालय, प्रेस-[illegible], डाक और तार, शिक्षकों के रहने के स्थान आदि बन [illegible] हो गये हैं। एक सज्जन ने १०००००) रुपया [illegible] छात्रावास के लिये दिये हैं। यह छात्रावास बन रहा है और [illegible] हो जायगा। छात्रावासों में प्रत्येक [illegible] का [illegible] हुआ करती है यदि ऐसे अवसर पर मालवीय जी यहां [illegible] तो वह स्वयं भी भाग लेते हैं। व्याख्यान बराबर हुआ करते [illegible] विश्वविद्यालय देखने के लिये नित्य प्रति लोग आया करते हैं। इस विश्वविद्यालय का उद्घाटन श्रीमान् प्रिंस आफ वेल्स [illegible] किया था उस समय का दृश्य और प्रिंस महोदय को जो विश्वविद्यालय से डिगरी दी गई थी उसका दृश्य लोगों के देखने [illegible] था।

भास्करानन्द स्वामी की समाधि—दुर्गा जी के मन्दिर के [illegible] तालाब के पूरब के बाग़ में काशी के प्रसिद्ध स्वामी भास्करा-नन्द जी की समाधि स्थान सुन्दर संगमरमर पत्थर से [illegible] द्वारा बनवाया गया है। स्थान बड़ा रमणीक है।

विजया की कोठी—स्वर्गीय राजा उदय प्रताप सिंह [illegible] [illegible] की यह कोठी और बाग़ दुर्गा जी के [illegible]



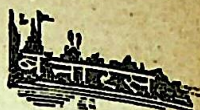
स्वामी भास्करानन्द ।

है। इसमें सन्देह नहीं कि खोज खोजकर विद्वानों को मालवीय जी यहां लाये हैं।

इञ्जीनियरिंग कालेज, आर्ट्स कालेज, साइंस की लेबोरेटरियों के भवन, छात्रावास, व्यायाम शाला, पुस्तकालय, अस्पताल, डाक और तार, शिक्षकों के रहने के स्थान आदि बन कर तैयार हो गये हैं। एक सज्जन ने ३०००००) रुपया लड़कियों के छात्रावास के लिये दिये हैं। यह छात्रावास बन रहा है शीघ्र तैयार हो जायगा। छात्रावासों में प्रत्येक एकादशी के दिन कथा हुआ करती है यदि ऐसे अवसर पर मालवीय जी यहां रहे तो वह स्वयं भी भाग लेते हैं। व्याख्यान बराबर हुआ करते हैं। विश्वविद्यालय देखने के लिये नित्य प्रति लोग आया करते हैं। इस विश्वविद्यालय का उद्घाटन श्रीमान् प्रिंस आफ वेल्स ने किया था उस समय का दृश्य और प्रिंस महोदय को जो विश्वविद्यालय से डिगरी दी गई थी उसका दृश्य दोनों देखने योग्य थे।

भाष्करानन्द स्वामी की समाधि—दुर्गा जी के मन्दिर के पास तालाब के पूरब के बाग़ में काशी के प्रसिद्ध स्वामी भाष्करानन्द जी की समाधि स्थान सुन्दर संगमरमर पत्थर से उनके शिष्य द्वारा बनवाया गया है। स्थान बड़ा रमणीक है।

भिनगा की कोठी—स्वर्गीय राजा उदय प्रताप सिंह भिनगा नरेश की यह कोठी और बाग दुर्गा जी के पास नगवा



जाने वाली सड़क के किनारे पर है। इस सुन्दर इमारत में रानी साहिबा जब यहां आती हैं तो रहती हैं।

विजयानगरम् की कोठी—यह सुन्दर और बड़ी कोठी तथा बाग़ विजयानगरम् के महाराजा विजयराम गजपति के० सी० एस० आई० की है। भेलूपुरा अस्पताल के सामने यह बड़ी इमारत है। भीतर के कमरे, हाल और बाग़ की तैयारी अच्छी है। यह स्थान आजकल वर्तमान महाराज के छोटे भाई महाराज कुमार विजय अनन्द गजपतिराज के अधिकार में है।

वाटर वर्क्स—अस्सी के पास गंगा जी से पानी खींच कर भेलूपुरा जाता है। यहां तालाब में साफ़ होकर शहर में आता है। भेलूपुरा और अस्सी पर वाटर वर्क्स की अच्छी इमारत बनी है।

विलास भवन—यह सुन्दर कोठी और बाग़ बिलासपुर के राजा बिजय चंद साहब के० सी० आई० ई०, सी० आई० ई० की महमूरगंज में है। राजा साहब बराबर बिलासपुर राज्य में रहते हैं मगर वर्ष में एक बार यहां अवश्य आया करते हैं और नाव के द्वारा जाकर शिकार करते हैं।

अजमतगढ़ पैलेस—श्रीमान् राजा मोतीचंद साहब सी० आई० ई० ने इसे सन् १६०४ में बनवाया था। यह सुन्दर और दर्शनीय कोठी, इसकी चित्ताकर्षक सजावट और मोती

बनारस





बनी पक्की सड़क के किनारे पर है। इस सुन्दर इमारत में रानी साहिबा जब यहां आती हैं तो रहती हैं।

विजयानगरम् की कोठी—यह सुन्दर और बड़ी कोठी तथा बाग़ विजयानगरम् के महाराजा विजयराम गजपति के० सी० एस० आई० की है। भेलूपुरा अस्पताल के सामने यह बड़ी इमारत है। भीतर के कमरे, हाल और बाग़ की तैयारी अच्छी है। यह स्थान आजकल वर्तमान महाराज के छोटे भाई महाराज कुमार विजय आनन्द गजपतिराज के अधिकार में है।

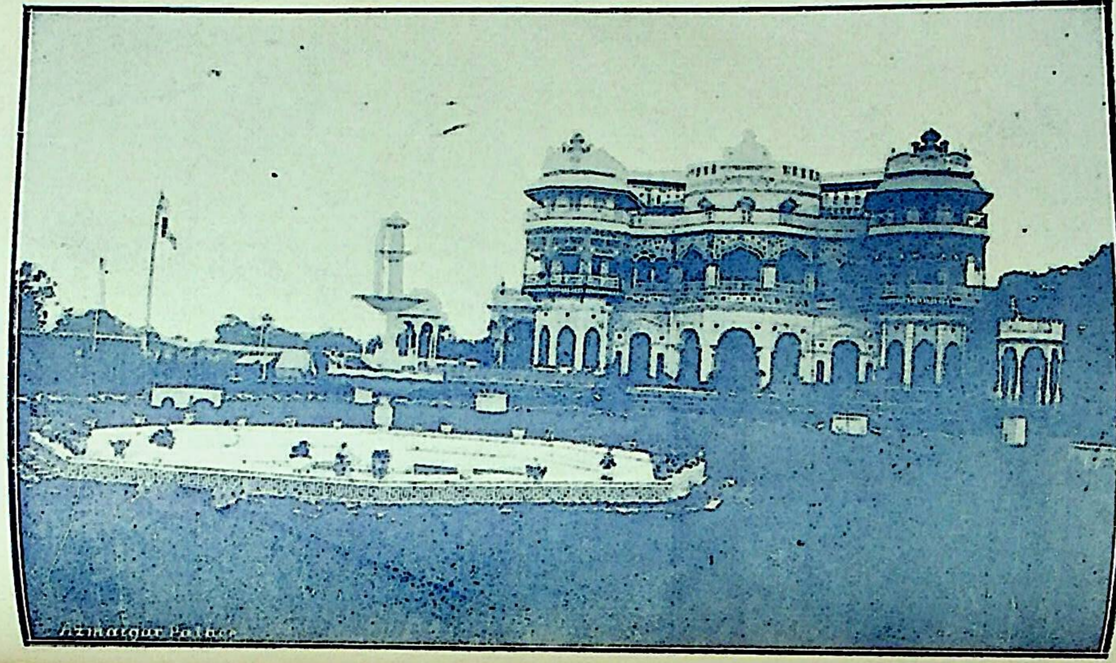
वाटर वर्क्स—अस्सी के पास गंगा जी से पानी खींच कर भेलूपुरा लाया जाता है। यहां तालाब में साफ़ होकर शहर में आता है। भेलूपुरा और अस्सी पर वाटर वर्क्स की अच्छी इमारतें बनी हैं।

विजय भवन—यह सुन्दर कोठी और बाग़ बिलासपुर के राजा विजय चंद साहब के० सी० आई० ई०, सी० आई० ई० की मलकूयत में है। राजा साहब बराबर बिलासपुर राज में रहते हैं मगर वर्ष में एक बार यहां अवश्य आया करते हैं और शान के साथ जाकर शिकार करते हैं।

नजगन्द पैलेस—श्रीमान् राजा मोतीचंद साहब सी० आई० ई० ने इसे सन् १९०४ में बनवाया था। यह सुन्दर

[illegible]

बनारस



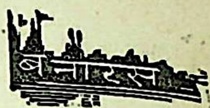
अजमतगढ़ पैलेस ।

झील की बहार देखने योग्य है। वर्षा ऋतु में यह स्थान बड़ा रमणीक मालूम होता है। झील के उस पार हनुमान जी का दर्शन अपूर्व होता है। बहरी तरफ़ के शौकीन प्रायः नित्य ही झील पर आया करते हैं।

टकसाल घर—सन् १७३० में यह इमारत बनी और यहाँ सिक्के तैयार होते थे। १७८? ई० में यह बनारस के राजा के अधिकार में आयी और तब से उन्हीं के वंशधरों के पास है। प्राचीन इमारत का बहुत सा भाग तोड़ कर अब नया बनाया गया है।

नदेसर कोठी—यह कोठी भी महाराज बनारस की है। एक समय वजीर अली के ठहरने का हाल इतिहास में पाया जाता है। वर्तमान महाराज ने अब इसे देखने योग्य स्थान बनवा दिया है। प्रिंस आफ वेल्स, बड़े और छोटे लाट, राजे महाराजे जो काशी नरेश के मेहमान होते हैं इसी कोठी में ठहराये जाते हैं। कोठी के चारो तरफ़ सुन्दर लान है। कोठी की राजसी सजावट देखने योग्य है।

सेण्ट्रल जेल—पांड़ेपुर जाते समय रास्ते में यह जेलखाना है। इसमें सजा पाये हुए १२५६ कैदी रह सकते हैं, इसमें १७७ स्त्रियां भी रह सकती हैं। चारो ओर से मज़बूत चहार दिवारी उठी हुई है, आगे बड़ा फाटक है, जहां बराबर सन्तरी का पहरा पड़ा करता है।



डिस्ट्रिक्ट जेल–यह जेल सन् १८०३ में बना। इसमें ४१७ कैदियों के रहने की जगह है इस में स्त्री नहीं रह सकती। इन दोनों जेलों में ऊनी और सूती गलीचा, कम्बल, सूती कपड़ा, नेवार, दरी, मूंज के पावदान आदि तैयार होते हैं। इन दोनों जेलों की देख रेख सेण्ट्रल जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट करते हैं। मैजिस्ट्रेट साहब की आज्ञा लेकर लोग देखने जा सकते हैं।

दीवानी कचहरी–यह दो मंजली पक्की इमारत देखने योग्य बनी है। इसमें जज साहब, सदराला और मुंसिफ़ के इजलास तथा रजिस्ट्रेशन आफ़िस है। इस इमारत के पीछे की तरफ़ कलक्टरी, फ़ौज़दारी और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का दफ़्र है।

औसानगंज–यह बड़ी इमारत राजा चेत सिंह के दीवान बाबू औसान सिंह की बनवाई हुई है। आजकल यह कोर्ट आफ़ वार्ड्स के आधीन है। कोठी के बाहर औसानगंज का बाज़ार है।

हथुआ की कोठी–चेत गंज में पिशाच मोचन तालाब के पूर्व सारन ज़िले के हथुवा के महाराज की दो मंजिली बड़ी कोठी है। आगे की तरफ़ बड़ा मैदान है। समय समय पर राजे महाराजे यहां आकर ठहरते हैं।

म्युनिस्पल आफ़िस–यह इमारत चेत गंज में सड़क के किनारे पर है। यहां म्युनिसिपैल्टी और चुंगी का दफ्तर है। इमारत दो मंजिली बनी है।

टौनहाल—इस इमारत को विजयानगरम् के महाराजा विजयराम गजपति के. सी. एस. आई. ने सन् १८७५ ई० में बनवाया था और १८७६ में श्रीमान् प्रिंस आफ वेल्स ने इसे खोला था। टौनहाल के बीच का हाल ७३ फुट लम्बा और ३२ फुट चौड़ा है। इस हाल में सभा, कमेटी और व्याख्यान हुआ करते हैं। म्युनिसिपैल्टी की मीटिंग भी यहाँ होती हैं। हाल में महाराजा विजयानगरम् तथा म्युनिसिपैल्टी के पूर्व मेम्बरों के चित्र लगे हुए हैं। राजा देव नारायण सिंह के. सी. एस. आई. और शहर के भूतपूर्व कलेक्टर मि० रेडिची के बस्ट भी लगे हैं पास ही के एक कमरे में ऑनरेरी मैजिस्ट्रेटस कचहरी करते हैं। टौनहाल के बाहरी मैदान में बड़ी मीटिंग हुआ करती हैं। सन् १९२० ई० में यहां कला कौशल प्रदर्शिनी भी हुई थी। पूर्व ओर गौशाला और कोतवाली है।

क्लाक टावर—नीची बाग़ में पोस्ट आफ़िस के सामने यह घंटाघर स्वर्गीय महाराजा ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह जी० सी० एस० आई० ने काशी वासियों के सुबिधे के लिये वर्तमान महाराजा बहादुर के शुभ विवाह के उपलक्ष में बनवाया था। इस टावर में लगी घड़ी की आवाज़ दूर तक होती है। नीचे इसके कुँआ भी था, जिसे अब बन्द कर दिया है। टावर के चारों तरफ़ की ज़मीन का दुरुपयोग स्थानीय म्युनिसिपैल्टी के कुप्रबंध का नमूना है।



कोतवाली—टौनहाल के बग़ल में यह सुन्दर इमारत कोतवाली की है। इसमें डिप्टी सुपरिंटेंडेंट पुलीस, सब इन्सपेक्टर, जमादार, मुंशी और कांस्टेब्ल रहते हैं। सामने सुन्दर फव्वारा और धूप घड़ी लगी है।

जंगम का मठ—गुदौलिया की चौमुहानी के पास जंगमबाड़ी मुहल्ले में यह जंगम स्वामी का मठ है। निस्सन्देह यह एक अद्भुत स्थान है। इसकी प्राचीन इमारत और बनावट देखने योग्य है। प्राचीन समय की सहस्रों मूर्तियां, बादशाहों, नव्वाबों और राजाओं के फरमान स्वामी जी के पास बहुत अधिक हैं। राजा बनार के समय यह स्थान गोचर-भूमि थी। वर्ष में एक बार यहां अग्नि कुंड का दृश्य देखने योग्य होता है।

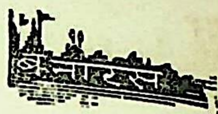
भिनगा अनाथालय—हिन्दू कालेज के पास कमच्छा में स्वर्गीय राजा उदय प्रताप सिंह भिनगा नरेश का बनवाया हुआ यह अनाथालय है। इसमें ग़रीब अनाथ रहते हैं उन्हें भोजन भी मिलता है। इसका प्रबंध एक कमेटी के हाथ मे है।

कश्मीरीमल्ल की हवेली—यह हवेली सिद्धेश्वरी मुहल्ले में शाही ज़माने की, सन् १७७५ की बनी, कश्मीरीमल्ल की हवेली के नाम से प्रसिद्ध है। यह हवेली दो हिस्सों में बटी है। हवेली बहुत मज़बूत और देखने योग्य है, इसमें संगतरासी का काम, बड़े दालान, कमरे, दीवानखाने, गर्मी के दिनों के लिये तहख़ाने



आदि बने हैं पहिला हिस्सा अब तक उन्हीं के वंशधरों के हाथ में है और दूसरा हिस्सा बिक गया है। काशी में ३॥ हवेली कहलाती हैं उनमें से यह भी एक है।

देवकी नन्दन की हवेली—आज से १५० वर्ष पहले प्रयाग के आनापुर के जमींदार बाबू देवकी नन्दन सिंह काशी आये और कालीमहल में एक ब्राह्मण के यहां ठहरे। बराबर आप अंग्रेज़ कम्पनी की सहायता करते रहे। रामापुरा का प्रबंध भार कम्पनी से इन्हें मिला था, उसी समय इन्होंने इस हवेली को बनवाना आरम्भ किया जो १० बिगहे के घेरे में बनी और यहां के प्रसिद्ध इमारतों मे से है। इनके लड़के बाबू जानकी प्रसाद सिंह हुए, इनके दो लड़के बाबू राम प्रसन्न सिंह और दूसरे राम रतन सिंह। बाबू राम प्रसन्न सिंह के दो पुत्र बाबू हरशंकर सिंह और बाबू गौरी शंकर सिंह इन दोनों भाई के कोई सन्तति नहीं हुई तब इन्होंने बाबु देवकी नन्दन सिंह के भाई के खान्दान में से एक लड़के को गोद लिया जिनका नाम बाबू गोपाल शरण सिंह था आप के भी केवल एक कन्या हुई जो शिवहर के यहां ब्याही गई। इस समय इस हवेली की मालिकिन बाबू गौरी शंकर सिंह की स्त्री हैं। यह हवेली पत्थर की और बहुत मज़बूत है, फाटक के आगे का चबूतरा मन्दिर यह सब बाबू देवकी नन्दन सिंह की अचल कीर्ति है।



काठ की हवेली—चौखम्भा महल्ले में ग्वालियर के पूर्व महाराज की बनवाई हुई पंचमहली काठ की हवेलो है। हवेली में ऊपर से नीचे तक केवल काठ का काम किया हुआ है। आजकल इसमें देशी कलाबत्तू का कारबार होता है।

विशम्भरदास की हवेली—बुलानाला में कुछ सीढ़ी ऊपर चढ़कर तिनमंजिली पक्की पत्थर की इमारत है। आजकल यह नैपाली राजगुरु के अधीन है।

रामापुरा के एक ऊंचे ढीहे पर प्राचीन समय में एक भयंकर स्थान था जो चारो ओर से ऊंची दीवारों से घिरा था और एक तरफ़ से बीहड़ रास्ता था। इस स्थान पर जंगली जाति के लोग रहते थे जिनका काम तीर कमान ले चारो ओर घूमना और यात्री तथा अकेले दुकेले आदमी को लूट लेना, था कई बार लोगों ने इस भयंकर स्थान पर चढ़ाई की किन्तु कृतकार्य नहीं हुए। भयंकर तीरों की वर्षा के आगे जल्दी कोई ठहर नहीं सकता था। विवश होकर राजा बनार के रिश्तेदार एक वीर सज्जन ने इनका मुकाबला किया और कितने ही दिनों तक उस भयंकर स्थान का घेरा डाल कर इनको मार भगाया और ऊंची दीवार को गिरा कर साफ़ कर दिया। बाद में अपने कुल पुरोहित को यह स्थान दे दिया उसी समय से क्षत्री और ब्राह्मण यहां वास करते हैं और उनके पुरोहित पं० भरवदत्त दुबे आजकल यहीं रहते हैं।

बनारस के व्यापारी—

यहां का बनारसी माल जैसे–कीमख़ाब, साड़ी, दुपट्टे, साफ़े, पोत के थान, चोलखण्ड, लहँगे, पीताम्बर, काशी सिल्क के तरह तरह के थान, दुपट्टे और धोतियां, पीतल के सादे और नक्काशीदार बर्तन, उम्दा काठ के रंग बिरंगे खिलौने, सुरती की गोली, यही मुख्य चीज़े हैं जो कि नीचे लिखे भिन्न भिन्न व्यापारियों के यहां मिलती हैं। काशी जैसे तीर्थ धाम में इन चीज़ों के बेचने वाले बहुत अधिक हैं मगर हम ने कुछ प्रसिद्ध लोगों के ही नाम और पते दिये हैं।

बनारसी माल के व्यापारी—

अर्जुनमल रामशरण, कुञ्जगली। बलभद्र प्रसाद गोवर्धन दास, कुञ्जगली। राम दयाल गौरीशंकर, कुजगली। मल्लूमल गिरधर दास, कुञ्जगली। परमानन्द सीताराम, सुखलाल साव का फाटक। गिरधर दास जगमोहन दास, सुखलाल साव का फाटक। पूरन चन्द हर नारायन, सती चबूतरा। हरसुख दास मेहरा, छोटी कुञ्जगली। देवी दास शिवशरण दास कपूर, कुञ्जगली। तीरथराम दयाराम, लक्खी चबूतरा। गणेशप्रसाद ब्रजमोहन दास, लक्खी चबूतरा। गिरधरदास हरीदास रघुनाथदास, ज्ञानवापी। बनारस इन्डस्ट्रीज़, चौक।



काशी सिल्क के व्यापारी—

गोपाल मल परसोत्तम दास, नीलकण्ठ। नन्द गोपाल मकसूदन दास, नन्दनसाहु। गोकुल चन्द रामचन्द, लक्खी चबूतरा। के० एस० मुनइया कम्पनी, दशाश्वमेध। सिल्क पीताम्बर कम्पनी, केदार घाट। बाला जी कम्पनी, चौक।

पीतल के बर्तन के व्यापारी—

विश्वेश्वर प्रसाद सीतल प्रसाद, ठठेरी बाज़ार। गोकुल प्रसाद छेदीलाल, ठठेरी बाज़ार। बैजनाथ सेठ कम्पनी, लक्खी चबूतरा।

काग़ज़ और प्रेस की रोशनाई के व्यापारी—

मिसर्स शिवनन्दन प्रसाद माता प्रसाद, बेनीलाल का कटरा। जेनरल ट्रेडिंग कम्पनी, चौक। बनारस पेपर ट्रेडिंग कम्पनी, चौक। भोलानाथ दत्त एण्ड सन्स, राजा का कटरा। नन्द किशोर ब्रदर्स, चौक।

प्रसिद्ध छापेखाने—

इण्डियन प्रेस। ज्ञानमंडल प्रेस। जार्ज प्रिंटिंग वर्क्स। श्री लक्ष्मी नारायण प्रेस। हितचिन्तक प्रेस। लहरी प्रेस। आर्ट प्रेस। तारा प्रेस। जगन्नाथ प्रेस। भूमिहार प्रेस। भार्गव भूषण प्रेस।



बुकसेलर्स और पब्लिशर्स—

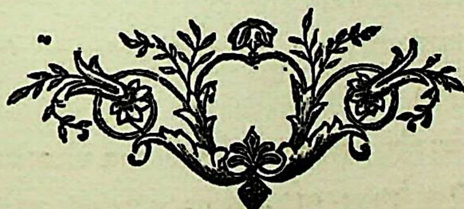
श्री वेंकटेश्वर बुक डिपो, लहरी बुक डिपो, भार्गव बुक डिपो, उपन्यास तरंग कार्यालय, ज्ञान मण्डल बुक डिपो, नागरी प्रचारिणी सभा, भारतेन्दु पुस्तकालय, शिवराम दास गुप्त, हिन्दी पुस्तक एजेंसी।

दवाखाने—

टी० डी० मुकर्जी, दुर्गा मेडिकल हाल, अन्नपूर्णा फार्मेसी, ढाका शक्ति औषधालय, होमियोपैथिक स्टोर, आयुर्वैदिक औषधालय, ।

जौहरी-

बा० बनारसी दास, भाट की गली। जोशी दामू जी, बालू जी का फ़र्श। जोशी रतन शंकर, बालू जी का फ़र्श। पन्नालाल, भुतई इमली। अमीर चन्द चतर सिंह, चौखम्भा।



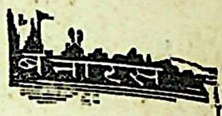


बाजार और हाट ।

काशी के बाज़ार और हाट का वर्णन हो ही नहीं सकता, यह दो भागों में बटा है एक पक्का मुहल्ला दूसरा कच्चा मुहल्ला पक्के मुहल्ला में जिधर जाइये पतली पत्थर से पाटी हुई छोटी छोटी गलियां और ऊंचे तिमंजिले चौमंजिले मकान मिलेंगे। इसी प्रकार कच्चे मुहल्लों में भी कच्ची गलियां खपड़ैल के एक मंज़िले, दो मंजिले मकान और शहर के बाहरी तरफ भी इसी प्रकार के मकान, बाग़ और कैरएटूमेरट में बंगले हैं।

हम काशी स्टेशन (राजघाट) से चलते हैं। स्टेशन के पास चुंगी, तेजपाल जमुना दास की धर्मशाला. (यहीं से एक पुरानी सड़क पीपे के पुल को घुमती हुई गई है) आगे मत्स्यो-दरी की चौमुहानी पर 'गोकुल चंद खत्री पार्क' स्ट्रेट फील्ड रोड, बाज़ार विश्वेश्वरगंज, अन्नपूर्णा गंज (यहां से एक रास्ता वृद्धकाल और मृत्युञ्जय महादेव से होता हुआ दारानगर को गया है) दूसरी तरफ़ (भैरवनाथ होता हुआ, गोपाल मन्दिर को गया है) तार घर, नागरी प्रचारिणी सभा, कोतवाली, कम्पनी बाग़, टौन-हाल की चौमुहानी से एक रास्ता जैन मन्दिर, हरिश्चन्द्र स्कूल, गोरखनाथ का टीला देता हुआ औसान गंज को गया है। दूसरा रेवाबाई की धर्मशाला, बुलानाले पर की मोती लाल भागीरथ मल्ल डालमियां की धर्मशाला, रामेश्वर थियेटर हाल, पोस्ट

आफिस, घंटा घर, मालती शारदा सदन (यहां से एक रास्ता ठठेरी बाज़ार देता हुआ चौखम्भा को गया है) दूसरा (मछरहट्टा, नारियल बाज़ार, राजा दरवाज़ा देता हुआ सरायँ हड़हा को गया है) चौक की चौमुहानी से एक रास्ता रानी कुँआ, सुखलाल साव, लक्खी चबूतरा देता हुआ नन्दन साहु (यहां से एक गढ़वासी टोला, सिद्धेश्वरी को गया है) दूसरा गोलागली देता हुआ नयाघाट को गया है। चौक के फाटक से दूसरा रास्ता कचौरी गली, ब्रह्मनाल देता हुआ मणिकर्णिका को गया है। तीसरा राजगीर टोला, नेपाली खपरा, नीलकंठ, ज्ञानवापी, गली विश्वेश्वर नाथ, लाहौरी टोला, कालका गली, मीरघाट, त्रिपुराभैरवी, मान मन्दिर देता हुआ दशाश्वमेध घाट और बंगाली टोला को गया है। चौक की चौमुहानी से एक रास्ता दाल की मंडी देता हुआ बेनिया, विक्टोरिया पार्क को गया है। दूसरा महाराज बनारस का कटरा, बनारस बंक, इलाहाबाद बंक, मुं० बेनीलाल का कटरा, बुकिंग आफिस, कारमाइकेल लाइब्रेरी, आदि विश्वेश्वर, बांस का फाटक, थियेटर हाल, कोतवाल पुरा, बड़ा देव, महारानी का शिवाला, श्रीराम मारवाड़ी अस्पताल, काश्मीर महाराज का मकान, टागौर का मन्दिर देता हुआ दशाश्वमेध बाज़ार में मिल गया है। दूसरा गुदौलिया, जंगमबाड़ी, महाराज कूच बिहार की ठाकुर बाड़ी, सोनारपुरा की चौमुहानी, हरिश्चन्द्र रोड, कीना राम का अस्थल, वाटर



वर्क्स भदैनी, राम मन्दिर, लोलार्क कुएड, राजा अमेठी का मकान, रानी मझौली का मकान, नागौद राज्य, काशी राज्य का मकान, सरगूजा और डुमराँव के मकान, लल्ला मिश्र की बावली, बाबा सीतल दास का अखाड़ा, जगन्नाथ जी का मन्दिर, राजा ताहिरपुर का मकान देता हुआ पंचक्रोशी में चला गया है। दूसरा अस्सी पर से राजा विजय गढ़, कुरुक्षेत्र, रानी बड़हर का शिवाला, स्वामी विशुद्धानन्द का स्थान, दुर्गाकुएड होता हुआ मुक्ता गाछा के राजा की कोठी को गया है तीसरा रानी भिनगा की कोठी, संकट हरण तथा संकट मोचन होता हुआ सरगूजा की कोठी देता हुआ अम्बे विश्वनाथ सिंह, राजा अमेठी का बाग़ होता हुआ बाबू शिवप्रसाद जी की कोठी, मइया साहब का बाग़ देता हुआ नगवा घाट को गया है यहीं से एक रास्ता हिन्दू विश्वविद्यालय को चला गया है।

दुर्गाकुएड से एक रास्ता काश्मीरी गंज, खोजवां को चला गया है दूसरा रानी बड़हर की कोठी, गुरुधाम, रेणुका का मन्दिर, भेलूपुर अस्पताल, विजयानगरम् की कोठी, ओसवाल जैन मन्दिर, वाटर वर्क्स, संखूधारा, भिनगा अनाथालय, हिन्दू कालेज, काशी नरेश का बाग़, बटुक भैरव, कमच्छा देवी होता हुआ बैजनाथ जी * को गया है। भेलूपुरा की चौमुहाना

---

* यहां पर पहिले एक मोती झील और अखाड़ा था प्राचीन समय में लोग जोर करने यहाँ आते थे।

से दूसरा रास्ता रेवड़ी कुण्ड, जय नारायण स्कूल, देवकी नन्दन की हवेली, गिर्जाघर, रामकृष्ण सेवा आश्रम (पास की गली में रामकुण्ड और छोटी गैबी है) सदानन्द अनाथालय, गुरु का बाग़, थियोसफिकल सोसाइटी, काशी नरेश की तह-सीलदारी, यहाँ से एक रास्ता काशी क्लब, दाऊ जी का मन्दिर और पाठशाला बा० भगवान दास जी का बाग होता हुआ सिगरा की चौमुहानी पर अस्पताल, गिर्जा, जनाना मिशन, चकला-वाला बाग़, विद्यापीठ, तेज़ाब और वर्फ का कारखाना, श्रीकृष्ण धर्मशाला, होता हुआ बनारस कैण्ट स्टेशन को चला गया है। यहीं से एक विजयानगरम् की परेड कोठी को दूसरा रास्ता माल गोदाम देता हुआ लहरतारा को चला गया है।

काशी क्लब की चौमुहानी से मुं० बेनीलाल का बाग़, विजयानगरम् का आनन्द बाग़, बड़की गैबी, बिलासपुर की कोठी और बाग़ राम नगर चम्पारन के राजा, मोहन विक्रम शाह की कोठी और बाग़ गो० रामचरणपुरी, राजा मोती चंद सी० आई० ई० का अजमतगढ़ पैलेस और मोती झील, व्यास का कुँआ, मडुआडीह का स्टेशन। आगे की चौमुहानी से दक्षिण चितईपुर, उत्तर बनारस कैण्ट, पश्चिम मडुआडीह का बड़ा तालाब, बालापुर (भूलनपुर) राजा मु० माधव लाल सी० एस० आई० की कोठी, स्वामी भास्करानन्द के तालाब को गया है।



गुदौलिया से गिर्जा की चौमुहानी से (एक गली सूर्यकुण्ड लक्ष्मीकुण्ड, कालीमठ, सरस्वतीगिरि का मठ, पास ही में इसके पान दरीबा है जहां पान बिकता है।) सनातनधर्म स्कूल, विक्टोरिया पार्क, म्युनिस्पल आफिस, महाराज हथुआ की कोठी, पिशाच मोचन तालाब, राजा माधव लाल का बाग़, भारतधर्म महामण्डल, (राम कटोरा को एक रास्ता गया है। दूसरा जगत गंज को) आगे क्वीन्स कालेज, संस्कृत कालेज, नदेसर का तालाब, नदेसर कोठी, मिंटहाउस (टकसालघर) लाजरस का बंगला, हेड टेलीग्राफ और पोस्ट आफिस, लंडन मिशन स्कूल, महाराज चन्द्रसमशेर जंग की कोठी, बनारस क्लब इसके आगे दीवानी कलक्टरी और कमिश्नरी कचहरी, ज़िला बोर्ड का दफ़्तर, लेफ्टिनेण्ट गवर्नर की कोठी, भोजूबीर, महाराज जोतीन्द्र मोहन टागौर का हरीधाम, क्षत्री स्कूल, बाज़ार शिवपुर, अन्नपूर्णा ऋषीकुल आश्रम को चला गया है।

एक रास्ता हेस्टिंग्स हाउस, कब्रस्थान, राजा काली शंकर का बनवाया अंधाखाना, सेण्ट्रल जेल, पुलीस लाइन, पिसनहरिया का कुंआ, पाँड़ेपुर की बाज़ार होता हुआ सारनाथ तथा ग़ाज़ीपुर को चला गया है। दूसरा चौकाघाट का पुल, साँडे के बाबू का बंगला, राजा जौनपुर का मकान, संस्कृत पुस्तकालय, बनारस काटन और शिल्क मिल, वीविंग इन्स्टीट्यूट, नाटी इमली, राजा आ[illegible] की कोठी, ईश्वरगंगी का तालाब,

औसानगंज, बागेश्वरी जी, नाग कुंआ आदि देता हुआ बनारस सिटी।स्टेशन को चला गया है।

जगतगंज की चौमुहानी से एक रास्ता जनाना मिशन, पशुओं का अस्पताल, गणेशबाग़, कबीर जी का स्थान, जनाना अस्पताल, एडवर्ड अस्पताल, राधा स्वामी संग, ज्ञान मण्डल प्रेस के पास की चौमुहानी से एक बाबू की बाज़ार, लोहटिया देता हुआ औसानगंज में मिल गया है दूसरा नखास, गोला दीनानाथ, बेतिया की कोठी देता हुआ काशीपुरा होता हुआ राजा दरवाज़ा में आ मिला है।

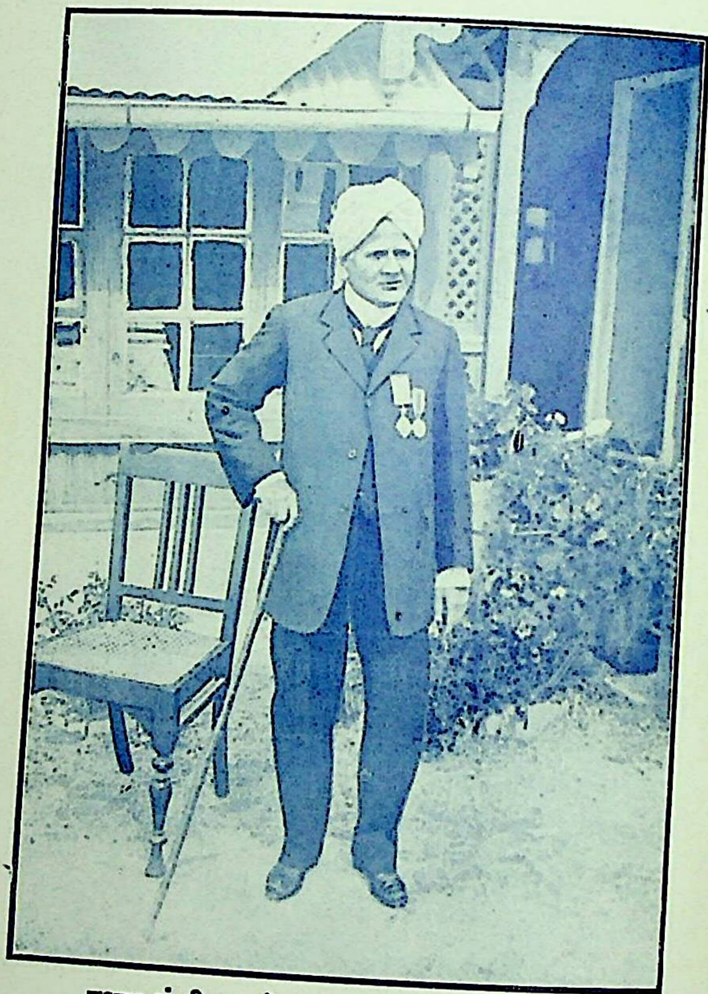
काशी के मुहल्लों में भी विशेषता है। कोतवाली के हल्के में आप महाराष्ट्र, गुजराती, नेपाली और वैष्णवों को अधिक पावेंगे। चौक हल्के में अग्रवाल, मारवाड़ी ब्राह्मण और खत्री जाति के लोगों को पावेंगे, इसी प्रकार दशाश्वमेध वार्ड में अन्य जातियों के अतिरिक्त आप बंगाली जाति को ही चारो ओर देखेंगे, धीरे धीरे यह लोग भेलूपुरा वार्ड की तरफ़ भी बढ़ गये हैं इधर आप मुसलमानों की बस्ती भी पावेंगे। चेतगंज वार्ड में सब जातियों के साथ आप कायस्थ क्षत्री और भूमिहार को पावेंगे। इसी प्रकार जैतपुरा में कलवार और मुसलमान अधिक मिलेंगे। आदमपुरा में मिली हुई जातियां हैं अब सिकरौल में आप ईसाई और अंग्रेज़ लोगों को ही अधिक देखेंगे, इसी प्रकार काशी में जिधर जाइये उधर की गलियों में



आप एक प्रकार की विशेषता ही पावेंगे जो अन्य नगरों में नहीं हैं। काशी ही एक ऐसा स्थान है जहां नित्य नए यात्री आते और जाते हैं। प्रातःकाल घाटों पर स्नान और मन्दिरों में दर्शन पूजन की अच्छी भीड़ रहती है।

यहां के देखने योग्य बाज़ारों में बनारसी माल के लिये कुँजगली, ज़रदोजी की टोपी के लिये लक्खी चबूतरा, पीतल सिलवर और अल्यूमिनियम के वर्तन के लिये ठठेरी बाज़ार और साक्षी विनायक हैं। काठ के खिलौने, सुरती की गोली, जर्दा, तमाखू के लिये चौक। ठाकुर जी के मुकुट और शृंगार की चीजों के लिये गोपालमन्दिर, पीतल और सिलवर के ज़ेवरों के लिये ढुंढिराज और साक्षी विनायक। थोक गल्ला, घी, चीनी विश्वेश्वर गंज में, साग सब्जी फल वगैरह विश्वेश्वर गंज, चौखम्भा, चौक, ब्रह्मनाल, दशाश्वमेध और कमच्छा की सट्टी हैं। किराना और मसाले के लिये गोला दीनानाथ। फलहारी मिठाई के लिये बीबी हटिया, चौखम्भा, सिद्धेश्वरी और ठठेरी बाज़ार। अनाजी मिठाई पूरी आदि के लिये कचौरी गली और ज्ञानवापी हैं। मुरब्बा रानी कुंआ पर, मेवे और फल चौक बाज़ार में। कहां तक लिखा जाय जिस गली में आप जाइये वहां कुछ चीज़ें अवश्य मिलेंगी। अँग्रेजी ढंग की चीजें और फर्निचर आप बनारस छावनी में पावेंगे।

बनारस



राजा मुंशी माधोलाल सी० एस० आई० ।

राजा मुंशी माधो लाल साहब सी. एस. आई. काशी।

आप के पूर्व पुरुष १८ वीं शताब्दी में [illegible] से दिल्ली को चले आये और वहां से लखनऊ के नवाब के जमाने में वहां काम करने लगे। सब से प्रथम [illegible] में मुंशी भवानी लाल बनारस में आये। आप के [illegible] और सरकारी नौकरी करने लगे। कुछ लेन देन के [illegible] में अच्छी सफलता प्राप्त हुई। मुंशी [illegible] सरकारी वकील थे, अपने समय में इन्होंने [illegible] और [illegible] किये। आप के भाई मुंशी गिरधर लाल के पुत्र मुंशी [illegible]लाल जी हुए जो कि बनारस और [illegible] में [illegible] [illegible] ही के पुत्र मुंशी माधो लाल जी और मुंशी [illegible] जी हुए। मुंशी [illegible]लाल कोठी का काम देखने लगे और मुंशी माधो लाल जी सरकारी काम करने लगे। [illegible] [illegible] सब-जज हुए, आप के भाई मुंशी [illegible] का [illegible] के [illegible] हो गया, राजा साहब को जमींदारी का [illegible] भार भी लेना पड़ा। सन् १९०० में आप प्रान्तीय कौंसिल के सदस्य हुए और सन् १९०६ में बड़े लाट की व्यवस्थापक सभा के सदस्य चुने गये।

आप के कुटुम्ब के लोग चौखम्भा की कोठी में रहते हैं।

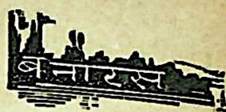


राजा मुंशी माधोलाल सी० एस० आई०।

राजा मुंशी माधो लाल साहब सी. एस. आई. काशी।

आप के पूर्व पुरुष १८ वीं शताब्दी में अहमदाबाद से दिल्ली को चले आये और वहां से लखनऊ में अवध के नव्वाबों के यहां काम करने लगे। सब से प्रथम सिपाही नागर में मुंशी भवानी लाल बनारस में आये। आप के कुटुम्ब के कुछ लोग सरकारी नौकरी करने लगे। कुछ लेन देन के व्यवहार से अच्छी सफलता प्राप्त हुई। मुंशी लक्ष्मीलाल बनारस मे सरकारी वकील थे, अपने समय में इन्होंने जायदाद और इलाक़े खरीद किये। आप के भाई मुंशी गिरधर लाल के पुत्र मुंशी बेनीलाल जी हुए जो कि बनारस और बलिया में मुंसिफ थे। आप ही के पुत्र मुशी माधो लाल जी और मुंशी साधो लाल जी हुए। मुंशी साधोलाल कोठी का काम देखने लगे और मुंशी माधो लाल जी सरकारी काम करने लगे। समय पाकर आप सब-जज हुए, आप के भाई मुंशी साधोलाल का बिना सन्तान के शरीरान्त हो गया, राजा साहब को जमींदारी का सब भार भी लेना पड़ा। सन् १९०० में आप प्रान्तीय कौंसिल के सदस्य हुए और सन् १९०६ में बड़े लाट की व्यवस्थापक सभा के सदस्य चुने गये।

आप के कुटुम्ब के लोग चौखम्भा की कोठी में रहते हैं।

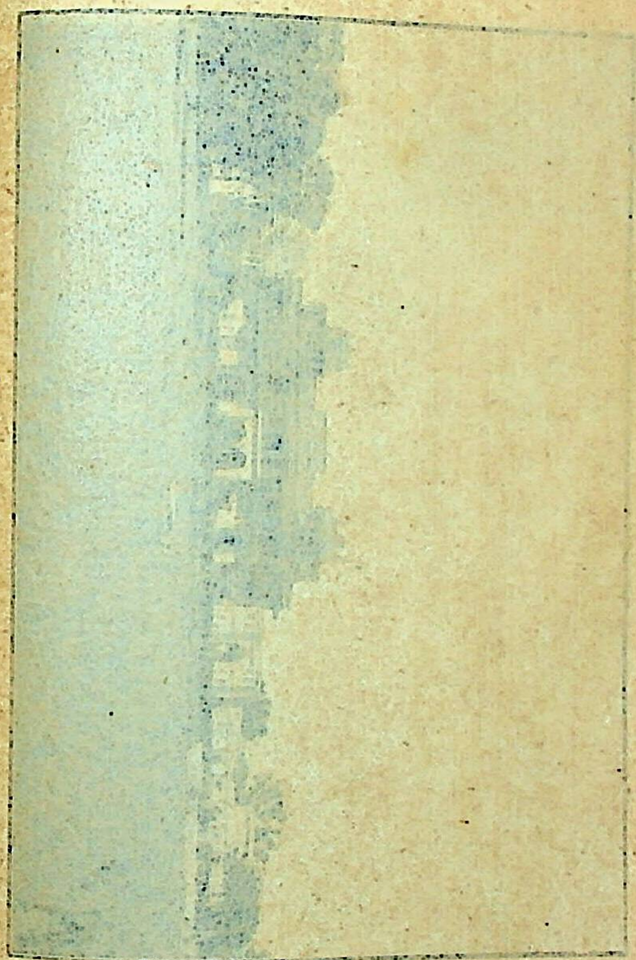


आप का एक बाग़ चेत गंज और दूसरा बाग़ शहर से ४ मील बाहर भूलनपुर में है जिसे अब बालापुर भी कहते हैं। आप का यह स्थान बड़ा रमणीक है।

राजा साहब ने २५०००) रु० से सरस्वती भवन लाइब्रेरी बनवाई, अपने भाई मुंशी साधोलाल के स्मारक में ४०,०००) से संस्कृत की उच्च शिक्षा में उत्तीर्ण होने वाले छात्र को छात्र-वृत्ति देने का प्रबंध किया। १०, ८०००) का वार लोन लिया, ७०००) मोटर एम्बुलेंस सर्विस के लिये दिया। किंग एडवर्ड अस्पताल की सहायता की। ५०००) लखनऊ में फव्वारे के लिये दिया।

आप बनारस क्लब, नैनीताल क्लब, ओरियण्टल क्लब, कलकत्ता क्लब और लखनऊ के छत्तर मंज़िल क्लब के मेम्बर हैं।

आप को जनवरी सन् १६०९ में सी० एस० साई० का और जून सन् १६१० में राजा का सम्मानित टाइटिल मिला है। इस समय आप की अवस्था ८४ वर्ष की है, आप अपने बालापुर वाले बाग़ में ही रहते हैं। कई वर्ष पूर्व से आपने अपने स्टेट का सब प्रबंध भार बड़े नाती राय बहादुर कुंवर नन्द लाल जी को दे दिया है आप के बाद कुंवर साहब ही उत्तराधिकारी होंगे। इसमें सन्देह नहीं कि राजा साहब का इतना मान सम्मान होने पर भी आप में बड़ी सादगी है।





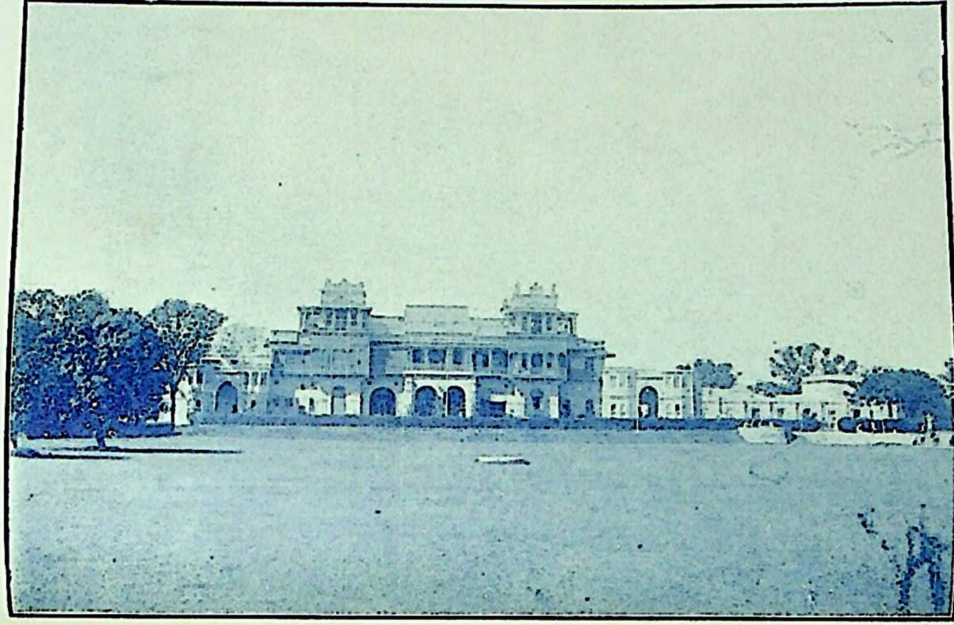
आप का एक बाग़ चेत गंज और दूसरा बाग़ शहर से ४ मील बाहर भूलनपुर में है जिसे अब बालापुर भी कहते हैं। आप का यह स्थान बड़ा रमणीक है।

राजा साहब ने २५०००) रु० से सरस्वती भवन लाइब्रेरी बनवाई, अपने भाई मुंशी माधोलाल के स्मारक में ४०,०००) से संस्कृत की उच्च शिक्षा में उत्तीर्ण होने वाले छात्र को छात्र-वृत्ति देने का प्रबंध किया। १०, ८०००) का वार लोन लिया, ७०००) मोटर एम्बुलेंस सर्विस के लिये दिया। किंग एडवर्ड अस्पताल की सहायता की। ५०००) लखनऊ में फव्वारे के लिये दिया।

आप बनारस क्लब, नैनीताल क्लब, ओरियण्टल क्लब, कलकत्ता क्लब और लखनऊ के कुसर मंज़िल क्लब के मेम्बर हैं।

आप को जनवरी सन् १८०९ में सी० एस० आई० का और जून सन् १९१० में राजा का सम्मानित टाइटिल मिला है। इस समय आप की अवस्था ७४ वर्ष की है, आप अपने बालापुर वाले बाग़ में ही रहते हैं। कई वर्ष पूर्व से आपने अपने स्टेट का सब प्रबंध भार बड़े नाती राय बहादुर कुंवर मन्नू लाल जी को दे दिया है आप के बाद कुंवर साहब ही उत्तराधिकारी होंगे। इसमें सन्देह नहीं कि राजा साहब का इतना मान सम्मान होने पर भी आप में बड़ी सादगी है।

बनारस



बनारस



आनरेब्ल राजा मोतीचंद सी० आई० ई०

माननीय राजा मोतीचन्द साहब

सी० आई० ई० काशी।

आप का जन्म दूसरी अगस्त सन् [illegible] ई० में हुआ था। [illegible] के पूर्वज आजमगढ़ के प्रसिद्ध [illegible] थे। [illegible] के समय ब्रिटिश सरकार की बड़ी [illegible] की थी। [illegible] राजा साहब पर बहुत थोड़ी [illegible] रियासत का बोझ पड़ गया किन्तु आपने [illegible] बुद्धिमत्ता से उसका प्रबंध किया [illegible] आप की आय तक भी [illegible] है। [illegible] नहीं कि आप की तीक्ष्ण बुद्धि, [illegible] परिश्रम और [illegible] का फल बहुत ही [illegible] हुआ है।

श्रीमान् राजा साहब के कुछ कामों का [illegible] हम [illegible] के आगे रखते हैं। सन् १८९३ में आप [illegible] के सदस्य हुए। सन् १८९६ में बनारस म्युनिसिपल बोर्ड [illegible] हिन्दुस्तानी चेयरमैन चुने गये। [illegible] आप [illegible] हैं। सन् १९०० में आप [illegible] के सदस्य हुए। हिन्दू विश्वविद्यालय को आपने [illegible] दिया। यू० पी० चेम्बर आफ कामर्स के [illegible] कलकत्ता के [illegible] जिल के संचालक, बनारस [illegible]

बनारस —



[illegible] राजा मोतीचंद सी० आई० ई०

माननीय राजा मोतीचन्द साहब सी० आई० ई० काशी।

आप का जन्म दूसरी अगस्त सन् १८७६ ई० में हुआ था। आप के पूर्वज अजमतगढ़ के प्रसिद्ध रईस थे, सन् १८५७ के बलवे के समय बृटिश सरकार की बड़ी सहायता की थी। हमारे राजा साहब पर बहुत थोड़ी अवस्था से ही कुटुम्ब तथा रियासत का बोझ पड़ गया किन्तु आपने जिस कुशलता एवं दूरदर्शिता से उसका प्रबंध किया उसका सब से अच्छा प्रमाण आप की अब तक की सफलता से मिलता है। इसमें सन्देह नहीं कि आप की तीक्ष्ण बुद्धि, कार्य दक्षता, योग्यता, परिश्रम और मिलाप का फल बहुत ही अच्छा हुआ है।

श्रीमान् राजा साहब के कुछ कार्य्यों का वर्णन आज हम आप के आगे रखते हैं। सन् १९१३ में आप प्रान्तीय कौन्सिल के सदस्य हुए। सन् १९१६ में बनारस म्युनिस्पल बोर्ड के प्रथम हिन्दुस्तानी चेयरमैन चुने गये। बनारस बंक लिमिटेड के आप सभापति हैं। सन् १९२० में आप कौन्सिल आफ स्टेट के सदस्य हुए। हिन्दू विश्वविद्यालय को आपने १,०००००) रु० दिया। यू० पी० चेम्बर आफ कामर्स के आप मेम्बर, भारत अभ्युदय काटन मिल्स कलकत्ता के मालिक, बनारस काटन एण्ड सिल्क मिल के संचालक, बनारस इण्डस्ट्रीज के सभापति,



ब्रिटिश इण्डिया एसोसियेशन, आगरा जमींदार सभा, प्रांतीय जमींदार सभा, भारतीय लैण्डहोल्डर्स असोसियेशन, तथा नागरी प्रचारिणी सभा, बोर्ड आफ ट्रस्टीज़ के आप सदस्य हैं। भवाली सैनेटोरियम की आप ने १०,०००) से सहायता की है।

पहली जनवरी सन् १९१६ में आप को सी० आई० ई० की उपाधि मिली। सन् १९१८ की तीसरी जून को आप राजा के टाइटिल से सम्मानित किये गये। युद्ध के लिये २००० सैनिक २ बुल्क कोर, ढाई लाख का वार लोन, ७५,०००) का स्पेशल वार फण्ड, इम्पीरियल रिलीफ फण्ड में १२,०००) और १५,०००) का मोटर एम्बुलेंस कोर तथा आपने रिक्रूटिंग अफसर पं० मायालाल को १६३ एकड़ की ज़ागीर दी है। वार बोर्ड और म्युनिशन कमेटी के आप सदस्य हैं। सन् १९१८ में भारत सरकार से आप को युद्ध सम्बन्धी सहायता के लिये सनद और बैज मिला है। सन् १९१९ में आप की १०००) की सालाना मालगुजारी माफ़ हुई। कहां तक लिखा जाय राजा साहब काशी के कितने ही सार्वजनिक कामों में बराबर योग देते और उसकी सहायता करते हैं। आप के ऐसे उदार और सर्वप्रिय सज्जन काशी में बहुत कम हैं।



बनारस



राय बहादुर लेफ्टिनेण्ट कुंवर नन्दलाल।

राय बहादुर लेफ्टिनेन्ट कुंवर [illegible]

एम० एल० सी०, [illegible]

आप का जन्म सन् १८८४ में हुआ है। आप [illegible] सी० एस० आई० के [illegible] हैं। आप की शिक्षा [illegible] कालेजियट [illegible] में हुई थी। [illegible] ने अपने [illegible] ही [illegible] को दे दिया है आप ने भी [illegible] लिया है। कुंवर साहब [illegible] रीडर्स [illegible] और [illegible]

प्रान्तीय कौंसिल के आप सदस्य भी हुए थे। सन् १९[illegible] की फरवरी में आप [illegible] ए० डी० सी० और [illegible] नियुक्त हुए हैं। सन् १९[illegible] में आप ही [illegible] लेफ्टिनेन्ट बनाये गये। आपने स्वयं १०० [illegible] लड़ाई के समय भर्ती किया था। इस [illegible] कुंवर साहब को प्रान्तीय "वार बोर्ड" से [illegible] मिली थी।

आपको [illegible] सन् १९[illegible] में [illegible] दिया है। आप भी [illegible]

बनारस



राय बहादुर लेफ्टनेंट कुंवर नन्दलाल।

राय बहादुर लेफ्टिनेण्ट कुँवर नन्दलाल एम० एल० सी०, काशी।

आप का जन्म सन् १८९२ में हुआ है। आप राजा मुंशी माधोलाल सी० एस० आई० के सबसे बड़े नाती हैं। आप की शिक्षा क्वीन्स कालेजियट स्कूल में हुई थी। राजा साहब ने अपने सामने ही राज्य का सब प्रबंध भार आप को दे दिया है आप ने भी इस काम को भली प्रकार सम्हाल लिया है। कुंवर साहब ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट हैं, मुंशी माधोलाल ट्रस्ट फण्ड, किंग एडवर्ड अस्पताल, पूना के भंडारकर रीसर्च इस्टीट्यूट और कलकत्ता क्लब के मेम्बर हैं।

प्रान्तीय कौंसिल के आप सदस्य भी हुए थे। सन् १९१२ की फरवरी में आप श्रीमान् काशी नरेश के परसनल स्टाफ के ए० डी० सी० और बनारस स्टेट लैंसर के ऑनरेरी लेफ्टिनेण्ट नियुक्त हुए हैं। सन् १९१८ में शाही इण्डियन लैंड फोर्स के सेकेण्ड लेफ्टिनेण्ट बनाये गये। आपने स्वयं ३०० रंगरूटों को लड़ाई के समय भर्ती किया था। इस सेवा के उपहार में कुंवर साहब को प्रान्तीय "वार बोर्ड" से एक सनद और घड़ी मिली थी।

आपको जनवरी सन् १९२२ में रायबहादुर का टाइटिल मिला है। आप भी सार्वजनिक कामों में बराबर योग देते हैं



और उनकी सहायता भी करते हैं। आप के दो छोटे भाई पं० गिरधर लाल व्यास और पं० गोविन्दलाल व्यास हैं जिनको राजा साहब ने गांव इलाक़े अलग दे दिये हैं। इस थोड़ी अवस्था ही में आपने सब कामों को सम्हाल लिया है और स्टेट का प्रवंध वहुत ही अच्छी तरह कर रहे हैं जिससे लोग प्रसन्न हैं।



सुरती की गोलियां।

बनारस, इलाहाबाद, कलकत्ता, नागपुर, लाहौर, सुलतानपुर उत्तरपाड़ा, चन्द्रनगर, हुगली, बनजेटिया प्रदर्शिनियों से प्रशंसा पत्र व मेडल प्राप्त हमारा यह कार्य्यालय बहुत प्रसिद्ध है।

विशुद्ध कस्तूरी गंध गोलियां साधारण ८) १६) ३२) फ़ी सेर उत्तम चान्दी के वर्क़ लगी हुई १) तोला अति उत्तम सोनौली २) ५) १०) फ़ी तोला।

इलायची की सुरती साधारण बड़ी इलायची की ॥) फ़ी तोला उत्तम छोटी इलायची की १) अति उत्तम २) फ़ी तोला।

क़िमाम यानी गोली साधारण।) ॥) उत्तम १) अति उत्तम २) तोला।

ज़र्दा काला मसालेदार साधारण २) ४) ८) १२) फ़ी सेर उत्तम तबकदार १६) अति उत्तम ३२) रुपौली १) तोला सोनौली २) तोला।

ज़र्दा पत्ती लाल या पीली साधारण २) ४) ८) फ़ी सेर उत्तम तबकदार १६) अति उतम ज़ाफ़रानी पत्ती ३२) फ़ी सेर

पान के मसाले ताम्बूल प्रकाश २)

मुखमोहन यह बिलकुल नया मसाला है।) फ़ी शीशी १)

सुँघनी यानी हुलास साधारण ॥=) १।) २॥) ५) फ़ी तोला।

पताः—बदलराम लक्ष्मीनरायन (मेडलिष्ट)

बनारस सिटी।



अयोध्या ।

'तीर्थ पुस्तक माला' की यह दूसरी पुस्तक होगी। जिन्हें 'बनारस' नाम की पुस्तक पसंद आई हो और वह आगे भी इसी प्रकार की सचित्र पुस्तकें पढ़ना चाहते हों वे केवल एक कार्ड भेज कर ग्राहकों में अपना नाम लिखवा लें।

इतना अवश्य कहा जाता है कि इस प्रकार की तीर्थ वृत्तान्तों की पुस्तकें हिन्दी साहित्य में नई चीज़ होंगी।

पता—बालमुकुन्द वर्म्मा,
बेनीलाल का कटरा, बनारस।